इस विशेष आवरण को संत शिरोमणि दिगम्बराचार्य श्री विद्यासागर जी मुनि महाराज के 50वां संयम स्वर्ण महोत्सव के उपलक्ष्य में श्री दिगम्बर जैन संरक्षिणी सभा जवाहरगंज जबलपुर के माध्यम से दिनांक 17 जुलाई 2018 को मध्यप्रदेश डाक परिमण्डल भारतीय डाक विभाग के परिमण्डल शाखा द्वारा 5/- रूपये में जारी किया गया।

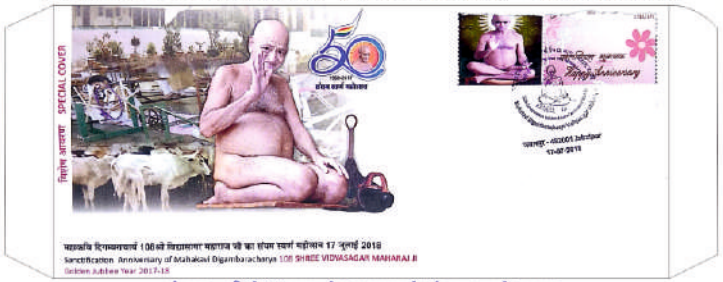

संकलन - मुनिश्री अभयसागरजी, प्रभातसागरजी एवं पूज्यसागरजी महाराज

इस तरह की और भी जानकारी इस लिंक पर देख व पढ़ सकते हैं - knowledge.sanskarsagar.org

दि.	वार	तिथि	नक्षत्र
		सितम्बर 2022	
16	शुक्रवार	षष्ठी	कृत्तिका
17	शनिवार	सप्तमी	रोहिणी
18	रविवार	अष्टमी	मृगशिरा
19	सोमवार	नवमी	आर्द्रा
20	मंगलवार	दशमी	पुनर्वसु
21	बुधवार	एकादशी	पुष्य
22	गुरुवार	द्वादशी	आश्लेषा
23	शुक्रवार	त्रयोदशी	मघा
24	शनिवार	चतुर्दशी	पूर्वाफाल्गुनी
25	रविवार	अमावस	उत्तराफाल्गुनी
26	सोमवार	प्रतिपदा	हस्त
27	मंगलवार	द्वितीया	चित्रा
28	बुधवार	तृतीया	स्वाती
29	गुरुवार	चतुर्थी	विशाखा
30	शुक्रवार	पंचमी	अनुराधा
		अक्टूबर 2022	
1	शनिवार	षष्ठी	ज्येष्ठा
2	रविवार	सप्तमी	मूल
3	सोमवार	अष्टमी	पूर्वाषाढ
4	मंगलवार	नवमी	उत्तराषाढ
5	बुधवार	दशमी	श्रवण
6	गुरुवार	एकादशी/द्वादशी	धनिष्ठा
7	शुक्रवार	त्रयोदशी	शतभिषा
8	शनिवार	चतुर्दशी	पूर्वाभाद्रपद
9	रविवार	पूर्णिमा	उत्तराभाद्रपद
10	सोमवार	प्रतिपदा	रेवती
11	मंगलवार	द्वितीया	अश्विनी
12	बुधवार	तृतीया	भरणी
13	गुरुवार	चतुर्थी	कृत्तिका
14	शुक्रवार	पंचमी	रोहिणी
15	शनिवार	षष्ठी	मृगशिरा

तीर्थंकर कल्याणक

26 सितम्बरः भगवान नेमिनाथ जी ज्ञान कल्याणक
03 अक्टूबरः भगवान शीतलनाथ जी मोक्ष कल्याणक
10 अक्टूबरः भगवान अनन्तनाथ जी गर्भ कल्याणक
13 अक्टूबरः भगवान संभवनाथ जी ज्ञान कल्याणक

माह के प्रमुख व्रत

16 सितम्बरःमुक्तावली व्रत
17 सितम्बरःरोहिणी व्रत
23 सितम्बरःमुक्तावली व्रत
06 अक्टूबरःमुक्तावली व्रत
09 अक्टूबरःशरद पूर्णिमा, गुरु उपकार दिवस
14 अक्टूबरःरोहिणी व्रत

सर्वार्थ सिद्धि

17 सितम्बरः 06/14 बजे से 12/21 बजे तक।
25 सितम्बरः 06/16 बजे से 30/16 बजे तक।
29 सितम्बर : 29/13 बजे सेता. 30-28/19 बजेतक।
02 अक्टूबरः 06/18 बजे से 25/53 बजे तक।
09 अक्टूबरः 06/21 बजे से 16/21 बजे तक।
11 अक्टूबरः 06/22 बजे से 16/17 बजे तक।
12 अक्टूबरः 17/10 बजे से 30/22 बजे तक।

शुभ मुहूर्त

दुकान प्रारंभः सितम्बर-18,21,26,30, अक्टूबर-1,6,7,10,15
मशीनरी प्रारंभ : सितम्बर-21,26,30, अक्टू-1,6,10
वाहन खरीदनेः सितम्बर-21,26, अक्टू-1,6,7,10

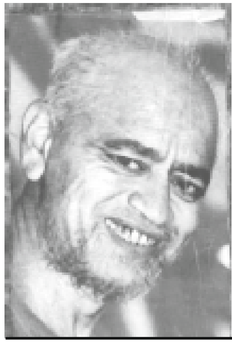

संस्कार सागर

• वर्ष : 25 • अंक : 282 • सितम्बर 2022

• वीर नि.संवत 2547 • विक्रम सं. 2079 • शक सं. 1942

लेख

• पर्वराज पर्यूषण 08
• आत्म जागरण का संदेशवाहकः पर्युषण पर्व 10
• समयसार में प्रतिपादित व्यवहार नय की उपादेयता एवं भूतार्थता 14
• प्रतिकूलता में साधना 18
• समयसार पीठिका में शुद्धात्मा की व्याख्या 22
• जबलपुर में कैसे बनी प्रथम प्रतिभास्थली 24
• चन्देलशासन में जैन धर्म का उत्थान 28
• नियमसार में प्रतिपादित परम समाधि के सूत्र 44
• आचार्य कुन्दकुन्द की दृष्टि में निश्चय प्रायश्चित 45
• पर्यूषण महापर्वः विकार और विकृतियों को जीतने का पर्व 50
• **वरिष्ठ नागरिकः** बुजुर्गों का तिरस्कार करने वाले अब जेल जायेंगे 52
• श्रमण परंपरा का भारतीय संस्कृति को योगदान 56
• उत्तम शौच लोभ परिहारी 58
• मुँह के छाले दूर कर मुस्कुराहट बनाये रखें 59

बाल कहानी

• अब क्या करें 62

कविता

• सुंदर समय 16
• लिख रहा हूँ कहानी जिन्दगी समझकर 19
• परम ज्योति 21
• मिट्टी 23
• स्वभाषा प्यारी 51
• सिंहासन ढह जायेगा 55
• शिरपुर पारसनाथ 60

कहानी

• मरता क्या नहीं करता 46

नियमित स्तंभ

पाती पाठकों की : 5 • भक्ति तरंग : 6 • संस्कार प्रवाह : 7 • संयम स्वास्थ्य योग : 13
चलो देखें यात्रा : 17 • आगम दर्शन :20• माथा पच्ची : 34 • पुराण प्रेरणा : 35 • कैरियर गाइड : 36
दुनिया भर की बातें : 37 • इसे भी जानिये: 42 •दिशा बोध : 43
वरिष्ठ नागरिक : 52 • हमारे गौरव : 54 • हास्य तरंग-शरीर विकास के कुछ खेल : 61
• बाल संस्कार डेस्क : 62 • संस्कार गीत व बाल कविता : 63 • समाचार : 64

प्रतियोगिताएं

: वर्ग पहेली : 66

प्रेरणा – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य
ऐलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

प्रधान संपादक
ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर-89895 05108

प्रबंध संपादक
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़-94251 41697

कार्यकारी संपादक
ब्र. सुदेश जैन कोठिया इन्दौर-9826548159

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर-9542505311 1
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस-9575634411
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली-9818855130

महिला संपादक
डॉ. ज्योति जैन, खतौली-94128 89449
डॉ.ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर-8989845294

अतिथि सम्पादक
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर-97938 21108
अभिनंदन सांधेलीय, पाटन-9425863244
डॉ. पंकज जैन, भोपाल-9584201103
विनीत जैन प्राचार्य, साढूमल-9721419696
अक्षय अलया, ललितपुर - 9453031432

संयोजना
इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर-9827282170

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ,इन्दौर (म.प्र.)

❊ आंतरिक सज्जा ❊
आशीष कुशवाह, इन्दौर 9179169060

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का
बाकी सदस्यता शुल्क
जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते की स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर सहयोग करें ।

सदस्यता शुल्क

-आजीवन	: **2100/-**	(15 वर्ष)
-संरक्षक	: **5001/-**	(सदैव)
-परम सम्मानीय	: **11000/-**	(सदैव)
-परम संरक्षक	: **15001/-**	(सदैव)

अपने शहर के
• स्टेट बैंक ऑफ इंडिया -**संस्कार सागर**
खाता क्र. 63000704338 (IFSC : SBIN0030463)
• भारतीय स्टेट बैंक -**ब्र. जिनेश मलैया**
खाता क्र. 30682289751 (IFSC : SBIN0011763)
•आईसीआईसीआय बैंक
श्री दिगम्बर जैन युवक संघ
खाता क्र. 00410501 3575 (IFSC : ICIC0000041)

में भी अपने पूर्ण पते सहित राशि जमा कर हमारे कार्यालय को सूचित कर सकतेहैं।

कार्यालय -संस्कार सागर
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर,
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर – 10
फोन नं. : 0731-2571851, 4003506
मो. : 89895-05108, 6232967108
website :www.sanskarsagar.org
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

◆ लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
◆ संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए।
◆ कथा-साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होतेहैं। किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है।
◆ पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा।

•श्री दिगम्बर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर-10 से प्रकाशित एवं मोदी प्रिंटर्स (76, बी-1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित।

पाती पाठकों की....

• सम्पादक महोदय, विगत दिनों श्रीलंका के राष्ट्रपति भवन पर प्रदर्शनकारियों ने कब्जा कर लिया और अंततोगत्या राष्ट्रपति गोटोवाय राजपक्षे को गुप्त रूप से भागना पड़ा और आज तक की वैश्विक घटनाओं में भी सबसे विचित्र ओर अदभुत् अराजकता पूर्ण पहली घटना है। उक्त घटना के पूर्व देश की राजनैतिक घटना क्रम पर भी दृष्टि डालना आवश्यक हो जाता है। चीन से कर्ज लेकर जो जनता को सब्सिडि बांटी गयी उससे श्रीलंका में मंहगाई इतनी बढ़ी कि 200 रुपया लीटर दूध बिका । इससे आम जनता पर दुष्प्रभाव इतना पड़ा कि लोग अपने बच्चों को बारह बजे के पहले जगाते नहीं है ताकि उनको नास्ता नहीं कराना पड़े। परिणाम अराजकता जा पहुँचा। अतः भारत को सबक लेना चाहिये और वोट पाने के लिये मुफ्त बाँटने पर लगाम लगायें। जिससे भारत में अराजकता न फैले ।

अभिषेक जैन, भोपाल

• सम्पादक महोदय, महाराष्ट्र में सत्तारूढ़ दल शिवसेना में बगावत हुई और एकनाथ शिंदे मुख्यमंत्री बने तथा भाजपा भी सरकार में शामिल हुई। तथा राष्ट्रपति के चुनाव में उद्धव ठाकरे के गुट ने द्रोपदी मुर्मु का समर्थन किया। इस राजनैतिक उठापाठक के पीछे राजनैतिक स्वार्थ तो है ही साथ दल बदल प्रवृत्ति को जोरदार समर्थन मिला और कई राजनैतिक विश्लेषकों का मानना रहा कि इससे विधायक खरीद फरोखत का बाजार निश्चित तौर पर फला फूला होगा और भ्रष्टाचार की भी बृद्धि की नकारा नहीं जा सकता है। सारांशतौर पर यह कहा जा सकता है कि सत्ता परिवर्तन भारत में भ्रष्टाचार को संबर्द्धित करता है अतः चुनाव के माध्यम से यदि सत्ता परिवर्तन होगा तो ही सत्यमेव जयते का सूत्र चरितार्थ होगा।

राजकुमार जैन, इंदौर

• सम्पादक महोदय, हम तो बच गये शीर्षक से संस्कार सागर पत्रिका के अगस्त माह अंक में कहानी प्रकाशित हुई। कहानी की कथा वस्तु सरल सुबोध प्रांजल रूप में मैंने देखी तथा भाषा सारल और वाक्य विन्यास आकर्षक लगा। पत्नी को पागल कहने वाला विनोद स्वयं मुनिश्री प्रबुद्धसागर के प्रभाव और चर्या के प्रति दीवाना बन जाता है। यह भी सच है दिगम्बर जैन संत अपने ज्ञान ध्यान और तप के प्रभाव विपरीत बुद्धि वालों को अपना दीवाना भक्त बना लेते हैं। विनोद गुरु के दर्शन को गया तो वह लोकायुक्त चंगुल से बच गया अतः देव शास्त्र गुरु की शरण लेने वाला आपत्तियों के मकर जाल में कभी नहीं फंसता है।

अभिलाषा जैन, अहमदाबाद

• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर के अगस्त अंक में संयम स्वास्थ्य योग स्तंभ में आरोग्य का आधार प्रणायाम शीर्षक से आलेख पढ़ा । प्राणायाम की साधना करने वाला बिना किसी औषधि के बीमारियों से छुटकारा पा जाता है। परन्तु समस्या यह है कि एलोपैथी दवाओं के खरीदने हेतु बहुत कीमत चुकानी पड़ती है। तथा ऐलोपैथी दवा खाने पर रोग दब जाता है और पार्श्व प्रभाव इस तरह का पड़ता है कि हर दवा विष का काम करने लगती है। जीवों के अंगों और उपांगों के रसों से भी ऐलोपैथी दवाओं का निर्माण होता है कुल मिलाकर हानि ही हानि जिसमें है वह एलोपैथी कहलाती है अब हम यदि स्वस्थ्य स्वतंत्र बनना चाहते हैं तो हमें प्रणायाम को जरूर अपनाना चाहिये।

श्रीमति पुष्पा जैन, राहतगढ़

भक्ति तरंग
जिन श्रद्धान

हो जिय ज्ञानी रे ये ही सुणि जइयौ रे ।। टेक ।।
भ्रमतै आयौ नरभवमाहीं
बिछुरत बार न लाइयौ रे ।। हो।।1।।
जो चेतै तौ ही सुख पावै,
विन चेतैं दुख पाइयौ रे ।।हो।।2।।
हित करिकै बुधजन भाषत है,
जिनसरधान करइयौ रे ।। हो ।।3।।

हे जीवात्मा हे ज्ञानी। तू इतनी-सी बात सुनकर जा, इतनी-सी बात सुनता जा।

इस संसार-सागर में भटकते-भटकते अब तु बहुत कठिनाई से इस मनुष्य भव में आया है, पर इसको भी बिछुडते देर नहीं लगती।

इस मनुष्य भव में सचेत होने पर, सचेत रहने पर ही इस (मनुष्य भव) का लाभ हो सकता है। बिना सचेत हुये तो परिणाम सदा दुःख ही दुःख है।

हे ज्ञानी ! बुधजन तेरा हित जानकर के कहते हैं किंतु सदैव श्री जिनेन्द्र का श्रद्धान रख।

संस्कार प्रवाह

पंथवाद का जनक कौन

पूज्य बनने का लालच और योग्यता से अधिक सम्मान पाने का लोभ हर प्रकार से भक्तों को जोड़ने की प्रवृत्ति पंथवाद को जन्म देती है। पंथवाद एक ऐसी कुंठित और संकीर्ण सोच का परिणाम है जो सत्य से दूर जाकर अहं और स्वार्थ के पिंजडे में धर्म रूपी सिंह को कैदकर डालता है। धर्म के समंदर को नाले के रूप में संकीर्ण करने के प्रयास से ही पंथवाद का जन्म होता है। पंथवाद का जहर संपूर्ण समाज और धर्म की व्यवस्था विभक्त करता है। सर्वोदयी धर्म की बुनियाद में पंथवाद दीमक का कार्य करता है। पंथवाद के प्रणेता धर्म की विशालता और व्यापकता को कभी नहीं समझ पाते हैं उनकी दृष्टि में मात्र स्वयं को पूज्य सिद्ध करने में बुद्धि काम करती है। पंथ प्रणेता असंयमी होने के बाद भी वह संयमी साधक से अधिक पूज्य बनने के लिये षड्यंत्र रचता है। अनेक प्रकार के अतिशय चमत्कार का माया जाल रचकर पंथ प्रणेता अपने आप को अलौकिक साधक व्यक्ति सिद्ध करने के लिये भीड़वादी बन जाता है। और अध्यात्म के क्षेत्र में भी वह अनेक प्रकार की विकृत व्याख्याओं को प्रसारित करता है। देव शास्त्र गुरु के स्वरूप को विलोपित करने का कार्य पंथवादी ही करता है। भय आशा और लोभ को उद्दीप्ति करके पंथवादी महात्मा न रहकर बाबा बन जाता है। धर्म तत्व उपासना पर जोर देता है। परंतु पंथ व्यक्ति उपासना पर केन्द्रित होकर रह जाता है। अपने पंथ पर खतरा देखकर पंथवादी करूणा प्रेम मैत्री को भूलकर उग्र हो जाता है। और हिंसा पर उतारू हो जाता है। सच्चा धार्मिक व्यक्ति कभी धर्म पर खतरे का अनुभव नहीं करता है। क्योंकि धर्म तो वस्तु का स्वभाव है। और वस्तु स्वभाव अनादि सत्य होता है। वह किसी के झुठलाने से बदलता नहीं है।

धर्म से पंथ की ओर बढ़ती धारा उस तरह होती है जैसे प्रत्येक नदी का उद्गम निर्मल पवित्र होता है वैसे ही धर्म की धारा का उद्गम स्थल प्रत्येक दृष्टि से पवित्र होता है। परन्तु पंथ का उद्गम ही संकीर्ण होता है। सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र की एकता का नाम ही धर्म है और धर्म का नाम देते हुये रत्नत्रय से शून्य या फिर तीनो के बिखराव की स्थिति का नाम पंथ कहलता है। संयम को छोड़कर कई मनचले लोगों ने पंथ को जन्म दिया है।

अब हमें तय करना होगा कि कहीं हम किसी पंथ से चिपककर धर्म के यथार्थ मार्ग को छोड़कर सच्चे सुख के रास्ते से भटक तो नहीं रहे ? यदि स्वीकार कर लें कि हम किसी पंथ की गिरफ्त में आ गये हैं तो हमें पंथ के संकीर्ण मार्ग को छोड़कर धर्म के महान मार्ग पर लगने में जरा भी संकोच नहीं करना चाहिये।

पर्वराज पर्युषण

✲ श्रीमती सुषमा जैन, भिलाई ✲

सुखी रहें सब जीव जगत के कोई कभी न घबराये।
बैर पाप अभिमान छोड़ , जग नित्य नये मंगल गावे ।।
घर घर चर्चा रहे धर्म की, दुष्कृत दुष्कर हो जावे।
ज्ञान चरित्र उन्नत कर अपना, मनुज जनम फल सब पावे ।। (मेरी भावना)

पर्यषण पर्व पर हमें यह अवसर मिलता है कि हम अपने आत्मगुणों का विचार करें वर्षभर में किये गये कार्यों का अवलोकन करें। सर्वज्ञ देव ने धर्म तो एक कही कहा वह अहिंसा हैं। इसी अहिंसा धर्म का जीवन में पालन करने हेतु धर्म के उत्तमक्षमादि दस लक्षण हैं। निरंतर विषय भोगों में रत रहने से हमारी अन्तस धारा भटकती है और बँटती चली जाती है। जैसे नदी अपनी मंथर गति से बहती है अचानक कोई चट्टान बीच में आ जाये तो नदी की धारा खंड खंड हो जाती है, ठीक वैसे ही हमारा जीवन विषय कषायों की तीव्रता और भोगों की लालसा में अपने आत्म कल्याण के लक्ष्य से भटक जाता है।

यह दस लक्षण पर्व हमें यह स्मरण कराते है कि हम विषय कषायों से बचकर वीतराग प्रभु की शरण में जाकर अपने स्वभाव क्षमा मृदुता स्वाधीनता और पवित्रता तथा शांति पाने का उपाय करें। सदा से हमारे पास तीन शक्तियाँ मन, वाणी, शरीर है। जब भी हमने इन्हें सुनियोजित करके सद्कार्यों में लगाया तो हमने ऊपर की यात्रा की, जब इन्हीं शक्तियों को भोग विलास में लगाया तो हमें अधोगति में जाना पड़ा। वचन एवं शरीर से होने वाले गलत कार्यो पर परिवार समाज एवं न्याय व्यवस्था अंकुश लगा सकती है। परन्तु मन से होने वाले कार्यो पर कोई बाह्य नियंत्रण नहीं हो सकता, मन पर पहुँच है तो मात्र धर्म की। अतः हम अपना जीवन धार्मिक बनाकर आत्मकल्याण का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। जैन संतों ने दश लक्षण के माध्यम से धर्म परिभाषित किया।

उत्तम क्षमा- क्षमाभाव हमारा अपना स्वभाव है यह गुण सामर्थ्य और समता से निखरता है हमारे अज्ञान एवं हमारी अपेक्षाओं की पूर्ति न होने पर हमें क्रोध आता है और वहीं क्रोध हमारे गुण को प्रगट नहीं होने देता। **भगवान महावीर** की क्षमा बहुत व्यापक है। **मैं सभी जीवो को क्षमा करता हूँ। सभी जीव मुझे क्षमा करें। सब जीवों के प्रति मेरे मन में मैत्री हो किसी से भी वैर न हो।**

उत्तम मार्दव- मान के अभाव में प्रगट होने वाला मेरा सहज स्वभाव ही मार्दव हो। विनय भाव की मृदुता का घोतक है। इससे ही स्व-पर का विवेक आता है। ओर आतम कल्याण का मार्ग मिलता है। अहंकार वृत्ति के कारण हम धन, वैभव, पद प्रतिष्ठा, जाति, कुल रूप आदि क्षण भंगुर बाह्य संयोगों पर अभिमान कर बैठते हैं।

उत्तम आर्जव- मन वाणी और शरीर की एक रूपता आर्जव धर्म अर्थात् सरलता है। यह गुण मायाचारी एवं कुटिलता के अभाव में प्रगट होता है। अतः माया एवं कपटपूर्ण व्यवहार से बचकर सरलता एवं सदाचार को ही अपने जीवन का ध्येय बनायें।

उत्तम शौच- शुचिता के भाव को शौच कहते है। हम प्रतिक्षण बाह्य स्वच्छता को ध्यान में रखते हैं। पर संत कहते हैं कि तन की स्वच्छता से ज्यादा मन की स्वच्छता होनी चाहिये। मन को परिमार्जित करके लोभ कषाय को छोड़कर ही परिणामों को निर्मल बना सकते हैं।

उत्तम सत्य- क्रोध, मान, माया, लोभ आदि कषायों के अभाव में सत्य धर्म प्रगट होता है। जैनाचार्यो ने हित मित प्रिय वचनों को सत्य वचन कहा है। सत्य से हमारा जीवन शांत एवं राग द्वेष रहित हो सकता है।

उत्तम संयम- जीव हिंसा से रहित कार्य और पांचों इन्द्रियों और मन की विपरीत वृत्तियों को सन्मार्ग पर लगाना ही संयम है। अब हमारी तीनों शक्तियों मन, वाणी और शरीर संयम के कूल किनारों में बंध कर प्रवाहित हो तो हम आत्म कल्याण के मार्ग पर लग सकते हैं। और लौकिक जीवन भी स्वस्थ एवं व्यवस्थित हो सकता है।

उत्तम तप- इच्छाओं का निरोध ही तप है। उपवास, स्वाध्याय, प्रायश्चित आदि को आचार्यो ने तप कहा है। जिस प्रकार अग्नि में तापाये जाने पर स्वर्ण शुद्ध होता है। उसी प्रकार तप की अग्नि कर्मों को जला देती है और आत्मा निर्मल होती है।

उत्तम त्याग- धार्मिक सद्लौकिक एवं परोपकार के लिये अपनी सम्पत्ति का कुछ अंश देना दान है और आत्महित के लिये अपनी कुटेवों को छोड़ना त्याग है। परिग्रह और कुटेवों को छोड़े बिना मोक्ष मार्ग का पथिक नहीं बना जा सकता है।

उत्तम आकिंचन्य- अहंकार और ममकार का विसर्जन, ग्रहण और त्याग दोनों भावों के ऊपर उठकर जो भाव भीतर प्रगट होता है अर्थात् संसार में शुद्ध आत्म द्रव्य के अलावा मेरा ओर कुछ नहीं है ऐसी भावना बनाये रखना वह आकिंचन्य धर्म है। समस्त ब्राह्य और अभयन्तर परिग्रहों से रहित एवं क्षमा, मार्दव, आर्जव, शौच, सत्य आदि गुणों से सहित अपने आप में लीन हो जाना आकिंचन्य है।

उत्तम ब्रह्मचर्य- पर से आसक्ति छूटने पर प्रगट होने वाला भाव शील है परिणामों की अत्यंत निर्मलता होने पर जब देहासक्ति से ऊपर हम अपने शुद्ध बुद्ध स्वरूप में रमें वही ब्रह्मचर्य है। इस प्रकार ये लक्षण हमारे आत्मा के ही गुण हैं जो विकारी भावों के अभाव में स्वतः प्रगट हो जाते हैं। कविवर द्यानत राय जी के शब्दों में-

उत्तम क्षमा मार्दव आर्जन भाव है, सत्य शौच संयम तप त्याग उपाव हैं।
आकिंचन्य ब्रह्मचर्य धरम दस सार हैं, चहुं गति दुखतै काढि मुकति करतार हैं।।

आत्म-जागरण का संदेशवाहकः पर्युषण पर्व

❊ डॉ. प्रतिभा जैन (भाचावत), इंदौर ❊

आलोकमय यात्रा **पर्युषण** जीवन की एक यात्रा है। यात्रा में यातनाओं के कांटे न मिलें तो वह यात्रा ही क्या ? मार्ग की बाधाओं को कम करने की प्रक्रिया का नाम ही **पर्युषण** है जो कि अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाती है। यात्रा में उतार-चढ़ाव की पगडंडियां आती ही हैं। जब कभी क्रोध की गरम लपटें आक्रमण करती है, तब कवच बनती है क्षमा। जितते हैं **पार्श्वनाथ** और हारता है **कमठ**। विजयी होता है **जिनशासन** और प्रसन्न होती हैं मां अहिंसा। पर्युषण पर्व का समारम्भ क्षमा से होकर **क्षमावाणी** पर समाप्त होता है। प्रातः काल पूजन सूत्र की वांचना मध्यान्ह में भी विधान, स्वाध्याय होता है, शाम को सामायिक और धर्म के साथ ही अधिक सांस्कृतिक जागृति हुई तो रात्रि में रंगोली, मेंहदी आदि प्रतियोगिता हो जाती हैं।

जिस तरह णमोकार महामंत्र जैन धर्म की अमृतोपम संजीवनी है। सोलह कारण पर्व तीर्थंकर पद को दिलाने वाला पर्व है उसी तरह आत्म-जागृति एवं पवित्रता का महापर्व है पर्युषण।

जैन परम्परा में जितने भी पर्व हैं सबके सब आध्यात्मिक पर्व हैं। कुछ पर्व सामाजिकता से जुड़े हैं तो कुछ ऐतिहासिकता से। जिनशासन की सर्वश्रेष्ठ आराधना उपासना ही पर्युषण की सामाजिक क्रांति का आधार है। चैत्र शुक्ल त्रयोदशी तीर्थंकर महावीर से संबंधित है। तो अक्षय तृतीया ऋषभ देव से। श्रुत पंचमी के पीछे इतिहास है कि इस दिन शास्त्र का लेखन प्रारंभ हुआ। इसे धार्मिक जीवन की वर्षगांठ कह सकते हैं। भारत वर्ष की भौगोलिक स्थिति के अनुसार आषाढ़ पूर्णिमा को चातुर्मास प्रारंभ होता है। इसके पहले जलती धरती को शांति एवं शीतल करने के लिये प्रकृति जलवृष्टि करती है अर्थात् जलते जीवन में शांति के लिये ज्ञान, साधना, तप, स्वाध्याय आदि होते हैं। ये सभी मानव जीवन के आधार हैं। भविष्य की उज्जवलता की लालिमा हैं और आत्मानुशासन आत्मावलोकन का महान अवसर है, जिससे द्वारा मिलती है आध्यात्मिक भोर की रोशनी। जिससे जीवन की विषय विकार रूपी अमावस्या का अंत हो जाता है।

क्रो ध, क्रूरता, कपट, अशुचिता, लोभ, असत्य, असंयम, प्रमाद, अहंकार, अब्रह्म आदि सभी जीवन के अपकारक हैं तथा समता, सरलता, निष्कपटता, सत्य संयम, तप, त्याग, ब्रह्मचर्य, निष्परिग्रह आदि सभी जीवन में उज्जवलता को दिलाने वाले महत्त्वपूर्ण तत्व हैं। इन्हीं की विशाल विराटता का नाम है पर्युषण। अतः भगवान ऋषभदेव से भगवान महावीर तक की श्रेष्ठ आध्यात्मिक साधना, तीर्थ प्रवर्तन का अमर संदेश देने वाला है ये पर्व।

पर्युषण पर्व कोई वर्ग विशेष के लिये नहीं है। यह एक सार्वभौतिक एवं मानव मात्र के द्वारा जीव मात्र के कल्याण का पर्व है क्योंकि जो भी आत्मोन्नति की मंजिल चढ़ेगा, उसे इन्हीं सीढ़ियों से गुजरना पड़ेगा। क्षमा आदि गुण सिर्फ जैनों लिये ही नहीं है किन्तु जन-जन के लिये उपयोगी हैं जो सत्संग एवं आत्म जागरण की प्रेरणा देते हैं। यह पर्व रोज की जिन्दगी पर पड़ती काली छाया को हटाने एवं अंतरंग और बहिरंग की विसंगतियों की समीक्षा करने का सुनहरा अवसर देता है।

10 दिनों का यह सुनहरा अवसर खो न जाये, नहीं तो आषाढ़ के चुके किसान और डाल से चुके बन्दर की तरह पछताना पड़ेगा। इसी तरह पर्व के दिन आध्यात्मिक दुकान को चलाकर आत्मगुण कमाने के दिन हैं। इन दिनों में जिंदगी कहाँ टूटी और बिखरी है उसे अविलंब जोड़ने का काम करना है एवं चेतना का लेखा-जोखा कर जिंदगी को चारों तरफ से सुखद बयार से भरना है।

पर्युषण पर्व हमारे जीवन के परिवर्तन में कारण बन सकता है। पुरे एक वर्ष फिर वह सुनहरा अवसर आता है। अतः हमें अपने जीवन को भौतिकता से अध्यात्म की ओर, मिथ्यात्व से सम्यक्त्व की ओर ममता से समता की ओर अज्ञान से सम्यक ज्ञान की ओर, विभाव से स्वभाव की ओर, असत्य से सत्य की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाना चाहिये। अर्थात् हृदय शुद्धि, चित्त शुद्धि आत्म शुद्धि का परम पवित्र पर्व है पर्युषण।

पर्युषण अर्थात एक स्थान पर स्थिर रहना सब प्रकार से शांति करना, आत्मा की उपासना करना, स्वयं की उपासना अर्थात सब ओर से अलग होकर एक केन्द्र में निवास करना। यह केन्द्र आत्मा है। पर्युषण अर्थात इधर-उधर फैली हुई आत्मविमुख परिस्थितियों से हटकर आत्मा का अपने शुद्ध स्वभाव में केंद्रित होना। या यूं कहें कि आत्मा का आत्मा के द्वारा आत्मा में लीन हो जाना। एक तरह से पर्युषण अपने घर लौट आने का पर्व है। पर संपत्ति में लीन होकर निज संपत्ति को मत खो देना। मैं और मेरे बीच में जो है उसे मत अपना बना लेना। **आत्म स्वभावं परभाव भिन्न।** अनादिकाल से आत्मा मिथ्यात्व के मोह में अज्ञान में रहता आया है। अंधकार में ही गति रही है इसकी। चैतन्य ज्योति के दर्शन ही नहीं हुये अर्थात वह स्वयं को भूल ही गया है कि मैं कौन हूँ और शरीर को ही मैं समझने लगा। भगवान महावीर की धर्म देशना हैं- मनुष्य ! तू स्वयं।

अनंत शक्ति सम्पन्न है। तू स्वयं ईश्वर है परमात्मा है। वह सो गया है, उसे जगा। परमात्म भाव का जागरण होने पर श्रेष्ठता कहीं बाहर से नहीं लाने पड़ेगी। क्योंकि श्रेष्ठता तो स्वयं में समाहत है। मैं कौन हूँ मैं क्या हो गया हूँ, मुझे क्या होना चाहिये और वह कैसे होना चाहिये ? ये ही कुछ प्रश्न हैं जिनका यथार्थ समाधान पर्युषण पर्व की साधना में मिलता है।

पवित्र दिवसों में हम अपनी आत्मा का निरिक्षण-परीक्षण करें। पर्युषण पर्व कहता है कि तुम अपने आप को परखों, अपने आप को पहचानों। अपने अपने आप को पहचान लिया तो फिर किसी अन्य को पहचानने की आवश्यकता ही नहीं रहेगी अर्थात् अपनी आत्मा अपनी भूलों का निरिक्षण परीक्षण और उचित निराकरण करना ही पर्युषण पर्व का मूल रहस्य है।

बड़े भाग्य से नर तन पाया, उसने भी जिन धर्म।
पर्युषण में आत्मोपासना, कर समझे निज मर्म।।

पर्युषण पर्व में जो कुछ भी क्रियाएँ होती है वह तो पर्व का शरीर है। परन्तु इस पर्व की आत्मा हैं-

समभाव की साधना, क्षमा की साधना, ममता और त्याग की साधना। विवेक और वैराग्य ही वस्तुतः इस पावन पर्व की मूल आत्मा है।

इस पर्व की साधना का मूल लक्ष्य है- कषायों पर विजय प्राप्त करना, अपने विचारों को सुन्दर संस्कारों में परिणत करना। यह पर्व कहता है कि -

यदि तुम गृहस्थ हो तो भरत और जनक आदि बनो।
यदि तुम संत हो जो गज सुकुमाल अर्जुन आदि बनो।।

अर्थात् व्यक्ति का हर कदम साधना के पावन पथ पर ही पड़ना चाहिये। आपके जीवन की बुलंदी हिमालय से ऊँची हो, आपके जीवन की गहराई सागर से भी गहरी हो।

उद्देश्य- पर्युषण पर्व आध्यात्मिक चेतना को जागृत करने का, आत्मा की उपासना या आत्म स्वरूप के निकट होने का पर्व हैं । शांति, क्षमा, संतोष आदि सद्गुणों को विकसित कर स्व के द्वारा स्व में स्थित होना इस पर्व का उद्देश्य हैं।

सन्देश- पर्युषण पर्व का मुख्य संदेश हैं- कषायों एवं विकारों को उपशांत करना अथवा नियंत्रित करना ताकि वह हमारी आत्मा का कुछ बिगाड़ न कर सकें और हम अपनी आध्यात्मिक शक्तियों का अधिकायिक विकास कर सकें। अध्यात्म साधना मूल हैं- मैत्रीभाव। मैत्री भाव के विकास में राग, द्वेष, मोह, स्वार्थ आदि बाधक हैं। जब तक मन में ऐसे भाव को निकाल नहीं देते, तब तक हम मैत्री भाव का विकास नहीं कर सकते। तीर्थंकर महावीर की देशना है कि **वैरं मज्झं न केणवि।** किसी के साथ मेरा बैर-विरोध न हो। इसके साथ ही **मित्ती में सव्व भूदेसु** अर्थात् सभी प्राणियों के प्रति मेरा मैत्रीभाव हो। अर्थात् हममें हमेशा **वसुधैव् कुटुंबकम्** का भाव हो।

पर्युषण पर्व की सीख है कि हम अपनी दृष्टि को बदलें अर्थात् विषय विकारों से अलग हो आत्मोद्धारक बनें। यदि संसार का प्रत्येक जीव पर्युषण पर्व से प्रेरणा ले तो हमारी सृष्टि विनाश के अंधकार में डूबने से बच जायेगी।

आज समस्त विश्व को एकता, आपसी भाई चारे और प्रेम की आवश्यकता है। पर्युषण पर्व हमें सीख देता है कि यह पर्व एक तरह से महावीर द्वारा दिये गये संदेशों को आम जनता तक पहुँचाने का मार्ग है।

सार्थकता- पर्व की सार्थकता तब है जब हम पर्व के उद्देश्य को, पर्व की मंगल प्रेरणाओं को आत्मसात करें। हर क्षण स्वयं में सात्विक भाव जगाकर मन को निर्मल बनायें। जीवन तो तरूवर जैसा है। तरूवर पर फल लग जाना ही पुरुषार्थसिद्धि से सर्वार्थसिद्धि की यात्रा पूरी होना है। पर्युषण तो तरूवर की जड़ को पवित्रतम बनाने की प्रक्रिया है। किसी भी मधुर परिणाम के लिये मूल का, उसकी जड़ का मधुर होना अनिवार्य है।

आज विश्व, देश और समाज हिंसा से पराजित है। निरंतर बढ़ती हिंसा ने जन जीवन को संत्रस्त कर रखा है। आज जरूरत है मनस क्रांति के द्योतक पर्युषण पर्व की अंतश्चेतना को पकड़ कर अपने जीवन में साकार करने की। हकीकत में तभी हमारे द्वारा मनाये जाने वाले इस पर्व की महत्ता लोक जीवन में सार्थक बन सकेगी ।

आत्म जागरण हो जीवन में, साधना का हो मार्ग प्रशस्त।
सत्य अहिंसा के बल पर ही, सुखी बने जीवन संत्रस्त।।

संयम स्वास्थ्य योग

तनाव मुक्ति का उपाय भ्रमरी प्राणायाम

भ्रामरी प्राणायाम- भ्रमर के समान गूंज करते हुये श्वांस लें। भ्रामरी के समान मधुर गूंज के साथ दोनों कानों को तर्जनी से कसकर बंद करके तथा दांत भींचकर रखते हुये मन को इस गूंज पर केन्द्रित रखते हुये धीरे-धीरे रेचन करें। रेचन के अंत में मूलबंध शिथिल करें। ध्यान आज्ञा चक्र पर रखें।

लाभः- मन की चंचलता समाप्त करता है। एकाग्रता बढ़ाता है।

बद्धयोनि प्राणायामः- दोनों अंगूठों से कान, दोनों तर्जनी से आँखें मध्यमा से नासा पुट एवं अनामिका एवं कनिष्का का क्रमशः ऊपर व नीचे के होठों पर रखकर मुँह बंद करें। प्रारंभ में मुँह खोलकर (अंगुलिया हटाकर) दीर्घ श्वास भरकर पूरे फेफड़े व पूरे गाल फुला लें । मुँह भी बन्द करते हुये जालंधर बंध एवं मूलबंध के साथ सहजता पूर्वक श्वास रोकें। अन्तः प्रवर्तित नाद पर ध्यान केन्द्रित करें रेचन के पूर्व जालंधर बंध शिथिल कर नासापुट खोलकर फुलायें हुये गाल सामान्य करके धीरे-धीरे रेचन करें। रेचन के अंत में मूलबंध शिथिल करें।

लाभः- सभी ज्ञानेन्द्रियों को एक साथ सबल बनाती है। इंद्रियों को अतः मुखी करती है।

चतुर्मुख प्राणायाम- धीमे श्वास भरकर गर्दन को सामने झुकाते हुये तेजी से श्वास छोड़े। सिर सीधा करते हुये धीमे श्वास आ जायें, गर्दन को पीछे झुकाते हुये तेजी से श्वास छोड़े। सिर सीधा करते हुये श्वास आ जाये गर्दन को दाहिने घुमाते हुये तेजी से श्वास छोड़ें। सिर सीधा करते हुये श्वास आ जाये, गर्दन को बायें घुमाते हुये तेजी से श्वास छोड़ें। इस प्रकार इसी क्रम से गर्दन आगे पीछे, दाएँ-बायें ले जाते हुये श्वास प्रश्वास करते जायें एवं लयबद्ध तरीके से गति आगे बढ़ायें। पूर्ण गति पर पहुँच कर शरीर को शिथिल छोड़ दे। मन को मस्तिष्क के ऊपरी भाग में चोटी के हिस्से पर जहां पीयूष ग्रंथि है, केन्द्रित करें । मन ही मन ॐ का अहर्निश जाप करें। यह जाप तेल की धार की तरह अखण्ड हो। सुखपूर्वक ध्यानस्थ अवस्था में स्थिर रहे।

समयसार में प्रतिपादित व्यवहार नय की उपादेयता एवं भूतार्थता

❊ एलक सिद्धांतसागर महाराज ❊

समयसार ग्रंथ की पीठिका को निबद्ध करते हुये आचार्य कुन्द कुन्द देव ने आठ गाथाओं के माध्यम से शुद्ध नय और व्यवहार नय का वर्गीकरण किया है और यह स्वीकार किया गया है कि व्यवहार नय के माध्यम से परमार्थ का उपदेश संभव होता है। व्यवहार नय का स्वरूप और कार्य अभेद में भेद करके वस्तु स्वरूप को स्पष्ट समझाया जाता है ज्ञानी के दर्शन-ज्ञान-चारित्र को पृथक-पृथक करके बतलाने का काम व्यवहार नय के द्वारा सम्पन्न होता है किन्तु वस्तु तत्व में ज्ञानदर्शन और चारित्र कोई पृथक न होकर इन तीनों से समाविष्ट एक केवल ज्ञायक शुद्धात्मा ही होता है।

आचार्य जयसेन जी ने अभेद रूप निश्चय नय से अग्नि एक है फिर भी व्यवहार स्वरूप अग्नि में ही दाहक पाचक और प्रकाशक तीन विषय भेद से अग्नि के तीन प्रकार हो जाते हैं। ठीक उसी प्रकार अभेद रूप निश्चय नय से तो शुद्ध चैतन्य रूप है फिर भी भेदरूप व्यवहार नय से जो जानता है वह ज्ञान है जो देखता है वह दर्शन हे जो आचरण करता है वो चारित्र है इस प्रकार व्युत्पत्ति से विषयभेद की अपेक्षा से जीव के तीन भेद हो जाते हैं आचार्य जयसेन जी ने व्यवहार शब्द का अर्थ सद्‌भूत व्यवहार लिया है सत्‌भूत व्यवहार का कार्य है कि जो गुण गुणी के साथ अभिन्न होकर रहते हैं उनका भिन्न-भिन्न रूप से कथन करना।

आचार्य कुन्द कुन्द की दृष्टि में व्यवहार नय की आवश्यकता आचार्य कुन्दकुन्द देव ने यह स्पष्ट किया है कि अनार्य पुरुष को अनार्य भाषा के बिना विषय ग्रहण कराना संभव नहीं होता है ठीक इसी प्रकार व्यवहार नय के बिना परमार्थ का उपदेश नहीं किया जा सकता है।

जह णवि सक्कमणज्जो अणज्जभासं विणा दु गोहदुं।
तह ववहारेण विणा परमत्थुवदेसाणमसक्कं॥

आचार्य जयसेन और अमृतचन्द्र आचार्य के दृष्टांत में समानता :- आचार्य जयसेन और आचार्य चन्द्र सूरि ने व्यवहार नय की उपादेयता बताने के लिये समान रूप से दृष्टांत दिया है।

दोनों आचार्यों ने कहा है कि जैसे किसी म्लेच्छ से यदि कोई ब्राह्मण स्वस्ति शब्द कहे तो वह म्लेच्छ शब्द के वाच्य वाचक को न समझने के कारण बकरे (मेड़े) की भांति टक-टकी लगाकर आँखें फाड़कर देखता है किन्तु जब वह ब्राम्हण म्लेच्छ की भाषा में समझाकर कहता है कि स्वस्ति शब्द का अर्थ है तेरा अविनाशी कल्याण हो तब वह हर्षमय आंसुओं से प्रसन्न हो उठता है और स्वस्ति शब्द के अर्थ को समझ जाता है। इसी तरह से जब किसी निश्चय और व्यवहार इन दोनों के अर्थ हैं ऐसा समझायें जाने पर आत्मा शब्द का अर्थ स्पष्ट हो जाता है अतः व्यवहार नय के बिना परमार्थ का उपदेश संभव नहीं होता है।

व्यवहार के द्वारा ही परमार्थ का ज्ञान संभव होता है।

समयसार ग्रंथ निश्चय नय प्रधान ग्रंथ है इस ग्रंथ को पढ़कर प्रायः लोग व्यवहार नय की उपेक्षा करने लगते हैं क्योंकि निश्चय नय के माध्यम से धार्मिक क्रिया और आवश्यक कर्म आवश्यकता महसूस नहीं होती है उनका चिंतन इस दिशा की ओर चला जाता है कि शुद्धात्मा का ध्यान करना सर्वश्रेष्ठ हैं क्योंकि इस तरह का निर्देशन समयसार ग्रंथ में ही प्राप्त होता है लेकिन आचार्य कुन्द कुन्द देव ने समयसार की पीठिका में ही व्यवहार नय की उपादेयता उपयोगिता और भूतार्थता के आधार पर ही व्यवहार नय की प्रयोजनीयता को सिद्ध करने का पूर्ण प्रयास किया है। किन्तु नय पक्षपात के चश्में से देखने वाले लोगों ने उस व्यवहार नय की भूतार्थता अथवा सत्यार्थता को समझने का कतई प्रयास नहीं किया है क्योंकि मोक्षमार्ग का शार्टकट उन्हें निश्चय नय में ही दृष्टि गोचर हो रहा था।

आचार्य कुन्दकुन्द देव ने गाथा 9 व 10 के माध्यम से श्रुतकेवली के स्वरूप को प्रस्तुत करते हुये दो गाथायें दी है और इन गाथाओं के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया है कि व्यवहार नय से ही परमार्थ को जाना जा सकता है। वे गाथायें इस प्रकार हैं-

जो हि सुदेण हि गच्छदि अप्पाणमिणं न केवलं सुद्धं।
तं सुद केवलि मिसिणो भणंति लोगप्पदीवयरा॥9।
जो सुदणाणं सव्वं जाणदि सुदकेवलिं तमाहु जिणा।
सुदणाणमाद सव्व जह्मा सुदकेवलि तह्मा॥10॥

उपयोक्त दोनों गाथाओं का भाव ग्रहण करते हुये आचार्य अमृतचन्द्र जी ने कहा है कि जो श्रुतज्ञान से केवल शुद्धात्मा श्रुत ज्ञान जानता है वे परमार्थ से श्रुतकेवली हैं और जो संपूर्ण श्रुतज्ञान को जानते हैं वे व्यवहार नय से श्रुत केवली हैं सर्व ज्ञान से तात्पर्य आत्माओं और अनात्माओं से हैं, अनात्मा का अर्थ होता है समस्त जड़ रूप आकाश आदि पांच द्रव्य जिनके अन्दर ज्ञान के साथ तादात्म सिद्ध नहीं होता है इसीलिये अन्य पक्ष का अभाव होने से ज्ञान आत्मा ही है यह सिद्ध होता है और जो आत्मा को जानता है वह श्रुतकेवली सिद्ध होता है वही परमार्थ है। और जो ज्ञान और ज्ञानी में भेद करता है वह व्यवहार नय है उसी व्यवहार से ही परमार्थ का प्रतिपादन होता है और जो श्रुतज्ञान से केवल शुद्धात्मा को जानता है वह श्रुतकेवली है इस प्रकार परमार्थ का प्रतिपादन करना अशक्य होता है क्योंकि परमार्थ कंथचित् वचन गोचर नहीं होता इसीलिये श्रुतज्ञान सबको जानता है वही श्रुतकेवली है इस प्रकार परमार्थ का प्रतिपादन व्यवहार जानता है वही श्रुतकेवली है इस प्रकार परमार्थ का प्रतिपादन व्यवहार नय से होता है इसी विषय को आचार्य जयसेन जी ने स्पष्ट करते हुये कहा है कि भाव श्रुत रूप स्वसंवेदन ज्ञान के द्वारा केवल शुद्धात्मा को जानता है वह निश्चय श्रुत केवली होता है किन्तु जो अपनी शुद्धात्मा का अनुभव नहीं कर रहा है। और न ही शुद्ध आत्मा की भावना करता है केवल बाह्य विषयक द्रव्य श्रुत के व्यवहार श्रुतकेवली

होता है। वर्तमान काल में शुक्ल ध्यान का अभाव होने से भाव श्रुतकेवली नहीं होते हैं किन्तु यथायोग्य धर्मध्यान होने से यथायोग्य श्रुतकेवली पना बनता है।

आचार्य जयसेन जी की टीका के माध्यम से दो गाथायें अतिरिक्त दृष्टि गोचर होती है जिन्हें आचार्य अमृतचन्द जी ने ग्रहण नहीं किया है इन गाथाओं में भेद रत्नत्रय की भावना और अभेद रत्नत्रय की भावना का वर्णन किया है तथा भेदाभेद रत्नत्रय भावना का फल शीघ्र ही सब दुखों से मुक्ति बताया है। गाथायें निम्न प्रकार हैं-

णाणह्मि भावणा खलु कादव्वा दंसणे चरित्ते य।
ते पुण तिण्णिवि आदा तह्मा कुण भावणं आदे॥11॥
जो आदभावणमिणं णिच्चुवजुत्तो मुणी समाचरदि।
सो सव्व-दुक्ख-मोक्खं पावदि अचिरेण कालेण॥12॥

इस तरह से भेद रत्नत्रय की भावना और अभेद रत्नत्रय की भावना को सिद्ध करते हुये दोनों रत्नत्रयों की भावना से सम्पूर्ण दुख को समाप्त करने का फल बताना यह सिद्ध करता है कि व्यवहार नय की अपनी उपदेयता है यह बात एक अलग है कि यह उपादेयता एक सीमा तक ही स्वीकरणीय होती है।

कविता

सुंदर समय

❋ श्रीमती सुनीता कठरया, बीना ❋

वह समय सबसे सुंदर है,
जिस समय हम अपने करीब होते हैं
स्वयं को देखते हैं, स्वयं को जानने का प्रयास करते हैं।
स्वयं से बाते करते हैं, स्वयं की बातें सुनते हैं।
समीक्षा स्वयं की करते हैं, दोष स्वयं के स्वयं जानकर
मन को शुचिता के, भावों से भरते हैं।
अपने अपार अनन्त आत्म वैभव की,
प्रभुता के स्वयं प्रभु होते हैं।
हमारी इस प्रभुता को, हमारी इस पूंजी को।
कोई हमसे, छीन नहीं सकता।
वह तो औरों की, पहुँच से बहुत दूर।
स्वयं के अंदर है, बहुत सुरक्षित बहुत संभली हुई।
बहुत ही भीतर है, जब ऐसे सुंदर भावों से भरे हम
स्वयं के करीब होते हैं सचमुच वह समय सबसे सुंदर है।

चलो देखें यात्रा

कारकल

क्षेत्र का महत्त्व- क्षेत्र पर मन्दिरों की संख्याः 23

क्षेत्र पर पहाड़ - दो पहाड़ हैं। बड़े पहाड़ पर 150 एवं छोटे पहाड़ पर 20 सीढ़ियाँ हैं।

ऐतिहासिकता- सन् 1932 में कारकल नरेश वीर पांडव द्वारा 13 मीटर ऊँची बाहुबली स्वामी की प्रतिमा स्थापित कराई गई थी। यहाँ पर 12 प्राचीन दिगम्बर जैन मंदिर हैं तथा कुल मिलाकर 23 जैन मंदिर हैं। 1000 वर्ष पुराना क्षेत्र है, शिल्पकला हेतु प्रसिद्ध है। जैन राजा का कार्य क्षेत्र रहा है।

समीपवर्ती तीर्थक्षेत्र- मूडबिद्री -16 किमी, हूँमचा- 110 किमी, श्रवणबेलगोल- 225 किमी, वारंगल, कुन्द कुन्द बेट्ट, ज्वालामालिनी आदि।

निकटतम प्रमुख नगर-मूडब्रिदी-16 किमी., मेंगलोर-53 किमी

प्रबंध व्यवस्था- **संस्था-** भट्टारक मठ एवं श्राविकाश्रम
अध्यक्ष- श्री राजगुरु स्वस्ति श्री ललितकीर्ति भट्टारक जी
प्रबंधक-तेजप्पा (09964159927)

आवागमन के साधन-रेल्वे स्टेशन-मेंगलोर-53 किमी.

बस स्टैण्ड- कारकल-8 किमी

पहुँचने का मार्ग- मूडब्रिदी या मेंगलोर से सड़क मार्ग द्वारा

क्षेत्र पर उपलब्ध- आवास कमरे (अटैच बाथरूम)-8, कमरे (बिना बाथरूम)-5

सुविधायें- हॉल- 2 , गेस्ट हाउस-×

यात्री ठहराने की कुल क्षमता- 1000

भोजनशाला - है **विद्यालय-**नहीं

औषधालय-है **पुस्तकालय-** है

टेलीफोन- 08258-233977 (मठ)- 233099, (कमेटी)- 09964159927

नाम एवं पता- श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र कारकल जिला उडुपि (कर्नाटक) 574104

प्रतिकूलता में साधना

✻ मुनिश्री 108 पूज्यसागरजी महाराज✻

आचार्य भगवन श्री विद्यासागर जी महाराज ने सन् 1968 में राजस्थान में दीक्षा लेकर 6-7 साल तो राजस्थान में ही विहार किया, लेकिन सन् 1976 में बुन्देलखण्ड में प्रवेश करने के बाद उनके चातुर्मास प्रायः कर इन क्षेत्रों पर ही हुये जैसे बुन्देलखण्ड के प्रसिद्ध क्षेत्र कुण्डलपुर में आचार्य और क्षेत्र थे-नैनागिरि और बीना बारह जी आदि क्षेत्रों पर अनेक बार वाचना और चातुर्मास करने रूके इससे इन क्षेत्रों का अत्याधिक विकास हुआ और इनकी बहुत अधिक प्रसिद्धि बढ़ गई। लेकिन आचार्य भगवन इन प्रसिद्ध क्षेत्रों के अलावा धीरे-धीरे ऐसे क्षेत्रों पर जाकर रूकने लगे जिन क्षेत्रों का शायद बहुत से लोगों ने आचार्य श्री जी के उन क्षेत्रों पर जाने के पहले नाम भी नहीं सुनें होंगे तो फिर दर्शन करने की बात ही नहीं आती। आओ हम एक ऐसे ही क्षेत्र के बारे में यहाँ लिखने जा रहे हैं जहाँ पर आचार्य श्री ने बुन्देलखण्ड में प्रवेश करने के बाद लगभग 25 साल बाद पहली बार सन् 2001 में उस क्षेत्र पर ग्रीष्म कालीन वाचना के लिये गये, उस क्षेत्र का नाम है बहोरीबन्ध, जो कि कुण्डलपुर क्षेत्र के पीछे रास्ते से जाने पर जबलपुर और कुण्डलपुर के बीच रास्तेमें पड़ता है। कब और कहाँ से पहुंचे आचार्य श्री जी बहोरीबन्ध उसको अब आगे लिखते हैं -

कुण्डलपुर पंचकल्याणक महामहोत्सव सन् 2001 जिसमें लगभग 175 मुनि, आर्यिका, क्षुल्लक, ऐलक आदि पिच्छीधारी साधु थे। इस महामहोत्सव के बाद कुण्डलपुर से विहार करके ग्रीष्मकालीन वाचना के लिये आचार्य श्री जी बहोरीबंध क्षेत्र पर रुके तो उनके लगभग 42 पिच्छी का संघ था और वहाँ क्षेत्र पर साधुओं के रूकने के लिये बहुत पुराने मात्र 8-10 कमरे बने हुये थे जिनमें सामने से तो तेज धूप आती ही थी तथा एक मंजिल के हाने के कारण दोपहर में छत बहुत गर्म हो जाती थी और प्रत्येक कमरे में 3-4 साधु के रहने से आपस की भी गर्मी हो जाने के प्रायः कर दिन भर साधुओं को शरीर से पसीना निकलता रहता था।

प्रतिकूल स्थान और गर्मी अधिक होने के कारण स्वाध्याय में ज्यादा कठिन गंथ पढ़ने में हम सब मुनिराजों का मन नहीं लगता था इसलिये मुनिश्री योगसागर जी महाराज बोले अपन सब मुनिराज दोपहर में स्वाध्याय में मन लगाने के लिये आचार्य श्री द्वारा लिखित मूकमाटी महाकाव्य को पढ़ेगे। संघ के बहुत से महाराजों को यह बात अच्छी लगी और संघ के प्रायः कर मुनिराज साथ में बैठकर स्वाध्याय करने लगे।

मुनिश्री योगसागरजी महाराज सब मुनियों से 1-1 दिन पढ़वाते थे और जहाँ कठिन होता था वहाँ समझाते थे, धीरे-धीरे ग्रंथ पूरा हो गया। इस प्रकार हम सब मुनियों ने तो इस ग्रंथ के माध्यम से दोपहर की गर्मी का समय निकाल लिया लेकिन आचार्य भगवन ने इस प्रतिकूल स्थान और तेज गर्मी में भी अपनी साधना और अधिक बढ़ा दी अभी तब आचार्य श्री जी सुबह शाम सामायिक ज्यादा देर तक करते थे लेकिन दोपहर में मात्र एक घण्टा की प्रायः कर बैठकर

सामायिक करते थे। लेकिन बहोरीबंध की तेज गर्मी में दोपहर में खड़े होकर आचार्य श्री जी ढ़ाई घंटे की सामायिक करने लगे। दोपहर की तेज गर्मी के कारण आचार्य श्री जी के शरीर से इतना पसीना निकलता था कि जिस स्थान खड़े रहते वह स्थान भी पसीने की बूंदे गिरने के कारण गीला हो जाता था यह सब मैंने अपनी प्रत्यक्ष आंखों से देखा है क्योंकि मैं भी उस क्षेत्र पर दोपहर की सामायिक आचार्य श्री के पास खड़े होकर करता था।

अब आप लोग विचार करो कि अगर चेहरे पर 5 मिनिट के लिये भी पसीना आ जाये तो तुरन्त पोछने की इच्छा होती है लेकिन आचार्य श्री सामायिक में इतनी देर तक कैसे सहन करते होंगे ? ऐसे ही आचार्य श्री जी अनेक पिछडे क्षेत्रों पर प्रतिकूलता को सहन करते हुये उत्कृष्ट साधना करते हैं जिससे उनकी तो कर्म निर्जरा तो बहुत अधिक होती ही है लेकिन त्याग तपस्या से बुन्देलखंड के अनेक पिछड़े हुये बहोरीबंध जैसे क्षेत्रों का विकास हो गया।

आचार्य श्री जी के बहोरीबंध में ग्रीष्मकालीन वाचना के समय अनेक राजनैतिक और धार्मिक नेताओं का आना भी हुआ जैसे कटनी और जबलपुर शहर पास में होने से वहाँ के विधायक, सांसद आदि नेता तो आते ही रहते थे लेकिन मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह और तीर्थ कमेटी के अध्यक्ष आदि पदाधिकारी भी उस क्षेत्र पर आचार्य श्री के दर्शनाथ पधारे जिससे वह क्षेत्र और ज्यादा चर्चित हो गया।

इस संस्मरण से हमें यह शिक्षा मिलती है कि प्रतिकूल स्थिति और प्रतिकूल स्थान मिलने पर भी व्रतीजनों को अपने व्रतों में दोष नहीं लगाना चाहिये बल्कि समतापूर्वक और अधिक साधना करना चाहिये जिससे कर्म बंध की जगह कर्म निजरा अधिक हो। इस संस्मरण को पढ़कर हम सब भी आचार्य श्री की तरह प्रतिकूल स्थान पर भी उत्कृष्ट साधना कर सके इसी भावना के साथ आचार्य श्री जी के चरणों में कोटिशः।

कविता

लिख रहा हूँ कहानी जिन्दगी समझकर

लिख रहा हूँ कहानी जिन्दगी समझकर ।
चरणों पे झुका हूँ तेरे बन्दगी समझकर ॥
दिल का दर्द यहाँ कोई सुनता नहीं ।
मैं सुनाता हूँ फिर भी अपना समझकर ॥
अपनी अहमियत के कितने सबूत दूँ ।
लोग उड़ाते हैं किस्से मुझे बेजान समझकर ॥
मेरे आंगन का अंधेरा उनसे देखा न गया ।
वो जलाते रहे चिराग मुझे रोशन समझकर ॥
अब भले ही करे वह मुझसे बेवफाई ।
मैंने उसे बताया है राज अपना समझकर ॥

आगम दर्शन

ज्ञान आराधन और श्रुत भक्ति आचार्य पूज्यपाद

आचार्य पूज्यपाद जी ने अपनी ज्ञान आराधन स्वरूप श्रुत भक्ति का प्रारंभ प्रत्यक्ष और परोक्ष भेदों से भिन्न लोक और अलोक को देखने वाले सत्लोक लोचन अर्थात केवलज्ञान रूपी नेत्र का मैं स्तवन करूँगा। इस मंगलाचरण से प्रारंभ हुई श्रुत भक्ति में मतिज्ञान के 336 भेदों का संचित सामान्य निर्देशन किया गया है कोष्ठ, बुद्धि, ऋद्धि, स्फुट बीज बुद्धि, ऋद्धि पादानुसारि बुद्धि ऋद्धि, संभिन्न श्रोर्ती ऋद्धि ऐसे अनेक ऋद्धि जिन्होंने धारण की हैं ऐसे ऋद्धि धारणों की वन्दना करने के उपरांत श्रुतज्ञान का वर्गीकरण आचार्य पूज्यपाद जी ने श्रुत भक्ति में प्रस्तुत किया है।

आचार्य पूज्यपाद जी ने जिनवर के द्वारा द्वैत गणधर के द्वारा रचित श्रुतज्ञान दो प्रकार का होता है। 1. अंगवाह, 2. अंगप्रविष्ट तथा श्रुतज्ञान के पर्याय, पर्याय समास, अक्षर, अक्षर समास, पद, पद समास, संघात, संघात समास, प्रतिपत्ति, प्रतिपत्ति समास, अनुयोग अनुयोग समास, प्राभृत प्राभृत समास, प्राभृत प्राभृत प्राभृत, प्राभृत समास, वस्तु, वस्तु समास, पूर्व, पूर्व समास ये बीस भेद श्रुत ज्ञानावरणी कर्म के क्षयोपशम के आधार पर किये गये हैं जैसे-जैसे क्षयोपशम बढ़ता जाता है। वैसे ही वैसे श्रुतज्ञान का विकास होता है इन भेदों को अर्थ लिंग्गज कहते हैं। इनके स्वरूप का वर्णन और निर्धारण हरिवंशपुराण के दसवे सर्ग में (14 से 26) श्लोक में किया गया है एवं षटखण्डागम ग्रंथ गोम्मटसार जीवकाण्ड में भी इन सबका विवेचन उपलब्ध है।

श्रुत भक्ति में अंगवाह का विवेचन 24,25,26 श्लोक में किया गया है। इनके भेद बताये गये हैं सामायिक, चर्तुविशंति स्तवन, वन्दना प्रतिक्रमण, वैनायिक कृतिकर्म, दसवैकालिक, उत्तराध्ययन, कल्पव्यवहार, कल्पाकल्प, महाकल्प, पुण्डरीक, महापुण्डरीक ये चौदह अंगवाह के भेद हैं।

प्रस्तुत श्रुत भक्ति में अंग प्रविष्ट के चौदह भेद के साथ उनके चौदह पद संख्या भी इस श्रुत भक्ति में बताई गई है। 1. आचारांग 18000, सूत्रकृतांग 36000, 3. स्थानांग 42000, 4. समवायांग 164000, 5. व्याख्या प्रविष्ट 225000 (श्वेत भगवती सूत्र) 6. ज्ञातधर्म कथा 556000, 7. उपासकाध्ययन 1170000, 8. अन्तकृत्दशांग 2325000, 9. अनुत्तरोपपादिक दशांग 9244000, 10. प्रश्न व्याकरण 9316000, विपाक सूत्र 18400000, 12. दृष्टिवाद 108685605, कुलपद- 112835805

बारहवें अंग दृष्टिवाद के पांच भेद होते हैं। 1. प्रथमानुयोग, 2. सूत्र, 3. परिकर्म, 4. चूलिका, 5. पूर्व पूर्व के चौदह भेद श्रुत भकित में नाम निर्देशित किये गये हैं।

वे पूर्व इस प्रकार हैं- 1. उत्पाद पूर्व, 2. अग्रायनीय पूर्व 3. वीर्यानुपाद पूर्व 4. अस्तिनास्तिप्रवाद, 5. ज्ञान प्रवाद, 6. सत्यप्रवाद, 7. आत्मप्रवाद, 8. कर्म प्रवाद, 9. प्रत्यख्यानप्रवाद, 10 विद्यानुवाद, 11. कल्याणनामद्येय, 12. प्राणावाय, 13. क्रिया विशाल, 14. लोक बिन्दुसार अग्रनीय पूर्व के पंचम वस्तु के चौबीस भेद कृति आदि के

माध्यम से श्रुत भक्ति में वर्णित किये गये हैं वे भेद निम्न है - 1. कृति, 2. वेदना, 3. स्पर्श, 4. कर्म प्रकृति, 5. बंधन, 6. निबन्धन, 7. प्रकृम, 8. अनुक्रम 9. मोक्ष, 10. संक्रम, 11. लेश्या, 12. कर्म परिणाम, 13 सात असात, 14 दीर्घ हस्व, 15. भवधरणीय, 16. पुद्गल आत्म, 17. निधित्ता, 18. अनिघत्त, 19. शनिका चित, 20 अनिकाचित, 21. कर्म स्थिति, 22 पश्चिम, 23. स्कंध, 24. अल्पबहुत्व अंगवाह श्रुत ज्ञान के समस्त अक्षरों का संग्रह 80108175 तथा एक सम्पूर्ण श्रुत ज्ञान में पदों की संख्या 112835805 है इस तरह से श्रुत ज्ञान के बारे में आचार्य पूज्यपाद जी ने श्रुत भक्ति के अंतर्गत विवेचन किया है अवधि ज्ञानी की परिभाषा और उनके तीन भेद 1. देशवधि, 2. परमावधि, 3. और सर्वावधि ये तीन भेद बताये हैं।

परमन में स्थित विषय के जानने को मनः पर्यय ज्ञान कहा है इसके दो भेद हैं। 1. ऋजुमति, 2. विपुलमति तीन काल के सभी विषयों को एक साथ जानने वाले क्षायिक अनन्त ज्ञान सकल सुख के धाम को केवल ज्ञान बताते हुये आचार्य पूज्यपाद जी ने वन्दना की है कहा है ऐसे केवलज्ञान की मैं वन्दना करता हूँ।

श्रुत भक्ति में अंतिम श्लोक में आचार्य श्री कहते हैं समस्त लोक के चक्षु केवलज्ञान की प्राप्ति के लिये मैं ज्ञान ऋद्धि की आराधना करता हूँ जिस ज्ञान ऋद्धि का फल शाश्वत सुख है वह लघु काल में मुझे प्राप्त हो ऐसी भावना की गई है।

प्रस्तुत भक्ति की अंचलिका में कहा गया है मैं श्रुत भक्ति की आलोचना करने की इच्छा करता हूँ जो अंग उपांग पाहुड़ परिकर्म सूत्र प्रथमानुयोग पूर्व गतचूलिका और सूत्रपने से युक्त है ऐसे सूत्र की स्तुति और धर्म कथा आदि कि नित्य काल में अर्चना पूजा वन्दना नमस्कार करता हूँ। मेरे दुख का क्षय हो समाधिमरण हो और जिनगुणसम्पत्ति की प्राप्ति हो। इस प्रकार आचार्य पूज्यपाद द्वारा श्रुत भक्ति निबद्ध की गई है।

कविता

परम ज्योति

स्पर्श रस से रहित, ज्ञान दर्शन सहित
आत्म तत्त्व का स्वरूप, द्रव्य गुण पर्यय रूप
नित्य क्षणिकता मय सद् असद् मय
भावाभविका समुदय विषय है प्रमाण नय
जो जाने ऐसे आत्म को, माने परमात्म को
निज की उपासना मोक्ष पथ की साधना
निज में होती है, रागद्वेष को खोती है
दुख संकट मिटते हैं, जो निज में सिमटे हैं
यही प्रभु का ज्ञान है, आत्मा का उत्थान है

परम ज्योति सरिस मोती
शुद्ध ज्ञान के पिंड सर्वप्रदेशी से अखंड
उपयोग लक्षण नहीं विखरते कण कण

समयसार पीठिका में शुद्धात्मा की व्याख्या

❊ ब्र. जिनेश मलैया, इंदौर ❊

आचार्य कुन्दकुन्द देव से किसी शिष्य ने पूछा कि हे गुरुदेव शुद्धात्मा कौन है और उसका स्वरूप क्या है , इस प्रश्न का उत्तर आचार्य कुन्दकुन्द देव ने इस रूप में प्रस्तुत किया-

णवि होदि अप्पमत्तो ण पमत्तो जाणगो दु जो भावो

एवं भणंति सुद्धा णादा जो सो दु सो चेव।

आचार्य कुन्दकुन्द देव ने कहा कि जो प्रमत्त और अप्रमत्त इन दोनों अवस्थाओं से ऊपर उठकर केवल ज्ञायक स्वरूप को ग्रहण किये हुये हैं वह शुद्धात्मा है ऐसा शुद्ध नय के जानने वाले महापुरुषों ने कहा है।

गुणस्थानातीत शुद्धात्मा- गुणस्थान आत्मा के मोह और योग के निमित्त से होने वाले परिणामों का नाम है। इन गुणस्थानों की परिणति के कारण आत्मा शुद्ध अवस्था को प्राप्त नहीं हो पाता है ये सभी गुणस्थान आत्मा के स्वभाव रूप परिणाम नहीं हैं क्योंकि सभी गुणस्थान मोहनीय कर्म अथवा योग के निमित्त से होते हैं। अतः पर निमित्त से होने वाले परिणाम को स्वभाव नहीं कहा जा सकता है। और ज्ञायक स्वभाव आत्मा का किसी पर निमित्त से नहीं होता है। अब हम कह सकते हैं कि आत्मा वही शुद्ध मानी जायेगी जो प्रमत्त रूप गुणस्थानों से न हो एवं अप्रमत्त रूप गुणस्थानों से भी रहित हो।

प्रमत्त और अप्रमत्त गुणस्थानों की व्यवस्था- प्रस्तुत गाथा की टीका करते हुये आचार्य जयसेन जी ने स्पष्ट किया है कि शुद्ध द्रव्यार्थिक नय से शुभ अशुभ परिणामों के अभाव होने के कारण आत्मा प्रमत्त और अप्रमत्त नहीं होती है। प्रमाद शब्द का आशय स्पष्ट करते हुये आचार्य जयसेन जी ने लिखा है मिथ्यादृष्टि आदि प्रमत्त गुणस्थान के अंत तक छह गुणस्थान प्रमत्त सीमा के अंतर्गत आते हैं अर्थात् मिथ्यात्व, सासादन, मिश्र, अविरति सम्यग्दृष्टि, देशव्रत, प्रमत्तविरत ये सभी प्रमत्त समूह के गुणस्थान हैं।

अप्रमत्त समूह के अंतर्गत अप्रमत्त संयम गुणस्थान से लेकर अयोग केवली गुणस्थान तक के सभी गुणस्थान अप्रमत्त की सीमा में आते हैं अर्थात् - अप्रमत्त संयत अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण, सूक्ष्म साम्पराय, उपशांत मोह, क्षीणमोह, सयोगकेवली अयोग केवली।

ज्ञायक कौन- जो ज्ञान स्वरूप भाव या पदार्थमय होता है वह शुद्ध आत्मा ही ज्ञायक कहा जाता है आचार्य अमृतचन्द्र देव के शब्दों में जो स्वयं अपने से सिद्ध होते हुये अनादि अनन्त नित्य उद्योति विषद ज्योति स्वरूप एक ज्ञायक भाव है वह संसार अवस्था में अनादि

बंध पर्याय के निरूपण से दूध पानी के समान कर्म पुद्गलों के साथ एकत्व को प्राप्त होने पर भी द्रव्य स्वभाव की अपेक्षा से दुरन्त कषाय समूह के उदय से विचित्रता बस होकर प्रवर्त्तमान पुण्य-पाप को उत्पन्न करने वाले शुभ अशुभ परिणाम के द्वारा स्वभाव रूप परिणमन नहीं होता है अर्थात् ज्ञायक आत्मा जड़ रूप प्रवर्तन नहीं करता है इसीलिये ज्ञायक प्रमत्त और अप्रमत्त रूप नहीं होता है और यही आत्मा शुद्धात्मा अन्य द्रव्यों के भाव से भिन्न रूप होने के कारण उपासमान होता हुआ शुद्ध ज्ञायक कहा जाता है। इस ज्ञायक के ज्ञेय रूप अशुद्धता न होने से दाह निष्ठ अग्नि के समान अशुद्धता नहीं होती है दीपक के समान स्वरूप प्रकाशन दशा में स्वयं ही कर्ता कर्म से एकता रूप ज्ञायक होता है क्योंकि उसकी अवस्था में जो ज्ञात होता है वही ज्ञायक पना होता है। अतः आत्मा की ज्ञायक अवस्था ही शुद्धात्मा का स्वरूप है।

आचार्य जयसेन जी ने शुद्धात्मा को प्रमत्त अप्रमत्त से अलग बताते हुये अपनी टीका में गुणस्थान व्यवस्था के अनुसार प्रमत्त अप्रमत्त शब्द का स्पष्टीकरण सरल रूप में प्रस्तुत किया है तथा ज्ञायक शब्द को भी शुद्धात्मा का पर्यायवाची सरल शब्दों में बिना किसी विस्तार जिज्ञासुओं को अद्भुत शैली में समझाया है। जिससे विषय सरल और सुबोध हो गया है।

कविता

मिट्टी

अपूर्वा अमित जैन

भारत माँ का झंडा ऊँचा रखने
न जाने कितनों ने बलिदान दिये।
त्याग किया तपस्या की और अपने प्राण दिये
ऐ मिट्टी तू कितनी नम हैं,
तेरी सेवा करने वाले वीरों में दम हैं।।
उनके कदम -कदम तेरी रक्षा के लिये उठते हैं
उनके जमीर तुझ से शुरु, होकर तुझ पर ही रूकते हैं
हैं तू सुकूँ उनका तेरी खुशबू उनको
जिंदा होने का अहसास करवाती हैं।
जिस मिट्टी में पले बढ़े उसके प्रति प्यार बताती हैं।।
है कोई दुश्मन जो तुझे आँख उठाकर देख ले।
ऐ मिट्टी तेरे वीर के शौर्य के कारण
शत्रु की सारी कोशिशें नाकाम नजर आती हैं।

जबलपुर में कैसे बनी प्रथम प्रतिभास्थली

❊ मुनिश्री 108 पूज्यसागरजी महाराज ❊

आचार्य पूज्यपाद स्वामी ने सर्वार्थ सिद्धि आदि सिद्धांत ग्रंथों को लिखा है तो उन्हीं आचार्य महाराज ने समाधि तंत्र और इष्टोपदेश जैसे अध्यात्म ग्रंथों को लिखकर हम सब संसारी प्राणियों की अध्यात्म के प्रति रूचि बढ़ाई है। लेकिन हम सभी लोग इन अध्यात्म ग्रंथों को बहुत अच्छी रूचि से पढ़ तो लेते हैं और यहाँ तक कि ग्रंथों के पूरे श्लोकों का अर्थ भी याद कर लेते हें। लेकिन इन ग्रंथों के श्लोकों को अपने जीवन में चारितार्थ करना बहुत कठिन क्या असंभव-सा होता है। जैसे इष्टोपदेश में आचार्य पूज्यपाद स्वामी 29 नं. के श्लोक में कहते हैं-

न मे मृत्युः कुतो भीति र्न व्यापिः कुतो व्यथा।
नाहं वालो न वृद्धोहं न युवैतानि पुद्गले॥29॥

अर्थात् हमारी मृत्यु नहीं तो मुझे भय कहां से हो सकता है, मुझे रोग (व्याधि) नहीं हैं तो कष्ट कैसे हो सकता है, न मैं बालक हूँ, न बूढ़ा हूँ, न जवान हूं। ये सब बातें पौद्गलिक शरीर में होती हैं।

इस श्लोक का अर्थ हम पढ़ तो लेते हैं, लेकिन कष्ट आने पर शरीर पर ध्यान नहीं जाना और उस समय अध्यात्म दृष्टि बनाये रखना यह बहुत कठिन होता है लेकिन आचार्य भगवन श्री विद्यासागर जी महाराज के जीवन में चर्या के रूप में इन श्लोकों की चरितार्थता दिखाई देती है। हमने आचार्य भगवन के जीवन में इस प्रकार के श्लोक चर्या के रूप में कैसे देखे हैं एक घटना के माध्यम से यहाँ लिख रहे हैं।

बात उस समय की है जब आचार्य श्री जी ने सन् 2000 में अमरकण्टक क्षेत्र पर पहला चातुर्मास किया था और वह चातुर्मास आचार्य श्री जी का बहुत ही शारीरिक कष्टों के साथ निकला। क्योंकि हम पहले के संस्मरण से बता चुके हैं कि आचार्य श्री जी को उस समय जो शरीर में रोग उत्पन्न हुआ था। वह अपने आप में बहुत कष्टदायक था इसके बाद अमरकण्टक का मौसम जहाँ चातुर्मास में चौबीसों घंटो हवा पानी का माहौल बना रहता है फिर भी आचार्य भगवन समतापूर्वक उस कष्ट को सहन करते रहे। चातुर्मास पूरा होने के बाद अमरकण्टक में रूकना संभव नहीं था क्योंकि वहां अत्यधिक ठण्डी पड़ती है और आचार्य श्री जी तो चिटाई आदि कुछ लेते ही नहीं, लेकिन उस समय आचार्य श्री जी के साथ 41 मुनिराज का संघ था जिसमें प्रायः कर नये दीक्षित मुनिराज ही थे और उसमें ज्यादातर मुनिराजों का भी चटाई लेने का त्याग था। इसलिये पूरे संघ की भावना थी कि अब आचार्य श्री जी ऐसे स्थान पर विहार करके पहुँचे जहाँ पर ठण्ड कम पड़ती हो या फिर वहाँ चूने के पुराने कमरे हों जिसमें ठण्ड कम लगती हो। ऐसी संघ के मुनिराजों की भावना थी लेकिन आचार्य श्री के मन में क्या था वह अब आप देखें।

आचार्य भगवन किस तरह कष्ट सहन करते हैं और संघ के सारे महाराजों को कष्ट सहन करना सिखाते हैं। आचार्य श्री जी ने अमरकण्टक से विहार किया और धीरे-धीरे विहार करते

हुये जबलपुर शहर के लार्डगंज मंदिर में आ गये, चूंकि सुबह-सुबह पूरा संघ विहार करके आया है और पूरे शहर में 500 से अधिक चौके लगे हुये हैं बहुत से लोग चौके में थे इसलिये कमेटी वालों ने सोचा कि प्रवचन के लिये दोपहर में 2.00 बजे ही आचार्य श्री से निवेदन करेंगे ऐसा सोचकर सारी कमेटी वालों ने मेन लार्डगंज चौराहे पर एक बहुत ही सुन्दर आकर्षण बड़ी मेहनत से मंच तैयार किया लेकिन आचार्य भगवन प्रवचन के पहले ही सामायिक के तुरन्त बाद पिच्छी कमण्डल उठाकर मढ़िया जी की ओर विहार कर गये, मंदिर कमेटी वाले बहुत उदास हो गये क्योंकि उन लोगों ने बहुत मेहनत से मंच बनवायी थी लेकिन आचार्य श्री जी ने उस मंच पर बैठने की बात तो बहुत दूर उस रास्ते से भी नहीं निकले यानि मंच को देखा भी नहीं। लेकिन संघ के महाराज प्रसन्न थे क्योंकि मढ़िया जी के गुरुकुल में चूने के पुराने अच्छे कमरे बने हैं, इसलिये उसमें ठण्डी अच्छी तरह निकल जायेगी। आचार्य भगवन ने हम सब महाराजों की इच्छा पूरी कर दी (ऐसा संघ के महाराज सोच रहे थे) लेकिन आचार्य भगवन के मन में कुछ और ही था उन्होंने एक ही दिन मढ़िया जी में आहार चर्या की और विहार कर तिलवारा घाट (गौशाला जबलपुर वर्तमान में जहाँ प्रतिभास्थली है) चले गये। वहाँ जाकर देखा कि वहाँ की कमेटी वालों ने एक बहुत बड़ा हाल (जो पशुओं के लिये टीन शेड बना था) में ही 10-12 कमरे अभी-अभी नये बनाकर तैयार किये गये हैं।

जिसमे अत्याधिक सींड़ है। सब महाराज सोच में पड़ गये कि अभी-अभी तो चार महीने अमरकण्टक की हवा, पानी खाकर आये हैं अगर इन कमरों में रहेंगे तो समाधि ही हो जायेगी ऐसा सोचकर कुछ महाराज जो वापिस मढ़िया जी चले गये क्योंकि सब सोच रहे थे कि यहाँ तो एक दिन भी नहीं रह सकते और यहाँ रूक भी गये तो 41 मुनिराज की आहार चर्या कहाँ होगी क्योंकि उस समय वहाँ पर कोई टीनसेड, कमरे आदि कुछ भी स्थान नहीं था लेकिन आचार्य भगवन की सोच कुछ और ही रहती है वो कष्टों से डरते नहीं है और अनुकूलता की कभी प्रतीक्षा नहीं करते क्योंकि उन्होंने मूकमाटी में लिखा है कि अनुकूलता की प्रतिक्षा करना सही पुरुषार्थ नहीं है।

आचार्य भगवन अमरकण्टक में इतनी बड़ी बीमारी के कष्टों को समतापूर्वक सहन करके यहाँ आये और यहाँ की स्थिति को देखकर भी मन में बिल्कुल भी विकल्प नहीं किया, रात्रि में तिलवारा घाट गौशाला में ही उन नये कमरों में विश्राम किया, सुबह होने पर जो महाराज मढ़िया जी चलें गये उन्हें ऐसा लगा कि आचार्य श्री जी अब मढ़िया जी नहीं आ रहे हैं शायद आहार चर्या भी तिलवारा घाट (तिलवारा घाट जबलपुर शहर से लगभग 12 किमी. दूर है और मढ़िया जी से 5 किमी. दूर है) पर ही होगी ऐसा सोच कर मढ़िया जी से वापिस आ गये और शहर से बहुत से श्रावक चौका लेकर तिलवारा घाट पर ही आ गये लेकिन कमेटी वाले सोच रहे थे कि इतने श्रावक को एक साथ चौका लगाने के लिये कहां स्थान दें ? फिर सबने विचार किया कि भूषा गोदाम में बहुत बड़ा स्थान है इसलिये अभी तो उसमें ही चौका लग सकते हैं। जब कमेटी वालों ने चौका वालों को भूषा गोदाम का स्थान दिखाया तो सभी

श्रावकों ने कहा कि यहाँ कैसे चौका लगेगा लेकिन फिर स्थिति को देखते हुये जैसे अनाज या सब्जी मंडी में थोड़े-थोड़े से स्थान को घेरकर अपनी दुकान लगा लेते हैं, ऐसे ही उस बड़े हाल में लगभग 40-50 चौके वालों ने लेन से अपना-अपना थोड़ा-थोड़ा स्थान घेर कर उसी हॉल में चौका लगा लिये। एक ही स्थान पर सारे महाराजों के आहार का वह दृश्य भी देखने लायक था। आहार चर्या के बाद ईयापथ भक्ति में संघ के सारे महाराज बैठे हुये थे तो आचार्य श्री जी बड़े प्रसन्न होते हुये बोले आज आहार चर्या में कैसा लगा ? तब संघ के महाराज भी मुस्कुरा कर शांत हो गये क्योंकि उस समय तिलवारा घाट पर रूकना किसी भी साधू को अच्छा नहीं लग रहा था लेकिन आचार्य महाराज से कहने की हिम्मत कोई नहीं कर पा रहा था तभी एक महाराज ने हिम्मत बनाकर कह दिया कि आचार्य भगवन यहाँ पर सारे कमरे बहुत ठण्डे हैं अभी आप अमरकण्टक में इतना कष्ट सहन करके आये हैं और नये-नये महाराज भी हैं वो इतनी ठण्डी कैसे सहन करेंगे ? उन महाराज के साथ-साथ फिर दो-चार महाराज भी यही बात बोले-आचार्य भगवन ने महाराजों की बात सुन तो ली लेकिन कुछ जवाब नहीं दिया और मुस्कुरा कर बोले चलो ईर्यापथ भक्ति करें। ईर्यापथ भक्ति पूरी होने पर सब महाराज सामायिक में बैठ गये।

सामायिक के बाद संघ के महाराजों में फिर वही चर्चा का विषय था कि शायद आचार्य श्री जी 3-4 बजे वापिस मढ़िया जी चलेंगे लेकिन आचार्य भगवन मढ़िया जी तो नहीं गये और शाम होते ही एक बहुत बड़े हॉल में विश्राम करने चले गये (जहाँ पर मंदिर की वेदी है उसके पीछे वाले हॉल में) सारे महाराजों ने देखा यह क्या ? उस हॉल में जो पूरा टीनसेड है इतना बड़ा हॉल है। कई स्थानों पर बहुत बड़े-बड़े छेद हैं। यहाँ पर आज आचार्य भगवन रात्रि कैसे निकालेंगे और आचार्य श्री जी के साथ एक दो महाराज भी रात्रि में होना जरूरी हैं।

इसलिये हम एक दो महाराज भी उस हॉल मे रात में आचार्य भगवन के साथ विश्राम करने चले गये। उस रात में इतनी अधिक ठण्डी लगी कि ऐसा लगा कि आज हम महाराजों की समाधि जैसे स्थिति न हो जाये और आचार्य श्री जी को भी पांच मिनिट के लिये उस रात्रि मे नींद नहीं आयी थी।

हम लोग रात में आचार्य श्री जी की वैयावृत्ति करने गये तो उनका शरीर बर्फ की तरह ठण्डा हो रहा था क्योंकि ऊपर चद्दर का टीन था। उसकी दराचों से बहुत हवा आ रही थी, आचार्य श्री जी को पूरी रात नींद नहीं लगी लेकिन फिर भी आचार्य श्री जी के चेहरे पर सुबह वही प्रसन्नता थी सारे संघ के महाराज सुबह भक्ति करने आये तो आचार्य श्री ने बड़े मुस्कुरा कर पूछा क्यों ? रात कैसे निकली अब सारे महाराज मुस्कुराकर चुप हो गये क्यों कि सब महाराज सोच रहे थे कि अगर अब कुछ बोले तो आचार्य श्री जी कहीं बाहर खुलें में विश्राम करने न चले जायें। इस प्रकार आचार्य भगवन 4-5 दिन उसी हॉल में विश्राम करने गये। फिर कमेटी वालों के बहुत निवेदन करने पर एक कमरे में पहुंचकर कुछ दिन विश्राम किया। इस प्रकार कुल 15-20 दिन का प्रवास तिलवारा घाटा गोशाला जबलपुर में पहली बार ठण्डों में बहुत

अधिक कष्टों को सहन करते हुये निकाले फिर आचार्य श्री जी संघ सहित कोनी जी की ओर विहार कर गये।

इस संस्मरण से यह शिक्षा मिलती है कि जो महान पुरुष होते हैं वो धर्म संस्कृति को आगे बढ़ाने के लिये उसकी रक्षा के लिये स्वयं बहुत कष्ट सहन करते हैं तब वह धर्म, संस्कृति आगे बढ़कर समाज को तैयार करती है। आचार्य श्री भगवन ने तिलवारा घाट गौशाला के प्रथम प्रवेश में अत्यधिक कष्ट तो सहा लेकिन उन 15-20 दिनों में वह भूमिका तैयार हुई, कि आज उसी स्थान पर बहुत बड़ी जिसमें पढ़ने वाली बहनें जो आजीवन व्रत को लेकर स्वयं संस्कारित होती हुई धर्म के मार्ग पर चलते हुये आत्म कल्याण के साथ-साथ समाज की हजारों बेटियों को संस्कारित लौकिक शिक्षा के साथ-साथ धर्म ओर सामाजिक मर्यादा की शिक्षा भी दे रही हैं, जहाँ पढ़ने वाली सारी बहनें बाल ब्रह्मचारिणी हैं।

धन्य है आचार्य श्री जी की सोच अगर आचार्य श्री जी हम मुनिराजों की बात मान लेते और 1-2 दिन रूककर ही वापिस आ जाते तो शायद कमेटी वाले भी हिम्मत हार जाते और आज इतनी बड़ी संस्कारित संस्था तैयार नहीं हो पाती। उसी स्थान पर आचार्य भगवन के दो चातुर्मास भी हुये और 2004 के चातुर्मास में पहली बार ऐतिहासिक 24 बाल ब्रह्मचारी भाईयों को आचार्य भगवन ने दिगम्बर दीक्षा दी और कई बार वाचना आदि के निर्मित्त से वहीं रूककर उस स्थान को एक क्षेत्र का रूप बना दिया जहाँ पर भविष्य में एक बहुत विशाल मंदिर बनने वाला हैं।

इस प्रकार आचार्य भगवन की तपस्या, साधना और आशीर्वाद से अनेक क्षेत्र जैसे कुण्डलपुर, बीनाबारहा, रामटेक, कोनीजी, बहोरीबन्द, मढ़ियाजी, पनागर, मुक्तागिरि, देवगढ़ पपौराजी, आहारजी, नैनागिरि आदि क्षेत्रों का जीर्णोद्धार होकर जो विकास हुआ है वह आगे इन क्षेत्रों पर आने वाले साधुओं और श्रावकों के लिये धर्म आराधना के साथ-साथ आत्म कल्याण के लिये भी सहायक बनेंगे।

इन क्षेत्रों का एक समय ऐसा था जब वहाँ पर न तो साधुओं को रुकने के लिये उचित स्थान था और न ही श्रावकों को चौका आदि आहार चर्या कराने के लिये पर्याप्त जगह भी नहीं थी फिर आचार्य श्री जी गर्मी, सर्दी वर्षा के अनेक कष्टों को सहन करते हुये इन क्षेत्रों पर ही रहे। इसके अलावा नये क्षेत्र जैसे अमरकंटक, नेमावर, भाग्योदय, डोंगरगढ़ (चन्द्रगिरि), शीतलधाम विदिशा, सिलवानी, नंदीश्वर दीप मढ़िया जी जबलपुर, तिलवारा घाट प्रतिभास्थली जबलपुर में विशाल मंदिर आदि नये क्षेत्रों को तैयार कर दिया। इन क्षेत्रों को तैयार करने में अनेक प्रकार की प्रतिकूलताओं के होते हुये भी इन क्षेत्रों पर चातुर्मास आदि करके स्वयं अनेक कष्टों को सहन किया लेकिन समाज के लिये एक अमूल्य धरोहर तैयार ही है। ऐसे महान गुरुवर के चरणों में जो अपने व्रतों का निर्दोष पालन करते हुये अपने संघ को निर्दोष चर्या का पालन सिखाते हैं, श्रमण संस्कृति को भी आगे बढ़ा रहे है और प्राणी मात्र के कल्याण हेतु अनेक कार्य कर रहें हैं। ऐसे महान संत के चरणों में उनके जैसा बनने के लिये कोटिशः निरंतर भावना भाते हैं।

चन्देलशासन में जैन धर्म का उत्थान

❊ श्रीमती अर्चना अखिलेश जैन, बरायठा ❊

भारतीय संस्कृति अनेक राजवंशों के इतिहास को अपनी थाती में संजोए हुये है। भारत की हृदयस्थली बुन्देलखण्ड में आठवीं से तेरहवीं शताब्दी (सन् 831 ई. से सन् 1315 ई.) तक लगभग पाँच सौ वर्ष के बीच एक प्रसिद्ध राजवंश चंदेलवंश का शासनकाल रहा।[1] चंदेलकालीन बुन्देलखण्ड विश्व में स्थापत्य कला के लिये प्रसिद्ध है। चंदेलशासन में स्थापत्य एवं मूर्तिकला विकास चरमोत्कर्ष पर रहा[2]।

चंदेलवंश का प्रथम शासक नन्नुक जैनधर्म के अष्टमी तीर्थंकर चन्द्रप्रभ भगवान का परम भक्त होने के कारण चन्द्रवर्मन नाम से ख्यात् हुआ। उसकी संतान चंदेलवंशी कहलायी।

अनुश्रुतियों के अनुसार चन्द्रवर्मन ने 16 वर्ष की आयु में विशेष महोत्सव आयोजित करके महोत्सव नगर की स्थापना की जो वर्तमान में महोबा के नाम से जाना जाता है। महोबा सदियों तक चंदेलों की राजधानी रहा। वहाँ की खुदाई में मिली जैन प्रतिमाओं से चंदेलशासन की जैनधर्म के प्रति श्रद्धा का संकेत मिलता है। महोबा पर अनेक विनाशकारी आक्रमण हुये जिससे यहाँ के महत्त्वपूर्ण भवन, मंदिर, महल आदि सब तहस-नहस हो गये।[3]

चंदेलवंश परम्परा -चन्द्रवर्मन (नन्नुक) (831-850), वाक्पति (850-870), जयशक्ति विजयशक्ति (870-890), राहिलदेव (890-910), हर्षदेव (910-930), यशोवर्मन (930-950), धंगदेव (950-1002), गंडदेव (1003-1025), विद्याधर (1025-1035), विजयपाल (1035-1045), देववर्मन (1045-1060), कीर्तिवर्मन (1060-1100), सलक्षणवर्मन (100-1110), जयवर्मन (100-1120), पृथ्वीवर्मन (1120-1128), मदनवर्मन (1128-1160), यशोवर्मन द्वितीय (1160-1165), परमर्द्धिदेव (1165-1203), त्रैलोक्यवर्मन (1204-1242), वीरवर्मन (1242-1286), भोजवर्मन (1286-1290), हमीरवर्मन (1290-1315) इनमें से धंगदेव, कीर्तिवर्मन, मदनवर्मन, परमर्द्धिदेव विशेष रूप उल्लेखनीय शासक हुये।[4] जिनके शासनकाल में जैनधर्म का विशेष उत्थान हुआ।

शासक धंगदेव- संवत् 1011 (सन् 954) में धंगदेव ने शासक बनते ही खजुराहो के प्रसिद्ध पार्श्वनाथ मंदिर का निर्माण कराकर प्रतिष्ठा करायी। राजाधंगदेव दिगम्बर आम्नाय के संत वासवचन्द्र के परम भक्त थे। राजा धंगदेव की धार्मिकता एवं आस्था के कारण निकटवर्ती अनेक स्थानों जैसे सीरोंन, खजुराहो, देवगढ़, दुधही, महोबा, कालंजर, चांदपुर एवं नवागढ़ में अन्य धर्मों के साथ जैनधर्म के भी विशाल भव्यातिभव्य एवं कलात्मक मंदिर

निर्मित हुये।[5]

महाराज धंगदेव के राज्यमान 'कुलामात्यवृंद' उपाधि से विभूषित श्रेष्ठी पाहिल एवं जीजू ने भगवान शांतिनाथ एवं पार्श्वनाथ जिनालय का निर्माण जैनाचार्य वासवचन्द्र के शिष्यत्व में कराया एवं जिनालय संरक्षण हेतु सात वाटिकाएँ दान की।[6]

पार्श्वनाथ मंदिर खजुराहो की प्रशस्ति में धंगदेव के शासनकाल में पाहिल द्वारा 1 पाहिल वाटिका 2. चन्द्रवाटिका 3. लघुचन्द्रवाटिका 4. संकरवाटिका 5. पंचाईतलवाटिका 6. आम्रवाटिका 7. धंगवाटिका आदि के दान का अभिलेख प्राप्त है।[7]

चंदेलकाल में निर्ग्रन्थ दिगम्बर आचार्यों एवं साधुओं द्वारा धर्म का उत्थान हुआ। धंगदेव के गुरु वासवचन्द्र, देवचन्द्र, कुमुदचन्द्र, चारुकीर्ति, कुमारनन्दि, योगचन्द्र, योगनन्दि, यक्षदेव, विशालकीर्ति आदि निर्ग्रन्थ आचार्य एवं साधुओं के नाम विशेषरूप से उल्लेखनीय हैं।

मूर्ति निर्माता श्रेष्ठियों में पाहिल के पुत्र साल्हे एवं पौत्र महागण, महिचन्द्र, श्रीचन्द्र, जिनचन्द्र और उदयचन्द्र के नाम मूर्ति एवं मंदिर निर्माण में विशेष रूप से अंकित हैं।[8] सन् 954 से 1158 तक जैन मूर्ति एवं मंदिर निर्माण में यह परिवार सैदव अग्रणी रहा।

देवगढ़ में मंदिर क्रमांक 2 में धंगदेव के शासनकाल में प्रतिष्ठित आदिनाथ भगवान की पद्मासन प्रतिमा विराजमान है। प्रतिमालेख में संवत् 1052 (सन् 995) एवं दाता का नाम उत्कीर्ण है।[9]

शासक देववर्मन - देवगढ़ में देववर्मन के शासनकाल में संवत् 1105 (सन् 1048 ई.) में पद्मासन तीर्थंकर प्रतिमा विराजमान की गयी जो वर्तमान में मंदिर क्रमांक 12 में विराजमान है।[10]

सिद्धक्षेत्र नैनागिरि जिला छतरपुर का सबसे प्राचीन मंदिर देववर्मन के शासन काल में संवत् 1109 (सन् 1052) में प्रतिष्ठित हुआ।[11]

चंदेलशासक कीर्तिवर्मन- देवगढ़ के मंदिर क्रमांक 5 के प्रवेश द्वार की दायीं पश्चिमी भित्ती पर संवत् 1120 (सन् 1063) में संवत 1121 (सन् 1064) में यशकीर्ति आचार्य द्वारा 2 मानस्तंभ स्थापित करायें जाने का लेख उत्कीर्ण है। मंदिर क्रमांक 2 में एक और पद्मासन मूर्ति के लेख में संवत् 1122 (सन् 1065) अंकित है।

नवागढ़ के संग्रहालय में संगृहीत तीर्थंकर आदिनाथ की प्रतिमालेख में संवत् 1123 (सन् 1066) अंकित है।

देवगढ़ के मंदिर क्रमांक 19 में पद्मवती यक्षी के मूर्तिलेख में संवत् 1126 (सन् 1069) अंकित है।

देवगढ़ में क्रमांक 20 में चार फीट ऊँची कायोत्सर्ग तीर्थंकर मूर्तिलेख में संवत् 1135 (सन् 1078) एवं प्रदात्री आर्यिका लवणश्री का नाम अंकित है।

यही मंदिर क्रमांक 20 में ही चार फीट छह इंच ऊँची कायोत्सर्ग तीर्थंकर मूर्तिलेख में संवत् 1136 (सन् 1079) के साथ ही सरजासौधरा के पुत्र द्वारा इस मूर्ति के समर्पण का विवरण अंकित है।

यहीं चन्द्रप्रभस्वामी की पद्मासन मूर्ति पर संवत् 1136 (सन् 1079) के साथ आचार्य लोकनंदी के शिष्य गुणनंदी द्वारा यह मूर्ति प्रतिष्ठित होने का वर्णन अंकित है।

यही मंदिर क्रमांक 12 में एक फीट साढ़े तीन इंच ऊँची पद्मासन तीर्थंकर मूर्तिलेख में संवत् 1139 (सन् 1082) एवं मूर्ति स्थापनकर्ता माधवचन्द्र का नाम उत्कीर्ण है।

उर्दमउ में शांतिनाथ की विशाल प्रतिमा श्रावकों द्वारा चंदेलकालीन मंदिर में विराजमान करायी गयी। इसी मंदिर से पार्श्वनाथ एवं सुपार्श्वनाथ की दो प्रतिमायें अब छतरपुर के निकट डेरापहाड़ी के मंदिर में लायी गयी हैं। इन तीनों प्रतिमाओं पर संवत् 1149 (सन् 1092) अंकित है।

उर्दमउ जिला छतरपुर (म.प्र.) में पद्मप्रभ के प्रतिमालेख में संवत् 1171 (सन् 1114) के साथ गोलापूर्व आम्नाय के साहू महासेन का नाम उत्कीण है। इनकी प्रतिष्ठा चंदेलशासनक जयवर्मन के शासन में हुई।

चन्देलशासक मदनवर्मन- चंदेलशासक मदनवर्मन के शासनकाल में प्रतिष्ठित नवागढ़ संग्रहालय में संग्रहीत तीर्थंकर महावीर के प्रतिमालेख में संवत् 1195 (सन् 1138) अंकित है। प्रतिमा की प्रतिष्ठा पाहिल के पौत्र महीचन्द्र एवं प्रपौत्र देल्हण ने करायी। पुरातत्त्व वेत्ताओं एवं इतिहासकारों के अनुसार नवागढ़ उस काल का समृद्धशाली तथा जैनों की बहुलता वाला क्षेत्र था।

धुवेला राज्य संग्रहालय जिला छतरपुर में संगृहीत मुनिसुव्रतनाथ की प्रतिमा संवत् 1199 (सन् 1142) में प्रतिष्ठित हुई। मूर्ति प्रदाता में गोलापूर्व श्रीपाल के पौत्र सुल्हड़ का नाम उत्कीण है।

जतारा जिला टीकमगढ़ क तलघर में स्थित एक प्रतिमालेख में संवत् 1199 (सन् 1142) के साथ मूर्ति प्रदाता का नाम अंकित है।

देवगढ़ में मंदिर क्रमांक 12 में आदिनाथ की दो फीट छह इंच ऊँची कायोत्सर्ग मूर्ति के लेख में संवत् 1201 (सन् 1144) एवं आर्यिका मदन का नाम अंकित हैं।

नवागढ़ में अवस्थित शांतिनाथ की प्रतिमा की प्रतिष्ठा संवत 1202 (सन् 1145) में काकेनस सुत सावू रासल भ्राता सल्देसल ने करायी।

पपौरा के मंदिर क्रमांक 23 में विराजमान तीर्थंकर आदिनाथ की प्रतिमा प्रतिष्ठा भोपाल

नगर निवासी साहु टुड़ा उनके पुत्र और उसकी पत्नी माहिणी ने संवत् 1202 (सन् 1145) में करायी।

अहार के आदिनाथ प्रतिमालेख में संवत् 1202 (सन् 1145) के साथ प्रतिमा प्रदाता रतनचन्द्र के पुत्र आल्हु, जील्हु, आमदेव, भामदेव के नाम अंकित है।

धुवेला में संवत् 1203 (सन् 1146) में शुभचन्द्र उदयचन्द ने मंदिर बनवाया।

नवागढ़ में संवत् 1203 (सन् 1146) में पहले मानस्तंभ की प्रतिष्ठा रासलसुल बल्हण ने, दूसरे मानस्तंभ की प्रतिष्ठा रामचन्द्र सुत बालु ने, तीसरे मानस्तंभ की प्रतिष्ठा रासन सुतसांति ने करायी। चौथे मानस्तंभ की प्रशसित अपठनीय है।

अहार में आदिनाथ प्रतिमालेख में संवत् 1203 (सन् 1146) के साथ साबु भावदेव पत्नी जयमति एवं पुत्र लपभावन का नाम अंकित है।

मदनपुर में संवत् 1206 (सन् 1149) में गोलापूर्व अन्वय के श्रेष्ठी द्वारा शांतिनाथ आदि जिनालयों की प्रतिष्ठा करायी गयी।

देवगढ़ में मंदिर क्रमां क 4 में मंडप के दायें स्तंभ के लेख में संवत् 1207 (सन् 1150) के साथ आचार्य जयकीर्ति और आर्यिका नवासी के नाम उत्कीर्ण है।

देवगढ़ मंदिर क्रमांक 16 के अर्द्धमण्डल के बायें स्तंभ पर संवत् 1208 (सन् 1151) के साथ विभिन्न भक्तों द्वारा इस स्तंभ के निमित्त दिये गये दान का विवरण अंकित है।

देवगढ़ मंदिर क्रमांक 3 में स्थित दो फीट छह इंच की कायोत्सर्ग तीर्थंकर प्रतिमालेख में संवत् 1209 (सन् 1152) के साथ पंडित शुभंकरदेव, पंडित लालदेव, आर्यिका धर्मश्री एवं शाह जी के नाम उत्कीर्ण है।

अहार के संवत् 1209 (सन् 1152) के अरनाथ प्रतिमा लेख में आल्हु एवं उनके पुत्र देल्हण का नाम अंकित है। शांतिनाथ प्रतिमालेख में शांति और उनकी पत्नी का नाम अंकित है एवं कुंथुनाथ प्रतिमालेख में संवत् 1209 (सन् 1152) एवं आल्हु नाम अंकित है।

महोवा में संवत् 1211 (सन् 1154) का नेमिनाथ मंदिर में एक शिलालेख है जिसका उल्लेख कनिंघम ने अपनी रिर्पोट नं. 21 के पृष्ठ 72 पर किया है।

अहार में संवत् 1213 (सन् 1156) के महावीर प्रतिमालेख में गाल्ह उनकी पत्नी मलषा एवं पोषन का नाम अंकित है।

अहार में संवत् 1213 (सन् 1156) आदिनाथ प्रतिमालेख में रासल के पुत्र साबू, केशव की पत्नी सांति जाल्हु उनकी पत्नी पल्हा पुत्र बछराजदेव के नाम अंकित है।

महोवा में विराजमान पद्मप्रभ प्रतिमालेख में संवत् 1219 सन् (1162) के साथ मूर्तिकार रामदेव का नाम अंकित है।

देवगढ़ मंदिर क्रमांक 16 के गर्भग्रह के स्तंभलेख में संवत् 1220 (सन् 1163) के

साथ पंडित माधवनंदी की वंदना का विवरण अंकित है।

चंदेलशासक परमर्द्धिदेव के शासनकाल में देवगढ़ मंदिर क्रमांक 4 के मंडलस्तंभ पर संवत् 1224 (सन् 1167) के साथ भट्टारक साधु की वंशावली दी गयी है।

महोवा जिनालय में विराजमान आदिनाथ की प्रतिमा संवत् 1228 (सन् 1171) में प्रतिष्ठित करायी गयी जिसमें मूर्तिकार कैल्हण का नाम अंकित है।

अहार संग्रहालय में संगृहीत आदिनाथ प्रतिमा लेख में संवत् 1228 (सन् 1171) के साथ गोलापूर्व साहु पापे भार्या मल्हा सुत वील्हे, छीलु, साल्हु के साथ सत्सल भार्या मलम पुत्र माल्हु वालु के नाम अंकित है।

वहीं शांतिनाथ प्रतिमा लेख (जिनका कटि से ऊपर का भाग नहीं है) संवत् 1237 (सन् 1180) के साथ साहु राल्हण का ना अंकित है।

अहार में शांतिनाथ की प्रतिमा संवत 1237 (सन् 1180) में प्रतिष्ठित की गयी।

मदनवर्मा एक प्रतापी राजा था। उसके राज्य में जैनों का बाहुल्य था। उसके द्वारा मदनेशपुर (अहार), एवं मदनपुर बसाया गया।

कांलिजर प्रबोध मे डॉ. हरिओम तत्सत् बह्मशुक्ल पृष्ठ 48 पर तथा बुन्देलखण्ड का वृहत इतिहास में डॉ. काशी प्रसाद त्रिपाठी पृष्ठ 19 में उल्लेख करते हैं कि मदनवर्मा के द्वारा खजुराहो बानपुर, दुधही, चाँदपुर, अहार, नवागढ़ एवं सौरों में जिनालयों का निर्माण किया गया।

मदनवर्मन के शासनकाल में जैनधर्म का विशेष प्रचार प्रसार हुआ। इनके जैन धर्मानुयायी एवं जैन साधुओं से प्रभावित होने के कारण प्रमाण प्राप्त होते हैं। इनके परिषद् में अनेक जैनमंत्री एवं कोषाधिपति थे।

चंदेलशासकों में यशोवर्मन-वैष्णव थे जो अंत में जैन मुनि गोल्लाचार्य हुये। धंगदेव-शैव एवं मदनवर्मन जैन धर्मानुयायी थे।

मदनवर्मन स्वयं जैन धर्मानुयायी थे परन्तु अन्य धर्मो से उनका कोई विद्वेष नहीं था।

चंदेलशासक परमर्द्धिदेव- स्वयं तो ब्राह्मण धर्म के समर्थक थे लेकिन उनके राज्य में सबको अपने धर्मपालन की स्वतंत्रता थी। ब्राह्मण धर्म के साथ जैनधर्म का भी प्रचार था। अनेक जैन मंदिरों एवं मूर्तियों का निर्माण एवं प्रतिष्ठा भी इनके काल में हुई। शासकीय पदों पर नियुक्ति में धर्म का प्रतिबन्ध नहीं था इनके मंत्री माहिल जैन थे।[12]

परमर्द्धिदेव ने अजयगढ़ में तालाब और मंदिरों की निर्माण कराया। संवत् 1224 (सन् 1167) में महोबा में जैन मूर्ति की प्रतिष्ठा करायी। संवत् 1237 (सन् 1180) में आहार (मदनेशपुर) में मूलनायक शांतिनाथ भगवान की 21 फीट ऊँची प्रतिमा की प्रतिष्ठा करायी जिसमें नंदपुर (वर्तमान नवागढ़) में जिनालय बनने का उल्लेख हैं।[13] चंदेलशासक मदनवर्मन

द्वारा स्थापित जैन तीर्थ क्षेत्र मदनपुर, मदनेशपुर (अहार) में अधिकांश मंदिर गोलापूर्व अन्वय के श्रेष्ठियों द्वारा निर्मित कराये गये हैं।[14] यही नहीं प्राचीन क्षेत्र सोनागिर, द्रोणगिर, नवागढ़, नैनागिर, चंदेरी, कुंडलपुर, महोबा, पपौरा, पटेरिया, क्षेत्रपाल (ललितपुर) फलहोड़ी बड़ागाँव दरगुंवा, कारीटोरन, गिरार आदि के कई मंदिरों में उनके द्वारा विराजित मूर्तियाँ प्राप्त हैं।

नवागढ़ की बगाजटोरिया पर मदनवर्मन की नखशिख अलंकृत एक मूर्ति विराजमान हैं। जो अपनी यशोगाथा का साक्ष्य है।

प्राचीन काल से आज तक निर्मित्त जिनमंदिर प्रत्येक गाँव एवं नगर में है। ऐसा कोई गाँव या नगर नहीं होगा जहाँ जैन धर्मानुयायी न रहते हों और उनके द्वारा जैन मंदिर निर्मित्त कराये गये हो।[15]

सन्दर्भ ग्रंथ सूचीः-

1. बुन्देलखंड समग्र सम्पादक- श्री हरिविष्णु अवस्थी, पृ. 73
2. बुन्देलखंड का इतिहास एवं पुरातत्व- प्रो. दिगम्बर जैन, पृ. 155
3. बुन्देलखंड का पुरातत्त्व- डॉ. एस.डी. द्विवेदी, पृ. 94
4. बुन्देलखंड समग्र- सम्पादक श्री हरिविष्णु अवस्थी, पृ. 73
5. बुन्देलखंड का पुरातत्व- डॉ. एस.डी. द्विवेदी, पृ. 35 एवं 53
6. एपिग्राफिका इंडिका भाग-1 पृ. 135 एवं 136
7. एपिग्राफिका इंडिका भाग- 1 पृ. 135 एवं 136
8. दा अर्ली रूलर्स ऑफ खजुराहो- शिशिर कुमार मित्र, पृष्ठ 205-206
9. देवगढ़ की जैन कला एक सांस्कृतिक अध्ययन- डॉ. भागचन्द्र जैन, भागेन्दु, पृ. 137
10. देवगढ़ की जैनकला एक सांस्कृति अध्ययन-डॉ. भागचन्द्र जैन, भागेन्दु, पृ. 277
11. गोलापूर्व जैन समाज का भारतीय संस्कृति को अवदान, सम्पादक- प्रो. सुरेन्द्र जैन, पृ. 47
12. (क) ऑर्कियोलॉजीकल सर्वे रिर्पोट भाग-7, पृष्ठ 14
    (ख) चंदेलकालीन बुन्देलखंड का इतिहास- डॉ. अयोध्याप्रसाद पांडेय, पृ. 104
13. (क) अहार के अभिलेख- डॉ. कस्तूरचन्द्र सुमन
    (ख) गोलापूर्व डायरेक्ट्री- पं. मोहनलाल काव्यतीर्थ
    (ग) प्राचीनाभिलेखा- डॉ. भागचन्द्र भागेन्दु
14. अतिशय क्षेत्र अहार के प्राचीन शिलालेख- पं. गोविन्ददास कोठिया
15. फलहोड़ी बड़ागांव वैभव स्मारिका, प्राचीनतम जैनतीर्थ फलहोड़ी बड़ागांव की पड़ताल- श्री हरिविष्णु अवस्थी, पृ. 55

शोधछात्रा- एकलव्य विश्वविद्यालय दमोह (म.प्र.)

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता

अगस्त 2022

रंग बिरंगा देख तिरंगा

प्रथम-

राष्ट्र विजय का घोतक झंडा
नील गगन में लहराये
बलिदानी जन लाज बचाने
ध्वज पर जान लुटायें
वीर सिपाही भारत माँ पर प्राण लुटायें चंगा
हर मन हर्षित होता है, रंग बिरंगा देख तिरंगा

श्रीमति रजनी जैन, राहतगढ़

द्वितीय-

धर्म हमारा कर्म हमारा,
हर जन मन को करता चंगा
धैर्य और उत्साह बढ़े नित
रंग बिरंगा देख तिरंगा

श्रीमति अनीता जैन, इंदौर

तृतीय-

करूणा प्रेम मधुर रस घोले
धवल रंग मय झंडा
उत्साह बढ़ाये केशरिया रंग हरे रंग का फंडा
प्रिय अद्‌भुत लगता है
वरदायी शुभ संगा
बलिदानों को मान बढ़े नित
रंग बिरंगा देख तिरंगा

श्रीमती चंचल जैन, शिवपुरी

वर्ग पहेली क्र. 273
जुलाई 2022 के विजेता

प्रथम : श्रीमती इन्द्रा जैन, इंदौर
द्वितीय : श्रीमती सुधा जैन, नागपुर
तृतीय : अखिलेश जैन, अहमदाबाद

माथा पच्ची

निम्न अक्रमबद्ध वर्णों कोक्रमबद्ध बनाकर रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए।

1. आ द् अ द्द् अ द्ध् ण् आ अ ल् अ र् ष् द
2. ई ओ अ स् आ क् अ र् अ प् र् व् न् त् त् र् सं
3. क् इ ओ त् इ आ य् ग् त् इ आ इ न् द् ए द् श प्र
4. स् अ र् अ आ आ ट् आ स् अ व् इ र् अ उ र् प् अ व् द् य् ग वि
5. अ स् क् आ र् अ आ स् ग् अ र् सं

परिणाम :
अगस्त 2022: (1) संस्कार सागर (2) जैन संदेश (3) कुन्दकुन्द वाणी (4) अर्हत वचन (5) शोधादर्श

पुराण प्रेरणा

निर्जरा की महिमा

रत्नत्रयेण संबद्धकर्मणां निर्जरा भवेत।
अग्निर्दाह्यं किमाध्मातो निःशेषं साडवशेषयेत् ।।
सविपाक विपाकेन निर्जरा द्विविद्या भवेत्।
आद्या साधारणा जन्तोरन्या साध्या व्रतादिभिः ।।
अनास्त्रवात्क्षयादात्मन्केवल्यसि च कर्मणाम्।
आस्त्रवे निर्गतेऽशेषे धारा बन्धे पयः कुतः ।।

रत्नत्रय के निमित्त से पहले बंधे हुये कर्मों की निर्जरा होती है। जिस तरह चेतन की गई आग द्वारा दाह्य वस्तु निःशेष जल जाती है वैसे ही निर्जरा द्वारा पहले बंधे हुये सब कर्म नष्ट हो जाते हैं निर्जरा के दो भेद हैं। एक सविपाक और दूसरी अविपाक इनमें पहती तो सर्वसाधारण के होती है। और दूसरी व्रतधारी मुनियों के होती है और यही वास्तव में काम की है। हे आत्मन् संवर हो जाने पर जो कर्मों की निर्जरा होती है उससे तुम्हारे केवली हो जाने में जरा भी दे नहीं रह जाती। क्योंकि जिस नाव में पानी आने का रास्ता बन्द कर दिया गया और पहले का पानी उलीच दिया गया उसमें फिर न तो पानी आ सकता है और न पानी रह सकता है।

पथरीधन चूर्ण

पथरी की अचूक दवा

सेवन विधि-

1) यह चूर्ण सुबह भोजन के बीच में लिया जायें।
2) पानी दिनभर अधिक मात्रा में लें, पेट खाली न हो।
3) प्रथम खुराक लेने के बाद, दूसरी खुराक एक दिन छोड़कर ही ली जाये।

नोट- यह औषधि निःशुल्क दी जाती है। ठीक होने पर औषधि निर्माण हेतु सहयोग कर सकते हैं।

प्राप्ति स्थान -**ब्र. जिनेश मलैया, संस्कार सागर**
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मन्दिर, बॉम्बेहास्पिटल के पास, इन्दौर (म.प्र.)
फोनः 0731-4003506 मो.:8989505108, 6232967108

दवा देने के विभिन्न स्थानों पर केन्द्र है आप भी अपने यहां केन्द्र चाहते हैं तो सम्पर्क करें

केरियर

अकाउंटिंग और ऑडिटिंग फील्ड

अकाउंटिंग फीर्ल्ड के अंतर्गत आपको किसी संस्था में रोजाना होने वाले लेन-देन का हिसाब रखना होता है और ऑडिटिंग के अंतर्गत आपको संस्था की अकाउंटिंग बुक्स की समीक्षा करनी होती है, अधिकतर कंपनी अपने यहाँ अकाउंटिंग के लिये जॉब निकालती है, परन्तु अकाउंटिंग के कार्य कि जॉब किसी अन्य व्यक्ति या संस्था से करवाते हैं , उसे ही ऑडिटिंग कहा जाता है, भारत एकाउंटेंट का पद अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है।

शैक्षिक योग्यता: 12वीं की परीक्षा उत्तीर्ण होने के बाद बैचलर या डिप्लोमा कोर्स में प्रवेश कर सकते हैं।

ऑडिटिंग में जरूरी सर्टिफिकेशन: 1. आई सी ए आई सर्टिफिकेशन (भारत): 12वीं की परीक्षा के बाद आप चार्टर्ड अकाउंटेट बनने के लिये कॉमन प्रोफिशिएंसी टेस्ट (सीपीटी) दे सकते हैं, इस परीक्षा का आयोजन वर्ष में दो बार किया जाता है, पहली बार यह जून महीनें में और दूसरी बार दिसंबर महीनें में आयोजित की जाती है, कॉमर्स संकाय से स्नातक उत्तीर्ण छात्र 55 फीसदी तथा साइंस व आर्ट्स ग्रेजुएट के छात्रों को 60 फीसदी अंक सीपीटी परीक्षा में सम्मिलित होने के लिये अनिवार्य है।

अकाउंटेंसी के प्रमुख सर्टिफिकेट:

1. एसोसिएशसन ऑफ चार्ज सर्टिफाइड अकाउंटेट्स: अकाउंटेंसी के क्षेत्र में प्रवेश के लिये एसीसीए सर्टिफिकेट को पासपोर्ट माना जाता है, जिसके माध्यम से आप इस क्षेत्र में आसानी से प्रवेश प्राप्त कर सकते हैं, इस सर्टिफिकेट के द्वारा छात्र अकाउंटिंग और फाइनेंस मैनेजर के रूप में कार्य कर सकते हैं।

2. सर्टिफाइड मैनेजमेंट अकाउंटेट (सीएमए): सीएमए सर्टिफिकेट विश्व स्तर पर मान्य है, इसको करने के बाद आप किसी मल्टीनेशनल कंपनी में जॉब प्राप्त कर सकते हैं, इसके माध्यम से आप किसी बहुराष्ट्रीय कंपनी के वित्तीय रिकॉर्ड को चेक कर सकते हैं , इस सर्टिफिकेट को इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट अकाउंटेंट द्वारा सीएमए (अमेरिका) के लिये जारी किया जाता है, इसकी अवधि छः महीनों की होती है भारत के लिये यह सर्टिफिकेट इंस्टीट्यूट ऑफ कॉस्ट अकाउंटेट्स ऑफ इंडिया जारी करता है, इस कोर्स की अवधि तीन से लेकर चार साल की होती है।

प्राप्त पद: फाइनेंस मैनेजर, अकाउंटिंग मैनेजर, बजटिंग मैनेजर, इंटरनल ऑडिटर आदि।

वेतन: इस क्षेत्र में अच्छी डिग्री प्राप्त करने के बाद अच्छा अनुभव भी आवश्यक है, इसके बाद आपके पास जॉब के अनेक अवसर प्राप्त होने लगेंगे, भारत में एक ऑडिटर का वेतन लगभग तीन से चार लाख रूपये प्रतिवर्ष हैं, अकाउंटेंट के रूप में आप दो से साढ़े तीन लाख रूपये प्रतिवर्ष आसानी से प्राप्त कर सकते हैं, यह वेतन पद और अनुभव के आधार पर बढ़ता रहता है।

■ 1 जुलाई

- ईडी ने दिल्ली के मंत्री सत्येन्द्र जैन के खिलाफ दर्ज केस में उद्योगपति जैन और अंकुश जैन को गिरफ्तार किया।

- 8 हजार रूपये की रिश्वत मांगने वाली महिला डॉ. संगीता रंगे हाथ पकड़ी गई।

- थलसेना और नौ सेना ने अग्निवीरों की भर्ती प्रक्रिया शुरु की।

■ 2 जुलाई

- उदयपुरः कन्हैयालाल टेलर के हत्यारों को उदयपुर के वकीलों ने पीटा।

- भारत इंग्लैण्ड टेस्ट मैच में बुमराह ने एक ओवर में 35 रन बनाकर 145 साल का रिकार्ड तोड़ा।

- पाक जनरलों को प्रॉपर्टी डीलर बताया तो हमला हुआ।

■ 3 जुलाई

- महाराष्ट्र विधानसभा के अध्यक्ष राहुल नार्वेकर चुने गये।

- पटनाः प्रणासी रेलवे इंजन में आग लगी कोई जनहानि नहीं हुई।

- गोधराकांड के आरोपी रफीक भट्ट को जिला न्यायालय ने आजीवन कारावास की सजा सुनाई।

■ 4 जुलाई

- महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे का एक विश्वासमत पारित हुआ पक्ष में 164 और विरोध में 99वें मत पड़े।

- हिमाचल के कुल्लु में 250 मीटर गहरी खाई में बस गिरि 13 लोगों की मौत हुई दो गंभीर घायल हुये।

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आंधप्रदेश के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पसाला कृष्ण की पुत्री पसाला कृष्ण भारती को नमन किया और आशीर्वाद लिया।

■ 5 जुलाई

- अमेरिका में सूखा पढ़ने से स्थिति बेहाल बनी तथा इटली सूखा पड़ने के कारण इमरजेंसी लागू हुई।

- हुगली कर्नाटक के एक होटल में वास्तु एक्सपर्ट चन्द्रशेखर गुरुजी की छुरा घोंपकर हत्या हुई।

- सुप्रीम कोर्ट के 15 पूर्व जजों सहित एक सौ सत्रह हस्तियों ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट ने लक्ष्मण रेखा को लांघा।

■ 6 जुलाई

- धर्मस्थल मंदिर के प्रशासक वीरेन्द्र हेगड़े और प्रसिद्ध पटकथा लेखक एवं निर्देशक वी विजयेन्द्र प्रसाद को भी संसद

के उच्च सदन के लिये मनोनित किया गया।

केन्द्रीय अल्पसंख्यक मामलों के मंत्री मुख्तार अब्बास नकवी के कैबिनेट से इस्तीफा दिया।

- संविधान के खिलाफ कथिक टिप्पणी को लेकर केरल के मंत्री साजी चेरियन ने इस्तीफे की घोषणा कर दी।

■ 7 जुलाई

- पंजाब के मुख्यमंत्री भगवतमान चंडीगढ़ सेक्टर 2 स्थित अपने आवास में रीति रिवाज से डॉ. गुरप्रीत कौर के साथ विवाह के बंधन से बंध गये।

- नीति आयोग के पूर्व सीईओ अमिताभ कांत जी-20 के नये शेरपा होंगे।

- केरलः मलयालम अभिनेता श्रीजीत रवि को यहां दो नाबालिक लड़कियों के सामने अश्लील हरकत करने के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया।

■ 8 जुलाई

- जापान के पूर्व प्रधानमंत्री शिंजो आबे की हत्या तथा कथित पत्रकार यापागामी तेत्सुपा ने गोली मारकर की।

- अमरनाथ गुफा के पास बादल फटने से 13 लोगो की मौत हुई।

- हिंदू संतों को हेट मोंगर्स कहने वाले जुबैर अहमद को सुप्रीम कोर्ट जमानत नहीं दी।

■ 9 जुलाई

- कोलंबो- प्रदर्शनकारी राष्ट्रपति भवन में घुसे श्रीलंका के राष्ट्रपति गोटबाया राजपक्षे भागे।

- सपा नेता व संरक्षक मुलायम सिंह यादव की पत्नी साधना गुप्ता का निधन हुआ।

- 7 लाख 80000 लोग सउदी अरब हज पर पहुँचे।

■ 10 जुलाई

- महाठग सुकेश चंद्रशेखर की खातिर करने वाले तिहाड़ जेल के 81 कर्मियों पर मुकदमा दर्ज हुआ।

- नक्सली एरिया कमांडर सहित दो लोगों को वीडियो कोड़ा और पीली कुमारी (उ.प्र.) पुलिस को गिरफ्तार किया।

- ब्रिटेन के प्रधानमंत्री जान बोरिस एक ओर स्कैन्डर में फंसे वाणिज्य मंत्री पैरी मॉरडोन्ट ने दावेदारी जताई।

■ 11 जुलाई

- असाम की स्नेहा पारीक जेईई में टॉपर्स बनी।

- शराब कारोबारी विजय माल्या को अदालत अवमानन मामले 4 माह की जेल ओर 4 करोड़ डॉलर समेत जमा करने की सजा सुप्रीम कोर्ट ने सुनाई।

- केरल के उच्च शिक्षा मंत्री आर बिन्दू ने किडनी रोगी स्वर्ण कंगन इलाज के लिये दिये।

■ 12 जुलाई

- नागपुरः जिला मुख्यालय के पास ब्राह्मण मारी नोल में गस गिरने से 6 लोगों की मृत्यु हुई।

- दुबई भाग रहे श्री लंका के राष्ट्रपति गोटबाया राजपक्षे को एयनपोर्ट पर रोका।

संस्कार सागर सितम्बर 2022

- उदयपुरः कन्हैयालाल हत्याकांड की जांच में एनआईए की टीम ने अंजूमन सदर सहित 4 लोगों को गिरफ्तार किया। इनके भड़काऊ पोस्ट पर शिकंजा कसा।

■ 13 जुलाई

- इंदिरा गांधी एयरपोर्ट पर सीमा शुल्क अधिकारियों ने 45 पिस्टल जब्त कर जगजीत और जसविंदर कौर को गिरफ्तार किया।

-श्रीलंका के राष्ट्रपति गोटबाया राजपक्षे मालदीव भागे। प्रधानमंत्री विक्रम सिंधे कार्यवाहक राष्ट्रपति बने।

-प्रयागराज हाईकोर्ट ने ताजमहल के तलघर में बने 20 कमरों को खोलने की याचिका खारिज की।

■ 14 जुलाई

- मानव तस्करी मामले पटियाला सेशन कोर्ट ने दो साल की सजा बरकरार रखी।

- श्रीलंका के राष्ट्रपति ने सिंगापुर से अपना इस्तीफा भेजा।

- रूस ने यूक्रेन के विन्नित्सिया पर मिसाइल हमला किया जिससे 12 लोग मारे गये।

■ 15 जुलाई

- दिल्लीः निर्माणाधीन गोदाम की 100 फुट की दीवार गिरने से 5 मजदूरों की मौत हुई कई दबे होने की आशंका बनी।

- कर्नाटक के 80 जिलों में 13 जिले बाढ़ से घिरे।

- ए.के. 47 बरामदगी मामले बिहार के विधायक अनंत संह की सदस्यता समाप्त हुई।

■ 16 जुलाई

- एनडीए ने बंगाल के राज्यपाल जगदीप धनखड़ को उपराष्ट्रपति के पद पर उम्मीदवार बनाया।

- उधमपुरः भारत तिब्बत सीमा बल के जवान भूपेन्द्र सिंह ने अपने तीन सार्थियों को गोली मारी फिर खुद को गोली मारी।

- छत्तीसगढ़ में सिंहदेव ने पंचायम मंत्री का पद छोड़ा।

■ 17 जुलाई

- ढाका- बांग्लादेश में पैगम्बर सोशल मीडिया की टिप्पणी के बाद हिन्दुओं को घरों में कट्टर पंथियों ने तोड़फोड़ आगजनी की।

- देश में कोबिड़ रोधी टीके की 2 करोड़ डोज पूरी हुई पी.एम. मोदी ने इसे गर्व का क्षण बताया।

- शराब पीकर गाड़ी चलाने पर पंजाब में एक यूनिट ब्लर्ड जुर्माना संभव।

■ 18 जुलाई

- खलघाट नर्मदा नदी में बस गिरने से 12 लोगो की मौत हुई।

- राज्यसभा में पीयूष गोयल सदन के नेता नियुक्त हुये।

-राष्ट्रपति चुनाव में मतदान के दौरान क्रॉस वोटिंग जमकर हुई।

■ 19 जुलाई

- शिवसेना के शिंदे गुट को लोकसभा में राहुल शेवाले के दल नेता की मान्यता

मिली।

- ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ऋषि सुनक भारतीय मूल के बने।

-अरूणाचल में चीन की सीमा के पास सड़क निर्माण में लगे 19 मजदूरों की डूबने से मौत हुई।

■ **20 जुलाई**

- श्रीलंगा की ससंद ने पूर्व प्रधानमंत्री रानिल विक्रमसिंधे को बहुमत से राष्ट्रपति चुन लिया।

- गढ़चिरोलीः जिले की भामरागढ़ तहसील के मड़बेली गांव के सरपंच (मन्ने राजाराम) की नक्सलियों ने हत्या कर दी।

- बगदादः आई एस आतंकियों ने 6 पुलिस अधिकारी मारे तथा 6 घायल हुये।

■ **21 जुलाई**

- राष्ट्रपति पद के चुनाव की मतगणना हुई। श्रीमती द्रोपदी मर्मू ने चुनाव जीता।

- इस्लामाबादः रहीमयार खान से 65 किमी. दूर सिंधू नदी में नाव डूबने से 50 लोगों की मौत हुई। नाव में 100 से ज्यादा लोग सवार थे।

- राजद विधायक अनंत सिंह को 10 साल की सजा सुनाई गई।

■ **22 जुलाई**

- विज्ञानवादी लेखक नंदाखरे का निधन हुआ।

- श्रीलंका के प्रधानमंत्री दिनेश गुणवर्धन का चुनाव हुआ।

- विपक्ष के सांसदों ने महात्मा गांधी की मूर्ति के पास महंगाई और आवश्यक वस्तुओं पर लगने वाले जीएसटी का विरोध किया।

■ **23 जुलाई**

- लंदनः फ्रांस जाने वाले मार्ग में 1000 वाहन लम्बे जाम में फंसे।

- हाथरसः एक डम्पर ने राह चलते 8 काबड़ियों को कुचला 6 की मौत हुई 2 गंभीर घायल हुये।

- विशेष अदालत ने पश्चिम बंगाल के उद्योग मंत्री पार्थ चटर्जी को शिक्षक भर्ती घोटाले में ईडीने गिरफ्तार किया।

■ **24 जुलाई**

- एल.ए.सी पर चीन ने उकसावे वाली हरकत चीन के विमान 10 किमी. तक घुसे।

- फिलीपीन के विश्वविद्यालय में फायरिंग हुई 5 लोगों की मौत हुई।

- लखनऊः उत्तरप्रदेश कांग्रेस कमेटी के दफ्तर के एक कमरे में से भाजपा के झंडे बरामद हुये।

■ **25 जुलाई**

- दुर्पदी मुर्मू ने राष्ट्रपति की शपथ ली और कहा सबको जोहार में गरीब घर में पैदा हुई और राष्ट्रपति बनी।

- करौली (राजस्थान) नगर की एक महिला ने एक साथ 5 बच्चो को जन्म दिया।

- मंहगाई विषय पर हंगामा करने वाले 4 कांग्रेसी सांसदों को निलंबित किया गया।

■ **26 जुलाई**

- नीरज चोपड़ा राष्ट्रमंडल खेल से

बाहर हुये क्योंकि उनकी मांसपेशीय में खिचाव से दर्द था।

- कांग्रेसी अध्यक्ष सोनिया गांधी से नेशनल हेराल्ड मनी लांडरिंग मामले दूसरे दिन 6 घंटे ईडी ने पूंछतांछ की।

-5 लाख रूपये का ईनामी नक्सली मुठभेड़ में मारा गया दंतेवाड़ा (छत्तीसगढ़) का यह दुर्दंत अपराधी था।

■ **27 जुलाई**

- चीन के बुहान शहर में 4 संक्रमित मिले 10 लाख की आबादी वाले शहर में लॉकडाउन लगा।

- 5 जी स्पेक्ट्रम की बोली का नौंवा चरण पूरा हुआ कुल बोली 1.49 लाख करोड़ की हुई।

- दक्षिण मठों पर आत्मघाती हमले की साजिश नाकाम हुई अलकायदा आईएस से जुड़े 4 लोग तमिलनाडु व कर्नाटक से गिरफ्तार हुये।

■ **28 जुलाई**

- राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू को कॉंग्रेस नेता अधीर रंजन चौधरी की एक टिप्पणी के लेकर सदन में जमकर हंगामा हुआ।

- पंश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने शिक्षक भर्ती घोटाले मामले में गिरफ्तार पार्थ चटर्जी को मंत्रीमंडल से हटाया।

- ईरान समर्थक सरकार विरोध मौलवी गुटके कार्यकर्ता इराक के संसद में घुसे।

■ **29 जुलाई**

- कांग्रेस नेता अधीर रंजन चौधरी ने पत्र लिखकर राष्ट्रपति से मांफी मांगी।

- ढांकाः बांग्लादेश के चटगांव में एक बस ट्रेन से टकराने के बाद 11 लोगों की मौत हुई।

- रूस की राजधानी मास्को छात्रावास में आग लगने से 8 लोग की मौत हुई 3 झुलसे।

■ **30 जुलाई**

- बैंगलोरः भाजपा कार्यकर्ता प्रवीण कुमार ने हारू हत्या के प्रति रोष प्रगट करते ए.बी.बी.पी कार्यकर्त्ता गृहमंत्री के बंगले में घुसे।

- पंजाब के स्वास्थ्य मंत्री के चेतन सिंह के बर्ताव से व्यथित होकर बाबा फरीद यूनिवर्सिटी के कुलपति डॉ. राज बहादुर ने इस्तीफा दिया।

- कामन वेल्थ गेम्स से गुरु राजा पुजारी ने वेट लिफि टिंग में कांस्य पदक जीता।

■ **31 जुलाई**

- शिवसेना के प्रवक्ता सांसद संजय राउत को ई.डी ने हिरासत में लिया।

- भीलवाड़ाः लोकसभा सदस्य सुभाष बहाडिया स्कूटर से गिरने पर घायल हुये।

- कॉमनवेल्थ गेम्स में भारत ने वेट लिफ्टिंग में जेरमी लाल रिंुगा ने स्वर्ण पदक जीता।

इसे भी जानिये

स्वतंत्रता साहित्य

साहित्य	सन्	लेखक
यूनाईटेड इंडियन पेट्रियाटिक एसोसिएसन	1888	सर सैयद अहमद खाँ
रामकृष्ण मिशन	1896	स्वामी विवेकानंद
सुर्वेन्ट्स ऑफ इंडिया सोसायटी	1905	गोपाल कृष्ण गोखले
मुस्लिम लीग	1906	सलीमुल्ला एवं आगा खाँ
गदर पार्टी	1913	हरदयाल, काशीराम व सोहन सिंह
होमरूल लीग	1916	बाल गंगाधर तिलक
वीमेन्स इंडिया एसोसिएशन	1917	लेडी सदाशिव अय्यर
विश्व भारती	1918	रवीन्द्रनाथ टैगोर
कम्यूनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया	1920	एम.एन.राय (ताशकंद में)
सर्वेट्स ऑफ पीपुल सोसाइटी	1920	लाजपत राय
अवध किसान सभा	1920	नेहरू, रामचन्द्र गोरीशंकर
अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस	1920	एन.एम. जोशी
स्वराज पार्टी	1923	मोतीलाल नेहरू व चितरंजन दारन
अखिल भारतीय साम्यवादी दल	1924	सत्यभक्त
राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ	1925	के.बी. हेडगेवार
ऑल इंडिया बीमेंस कांफ्रेस	1927	लेडी सदाशिव अय्यर
हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिक पार्टी	1928	चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह
कांग्रेस समाजवादी दल	1934	नरेन्द्र देव एवं जयप्रकाश नारायण
अखिल भारतीय किसान सभा	1936	एन.जी. रंगा व सहजानंद
अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद	1936	मीनू मसारी, अशोक मेहता व डॉं अशरफ
खुदाई खिदमगार	1937	खान अब्दुल गपन्फार खान
फारवर्ड ब्लाक	1939	सुभाषचन्द्र बोस
भारतीय बोतशेविक दल	1939	एन.डी. मजूमदार
रेडिकल डेमोक्रेटिक दल	1940	एम.एन. राय
भारतीय बोल्शेविक लेनिन दल	1941	अजीत राय एवं इन्द्र सेन
क्रांतिकारी समाजवादी दल	1942	सौप्येन्द्र नाथ टैगोर
आजाद हिन्द फौज	1943	सुभाषचन्द्र बोस

दिशा बोध

क्षमा

1. धरती उन लोगों को भी आश्रय देती है, जो उसे खोदते हैं। इसी तरह तुम भी उन लोगों की बातें सहन करो, जो तुम्हें सताते हैं; क्योंकि बड़प्पन इसी में है।
2. दूसरे लोग तुम्हें हानि पहुँचाएँ, उसके लिए तुम क्षमा कर दो और यदि तुम उसे भुला सको तो और भी अच्छा है।
3. अतिथि-सत्कार से विमुख होना ही सबसे बड़ी दरिद्रता है और मूर्खो की असभ्यता को सह लेना ही सबसे बड़ी वीरता है।
4. यदि तुम सदा ही गौरवमय बनना चाहते हो, तो सबके प्रति क्षमामय व्यवहार करो।
5. जो पीड़ा देने वालों क़ो बदले में पीड़ा देते हैं, बुद्धिमान लोग उनको सम्मान नहीं देते; किन्तु जो अपने शत्रुओं को क्षमा कर देते हैं, वे स्वर्ण के समान बहुमूल्य समझे जाते हैं।
6. बदला लेने का आनन्द तो एक ही दिन होता है, किन्तु क्षमा करने वाले का गौरव सदा स्थिर रहता है।
7. क्षति चाहे कितनी ही बड़ी क्यों न उठानी पड़ी हो, परन्तु बड़प्पन इसी में हैं, कि मनुष्य उसे मन में भी न लावे और बदला लेने के विचार से दूर रहें।
8. घमंड में चूर होकर जिन्होंने तुम्हें हानि पहुँचाई है, उन्हें अपने उच्च व्यवहार से जीत लो।
9. संसार-त्यागी पुरुषों से भी बढ़कर सन्त वह है, जो अपनी निन्दा करने वालों की कटु वाणी को सहन कर लेता है।
10. उपवास करके तपश्चर्या करने वाले निस्सन्देह महान् हैं, पर उनका स्थान लोगों के पश्चात् ही है, जो अपनी निन्दा करने वालों को क्षमा कर देते हैं।

नियमसार में प्रतिपादित परम समाधि के सूत्र

❋ ब्र. सविता दीदी, पिपरई ❋

समाधि योग की पूर्णता है। अभेद रत्नत्रय के माध्यम से जब परम समाधि की प्राप्ति हो जाती है तो मुक्ति पथ का साधक अपनी साधना का अंतिम लक्ष्य प्राप्त कर लेता है आचार्य कुन्दकुन्द देव ने नियमसार ग्रंथ में परम समाधि को परिभाषित करते हुये कहा है। वचन उच्चारण का परित्याग करके वीतराग भाव से जो आत्म ध्यान किया जाता है उस परम समाधि कहते हैं। समाधि का लक्षण करते हुये पूज्य श्री ने कहा है संयम नियम और तप के द्वारा जो धर्म और शुक्ल ध्यान की साधना के माध्यम से आत्मा का ध्यान किया जाता है उसे परम समधि कहते हैं ।

समाधि और समता का धनिष्ठ संबंध है । समता के अभाव में वनवास करना, कायक्लेश रखना, विचित्र उपवास करना, अध्ययन करना मौन आदि प्रवृत्ति करना सभी व्यर्थ होता है। द्रव्यलिंगी मुनि वहीं कहलाता है जो परम समता भाव से पूर्ण होता है तथा जिसने वनवास में रहकर वर्षा ऋतु वृक्ष के नीचे गुजारी हो तथा ग्रीष्म ऋतु में प्रचण्ड सूर्य की किरणों से तपी हुई पर्वत की शिला पर बैठकर साधना करने वाले तथा हेमन्त ऋतु में रात्रि में कठोर ठण्ड के बीच साधना करने वाला दिगम्बर साधु यदि समता भाव से रहित होता है तो वह साधु अपनी साधना को व्यर्थ कर देता है।

परम समाधि को वह प्राप्त नहीं कर पाता है जो समता से शून्य होता समता भाव समाधि का प्राण है। समता के बिना समाधि की कल्पना करना ही व्यर्थ सिद्ध होती है। समता को प्राप्त करने के उपाय बताते हुये आचार्य कुन्दकुन्द देव ने कहा हैं - 1. सभी सावद्य योग से विरत होना चाहिये। 2. इन्द्रियों को निरोधित करना चाहिये 3. तीन गुप्तियों का पालन करना चाहिये, 4. सभी त्रस और स्थावर जीवों में समता का भाव होना चाहिये, 5. संयम नियम और तप में संलग्न होना चाहिये, 6. रागद्वेष विकृति की उत्पत्ति नहीं होना चाहिये 7. आर्त्त रौद्र ध्यान की सदैव वर्जना होना चाहिये 8. पाप पुण्य के भाव का त्याग होना चाहिये। 9. हास्य आदि नौ कषायों का त्यागी होना चाहिये, 10. धर्म अथवा शुक्ल ध्यान का ध्याता होना चाहिये।

उपर्युक्त दस शर्तों का पालन करने वाला ही समता भाव मय सामायिक को स्थाई रूप से प्राप्त करता है जो इन दस शर्तों का पालन नहीं कर पाता है वह समता भाव से वंचित रह जाता है। ऐसा व्यक्ति सामायिक में मात्र बाहरी आशन और प्रक्रिया को ही करता है सामायिक के यथार्थ लक्ष्य का प्राप्त नहीं कर पाता है और सुख शांति तथा आनंद से कोसों दूर रहता है। अतः समाधि को प्राप्त करने के लिये समता की उपासना अवश्य करना चाहिये।

आचार्य कुन्दकुन्द की दृष्टि में निश्चय प्रायश्चित

❋ एलक सिद्धांतसागर महाराज ❋

विश्व के प्रत्येक धर्म में प्रायश्चित का प्रावधान है। प्रायश्चित शब्द की उत्पत्ति प्रायः और चित्त शब्द से हुई है। प्रायः का अर्थ होता है पूर्ण रूपेण ज्ञान में लीन होना या निर्विकार चेतन में लीन होने का नाम प्रायश्चित है। जैन आचार्यों ने तप और ध्यान को ही प्रायश्चित कहा है। वैसे वैदिक संस्कृति में दान देकर के प्रायश्चित का विधान उपलब्ध होता है और जैन दर्शन में प्रतिक्रमण आलोचना और दोनों के मिश्र रूप तथा परिहार विवेक और त्याग अर्थात् व्युत्सर्ग स्वरूप प्रायश्चित का विधान तत्वार्थ सूत्र में उपलब्ध है।

आचार्य कुन्दकुन्द देव ने नियमसार ग्रंथ में प्रायश्चित की परिभाषा सुनिश्चित करते हुये कहा है **व्रत समिति शील संयम के परिणाम एवं इन्द्रियों के निग्रह भाव से ही प्रायश्चित पूर्ण होता है।** ऐसे प्रायश्चित को निरन्तर धारण करना चाहिये। क्रोध आदि स्वकीय भावों को अर्थात् अपने भावों को नष्ट करने की भावना रहना और आत्मगुणों का चिंतन करना ही निश्चय से प्रायश्चित कहा गया है।

क्रोध को क्षमा से मान को मार्दव से और मायाचारी को आर्जव से और लोभ को संतोष से जीतने पर ही प्रायश्चित साकार होता है अनन्त धर्म युक्त आत्मा का उत्कृष्ट बोध या ज्ञान चित्त कहा जाता है और जो मुनि हमेशा आत्मा को धारण करता है यही निश्चय से प्रायश्चित है।

प्रायश्चित स्वरूप - आचार्य कुन्दकुन्द देव कहते हैं कि बहुत कहने से कोई लाभ नहीं है क्योंकि अनेक कर्मों को नष्ट करने का हेतु तप है तथा तप को धारण करना ही प्रायश्चित है।

तप की महिमा- अनन्तानन्त भवों के द्वारा उपार्जित कर्मों की राशि तपश्चरण से ही नष्ट होती है अतः इच्छा निरोध को ही श्रेष्ठ तप कहा जाता है।

ध्यान तप और प्रायश्चित- आत्म स्वरूप का अवलम्बन लेकर जीव सभी परभावों का परिहार करने में समर्थ होता है। इसलिये ध्यान को ही तप के रूप में आचार्य कुन्दकुन्द देव ने सुनिश्चित किया है तथा आगे कहा है शुभ अशुभ वचन रचना का और रागादि भाव का निवारण करके जो आत्मा का ध्यान किया जाता है उसे ही नियम की सिद्धि होती है अर्थात् निश्चित सिद्धि की प्राप्ति होती है। शरीर आदि परद्रव्यों में अहंकार ममकार को छोड़कर आत्मा को जो निर्विकल्प रूप से ध्याता है वही कायोत्सर्ग कहलाता है। यह कायोत्सर्ग ही प्रायश्चित की आधार भूमिका है इसी के माध्यम से ही निश्चय प्रायश्चित सम्पन्न होता है। निश्चय प्रायश्चित को प्राप्त करने के लिये आत्मा का ध्यान कायोत्सर्ग और तपश्चरण की महती भूमिका होती है। इस भूमिका को समझकर ही प्रायश्चित साकार किया जा सकता है इस तरह से आचार्य कुन्दकुन्द देव ने 9 गाथाओं के माध्यम से निश्चय प्रायश्चित की रचना को स्पष्ट किया है।

कहानी

मरता क्या नहीं करता

लेखकः एलक श्री सिद्धांतसागर जी महाराज

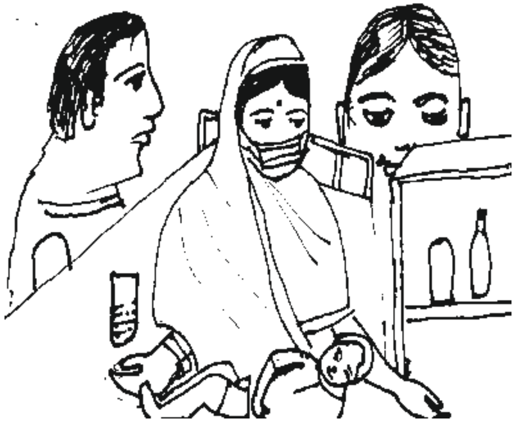

रात के 10 बज रहे थे। आसमान में बादलों के बीच चंद्रमा लुका छिपी कर रहा था। चैत्र माह में शुक्ल की नवमी होने से धार्मिक गीतों की आवाज धीरे धीरे थम सी रही थी। राम नवमी की राम यात्रा में होने उद्घोष भी अचानक कोहराम में बादल गये थे। पूरे खरगोन शहर में अफरा तफरी सी मच गई थी। कहीं से अल्हा हो अकबर के नारे गूंज रहे थे तो कहीं से जय श्री राम की आवाज आकाश को भेद रही थी। पुलिस की वज्र वाहनी नगर के मुख्य मार्गो से लेकर गलियों ने दौड़ रही थी पुलिस के अधिकारी रोड पर दौड़ रहे थे। खरगोन नगर में कर्फ्यू की घोषणा हो चुकी थी पुलिस जगह जगह मोर्चा सम्हाल चुकी थी। स्थिति तनावूपर्ण बनती जा रही थी। कई दुकानों और मकानों ने आग की लपटे निकलने लगी थी कई बच्चे और महिलायें अपने बचाव के उपाय खोज रहे। पुलिस का स्पीकर घोषणा कर रहा था कि सभीजन घर के भीतर हो जायें। देखते ही गोली मारने के आदेश हो चुके थे। हर तरफ भय का साया पसर चुका था। पुलिस लोगों को सुरक्षित स्थान पर पहुँचा रही थी और उपद्रवी तत्त्वों को गिरफ्तार कर थानों में भर रही थी परंतु स्थिति नियंत्रण होने का नाम नहीं ले रही थी। बच्चे महिलायें रोते चिल्लाते गलियों में दौड़ रहे थे। सब बचाव की मुद्रा में आ चुके थे।

घर में दुबके महाजन परिवार की स्थिति बड़ी विकट बनी हुई थी दंगाईयों ने उनके मकान को घेर रखा था। कोई कह रहा था जल्दी करो दरवाजा तोड़ दो। कोई कह रहा था अरे खाँ दरवाजा क्यों तोड़ना अरे सीधी आग लगा दो। तड़फ तड़क कर सब काफिर मर जायेंगे। अल्हा हमें काफिरों को मारने के बदले में जन्नत देंगे। जब कुछ लोग यह कह रहे थे तभी शाकिर मिया ने कहा अरे भाईजान जब तुम मरोगे तभी तो जन्न मिलेगी परन्तु पकड़े गये तो कई साल जेल में सड़ोगे। इसीलिये मेरा कहना है सब अपने अपने घर जाओ। किसी वेगुनाह को परेशान मत करो

सब मालिक की औलाद है। उनमें हमने मालिक के वंदे और काफिर का फरक किया है।

शाकिर मियाँ की बात सुनकर कई युवक ठहाका मारकर हंसे और कहने लगे कि इन उमरदराज लोगों ने ही कौम का ढर्रा बिगाड़ा है। कुछ कायर लोग आगे हो जाते हैं न कुछ करते हैं न कुछ करने देते हैं।

शाकिर ने जोर से चिल्लाकर कहा अरे छोकरो मेरी हंसी मत उड़ाओ बल्कि मेरी बात समझने की कोशिश करो। हिन्दू और मुसलमान खून तो लाल ही होता है खून बहाने में मजा मत लूटो। इंसानियन की कीमत समझो कट्टरवादी बनना सरल है परंतु मालिक खलक हो समझना कठिन है जो मालिक की खलक को नुकसान पहुँचाता है वह मालिक की खिलाफत ही करता है।

महमूद ने शाकिर की हाँ में हाँ मिलाते हुये शाकिर भाई तुम बिल्कुल सही बात कह रहे हो लेकिन इन छोकरों को हमारे ही समाज के कठमुल्लों ने इस तरह से पढ़ाया है कि इनका दिल भी पत्थर का हो गया है उसमें रहम का दरिया सूख ही गया है। रहम से ही सही इबादत होती है।

सुभाष महान के घर के बाहर बहस चल रही थी परंतु बाहर की चर्चा भीतर तक नहीं जा रही थी मात्र भीड़ का कोलाहल ही सुनाई दे रहा था। सुभाष का 6 वर्षीय बेटा मिलन ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर जा रहा था वह ऊपर की खिड़की खोलकर नीचे का दृश्य देखना चाह रहा था परंतु नैना महाजन उसे पकड़ नीचे समझाकर मुश्किल से लेकर आती है। और कभी कभी उसे खूब जोर से डाँटती है। और गाल पर चपत भी लगा देती है। बेटा तूँ चुपचाप सो जा और उसे बारबार भपकी देकर रूलाने का प्रयास करती है परंतु भय का प्रभाव उस नन्हें से बालक पर भी पड़ रहा था सच भी है कि जहाँ भय का वातावरण पसरा हों वहां नींद किसे आ सकती है। नींद तो अभय वातावरण में आती है।

हर घर में दंगों की चर्चा हो रही थी। कोई अपने मोबाईल पर जानकारी लेना चाह रहे थे। वाट्सअप पर विवरण आ रहा था। तभी सभी चैनलों ने समाचार देना बंद कर दिया था। सुभाष ने भी अपने मोबाईल पर वाट्सअप पर समाचार पढ़ रहा था कि रामनवमी के उपलक्ष्य में धर्मयात्रा निकल रही थी गाजे बाजे के साथ आगे बढ़ती जा रही थी। सभी रामभक्त अनुशासन में चल रहे थे। धार्मिक भजन डीजे पर बज रहे थे। आगे अश्वारोही ध्वज लेकर चल रहे थे। कुछ स्वयंसेवक आगे-आगे व्यवस्था बना रहे थे। किसी भी प्रकार के दंगे फसाद की कोई भी आशंका नहीं थी। जैसे ही काजी मुहल्ले से धर्मयात्रा गुजर रही थी कि अचानक पत्थर वरसना शुरु हो गया। होने वाले पथराव का विरोध करने के लिये पुलिस दल आगे बड़ा तो कुछ दूरी पर ही पेट्रोल बम फिकने लगे। भगवान राम की धर्मयात्रा में भगदड़ मच गई। चारों ओर लोग अपनी रक्षा करने के लिये भागने लगे और एक ही पक्ष के लोग धार दार हथियार लेकर सड़क पर दहशत फैलाने लगे। अब पूरा खरगोन दंगे की गिरफ्त में आ चुका है सभी लोग अफवाहों पर विश्वास न करें और दंगे को फैला ने से रोकना हम सभी का

कर्त्तव्य है नगर की फिजां को बिगाड़ने से बचाने को हम आगे जरूर आयें।

सुभाष ने मोबाइल को बंद कर तकिया पर रखकर अपने बेटो को समझाते हुआ कहा बेटा ऊपर नीचे नहीं जाना है। अब बस सो जाओ। स्वप्निल बोला पापा जी बाहर क्या हो रहा है। बहुत सारे लोग अपने घर के बाहर खड़े-खड़े गंदी गंदी बातें कर रहे है आप उन्हें डाँटकर भगा क्यों नहीं देते।

सुभाष ने कहा बेटा तुम सो जाओ हम अभी थोड़ी देर बाद सबको डांटकर भगा देंगे। पर वो तो कह रहे हैं कि इस घर में आग लगा दो।

सुभाष ने कहा कि बेटा तुम अब ज्यादा वकवास मत करो जाओ दादी के पास सो जाओ कुछ नहीं होगा भगवान पर विश्वास करो धर्म सबकी रक्षा करता है।

धर्म-क्षति रक्षतः धर्म की हमारे लिये शरण हैं।

पापा जी बाहर खड़े लोग कह रहे हैं इनको बाहर निकाले और काटकर फेंक दो।

बेटा जो कहते है वो कर नहीं पाते जो करते हैं वो कहते नहीं तुम बिल्कुल मत डरो सो जाओ। सुभाष के समझाने के बाद स्वप्निल सो जाता है उसको मां की गोद में निद्र देवी की शरण में चला गया।

रात गहराती गई परंतु दंगाइयों शांति नहीं मिल रही थी उपद्रवी तत्त्वों ने हर घर में डर का वास करा दिया था सुभाष ने प्रदीप कवि का गीत गाना शुरु किया।

कैसी ये मनहूस घड़ी है
भाईयों में जंग छिड़ी है
कहीं पे खून कहीं पे ज्वाला
जाने क्या है होने वाला
सबका माथा आज झुका हैं
आजादी का जुलूस रूका है

मस्ती के साथ सुभाष की पत्नी भी ताली बजाकर दुहरा रही थी। आखिर तय किया गया कि विपत्ति जो सब पर आती है। और विपत्ति अनुभूति की पाठशाला है। भगवान राम पर भी विपत्ति आइ थी जब रामचंद्र जी बनवास काल से गुजर रहे थे तब उनकी धर्मपत्नी सीता का हरण करके रावण ले गया था। और रावण ने भगवान राम को अपमानित करने का प्रयास किया था। हर युग में राक्षसों का बोलबाला रहा है देव और दानवों का युद्ध भी सत्‌युग में हुआ है। किन्तु अंत में विजय देवों की ही हुई है। रावण का भी वध हुआ है। सुजाता तुम बिल्कुल घबराओं नहीं कोई न कोई हमारी रक्षा करने जरूर आयेगा।

सविता के संस्कार बहुत उच्च स्तर के थे उसने अपने बेटे सुभाष को भी अपनी ही प्रकृति ढाला था सुभाष ने कहा ँ आप तो आराम कीजिये हम सबसे निपट लेंगे आपके ऊपर कोई भी आंच भी नहीं आने देंगे। सुभाष की बात सुनकर सविता ने गहरी श्वास लेकर कहा बेटा मैं आज तक अगर जीवित हूँ तो मात्र तेरे लिये यदि तेरे लिये कुछ हो गया तो मेरा जिन्दा रहना या नहीं रहना कोई मतलब का नहीं रहेगा। तुमसे ही मेरी आशा है और विश्वास भगवान पर। सुभाष माँ तेरे चरणों की कसम अब मुझे सहन नहीं हो रहा हैं क्योंकि हम जितना डरेंगे उतना ही ये हमें डरायेंगे। अपने घर में कुल्हाड़ी तो रखी है बस

आज्ञा दें। माँ तेरा बेटा अकेला नहीं मरेगा पहले कम से कम दो-पांच को मारूंगा फिर बाद में तेरे चरणों में सिर रखकर आखरी श्वांस लूंगा।

सविता ने अपनी आँखों के आंसू छिपाते हुये सुभाष अभी तूँ बाहर नहीं निकलेगा पहले में छत पर मुआयना करती हूँ और उनकी हरकतों पर सोचती हूँ। फिर हम रणनीति बनाते हैं कि आखिर इन उपद्रवियों से कैसे निपटा जायें।

ठीक हैं माँ तू ऊपर जा और फिर अपना निर्णय सुना। दबे दबे पैर सविता ऊपर जाती है वह देखती कई लोग नंगी तलवारें लहरा रहे है और हिन्दुओं को निशाना बनाकर तरह-तरह की गंदी गलियाँ दे रहे हैं। सविता ने मन मन में योजना बाई और सुजाता से कहा तूँ गैस पर बड़ी टंकी में पानी गरम कर जब पानी अच्छा खौल जाये हो उसे हम ऊपर चढ़ायेंगे और तूँ पहले एक कामकर मेरे पूजन कक्ष में रखी गंगाञ्जंली की बोतल उठा ला हम सब मिलकर गंगा जल का पान करके इन उपद्रवियों से जूझेंगे। क्योंकि यह निश्चित है किसी भी क्षण दरवाजा तोड़कर भीतर घुस सकते हैं हम उनसे जीते या हारें यह तो बाद की बात परन्तु उनको भी हम सबक सिखने में पीछे नहीं हटेंगे। सविता अपनी बात कहने के बाद फिर से ऊपर जाती है जितने भी ईट के टुकड़े थे उन्हें इकट्ठा करके लौटकर नीचे आ जाती हैं गंगा जल पिला देती है।

सुभाष अपने मोबाइल से 100 नं. पर फोन लगाता है। और मोबाइल लग भी जाता कोई मेडम फोन उठाती है तब सुभाष एक श्वासं में हम काजी मुहल्ले के रहने वाले सुभाष महाजन है मेरे घर को दंगाई घेरे हुये बस वे मेरे घर में या तो आग लगा देंगे या फिर दरवाजा तोड़कर घर के भीतर घुस सकते हैं और कोई भी अप्रिय घटना घट सकती है।

उत्तर में मेडम ने कहा आप जैसे बने वैसे अपनी सुरक्षा कीजिये तत्काल आपकी सहायता के लिये वज्र वाहनी आ रही है। मेडम कामेश्वरी ने अपने अधिकारियों को सूचना दी तत्काल सी एस पी एस के त्रिवेदी के नेतृत्व वज्र वाहनी रवाना हुई।

उधर सविता ने जैसे ही सायरन आवाज सुनी वह ऊपर अपने पूरे परिवार के साथ गई और उपद्रवियों पर खैलता पानी फेंकना शुरु कर दिया बस थोड़ी ही देर में पुलिस दल सुभाष महान के घर के पास पहुँच गया। पुलिस दल ने भीड़ को भगाने के लिसे अश्रु गैस के गोले दागे। फिर क्या था ऊपर से खौलता पानी और पत्थर बरस रहे थे ओर नीचे से अश्रु गैस गोले उन्हें बांधे हुये थे। पुलिस ने अपने बल का प्रयोग करके सभी उपद्रवियों को अपनी गिरफ्त में ले लिया देखते ही देखते बिल्कुल शांति हो गई ऐसा लगने लगा जैसे बहुत बड़ा तूफान टल गया हो। सविता एक वीरांगना की तरह पुलिस दल को सुना रही थी हमने तो गंगाजल पी ही लिया था पर सोचा यह था कि मरता क्या नहीं करता पर आप सबको मैं धन्यवाद दी जो आपने हमें सुरक्षा प्रदान की। थोड़ी देर में रात बीत गई।

प्रभात बेला में नई उमंग साथ पूरे परिवार ने जीने की कला सबको बतायी।

पर्यूषण महापर्वः विकार और विकृतियों को जीतने का पर्व

✻ डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर ✻

पर्यूषण महापर्व एक ऐसा सार्वभौम पर्व है जिसमें आराधक सांसारिक कार्यों से थोड़ी निवृत्ति लेकर क्रोध, मान, माया, लोभ आदि विकारों से बचकर संयम पूर्वक धर्म की आराधना करते हैं। यह पर्व हमारे जीवन को परिवर्तन में कारण बन सकता है। यह ऐसा पर्व है जो हमारी आत्मा की कालिमा को धोने का काम करता है। विकृति का विनाश और विशुद्धि का विकास इस पर्व का ध्येय है। दस दिन चलने वाले इस पर्व में प्रतिदिन धर्म के एक अंग की भलीभांति आराधना करके उसे जीवन भर के लिये हृदयंगम करने का प्रयास किया जाता है। इसलिये इसे दसलक्षण पर्व भी कहा जाता है। आत्म विशुद्धि के लिये इस पर्व के दौरान दस दिन तक क्रमशः दस धर्मों की आराधना की जाती है। जिन दस धर्मों की आराधना की जाती है वे इस प्रकार हैं :-

1. उत्तम क्षमाः पहले दिन उत्तम क्षमा धर्म की आराधना की जाती है। सहनशीलता का विकास इस धर्म का उद्देश्य है। क्रोध को पैदा न होने देना। क्षमा गुणों का चिंतन करना। सभी के प्रति क्षमाभाव रखना। क्रोध की दिनों -दिन बढ़ती लहर पर अंकुश लगा कर ही हम पारिवारिक और सामाजिक शांति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

2. उत्तम मार्दवः चित्त में मृदुता व व्यवहार में नम्रता होना। सभी के प्रति विनयभाव रखना।

3. उत्तम आर्जवः भाव की शुद्धता। जो सोचना सो कहना। जो कहना सो वही करना। छल, कपट का त्याग करना। कथनी और करनी में अंतर नहीं करना।

4. उत्तम शौचः मन में किसी भी तरह का लोभ न रखना। आसक्ति घटाना। न्याय नीति पूर्वक कमाना।

5. उत्तम सत्यः यथार्थ बोलना। हितकारी बोलना। थोड़ा बोलना। प्रिय और अच्छे वचन बोलना।

6. उत्तम संयमः मन, वचन और शरीर को काबू में रखना, संयम का पालन करना। मन तथा इंद्रियों पर काबू रखना।

7. उत्तम तपः मलीन वृत्तियों को दूर करने के लिये जो बल चाहिये उसके लिये तपस्या करना। तप का प्रयोजन मन की शुद्धि है। तप से आत्मा पवित्र होती है।

8. उत्तम त्यागः सुपात्र को ज्ञान, अभय, आहार और औषधि का दान देना तथा राग-द्वेषादि कषायों का त्याग करना।

9. उत्तम आकिंचनः किसी भी चीज में ममता न रखना। अपरिग्रह को स्वीकार करना। आत्मा से अन्य पर एकत्व की तल्लीनता को त्याग अपने आप में लीन हो जाना आकिंचन है।

10 उत्तम ब्रह्मचर्यः सद्गुणों का अभ्यास करना और अपने को पवित्र रखना। ब्रह्मचर्य का पालन करना। चिदानंद आत्मा में लीन होना।

आज भौतिकता की चकाचौंध में भागती जिंदगी की अंधी दौड़ में यह पर्व जिंदगी को जीने का नया मार्ग प्रशस्त करता है। यह पर्वराज हमारी चेतना पर धर्म का ऐसा संस्कार डालता है जिससे कुरीतियों पर कुठाराघात और संस्कारों का शंखनाद होता है। अपने को जीतने का यह पर्व आत्म जागरण करता है। इस पर्व का महत्व त्याग के कारण है, आमोद-प्रमोद का इस पर्व में कोई स्थान नहीं है। इस पर्व का संबंध खाने और खेलने से न होकर खाना और खेलना त्यागने से है। ये भोग का नहीं, त्याग का पर्व है। कोरोना के दौर में ऐसे आत्म जागरण के पर्वों की उपादेयता और अधिक बढ़ जाती है।

आज जिस तरह से नैतिक मूल्यों का क्षरण हो रहा है, पश्चिमी हवा में संस्कारों का दम घुट रहा है ऐसी परिस्थितियों में यह पर्व व्यक्ति के जीवन में सुसंस्कारों का नया संचार करने में माध्यम बनता है। खासतौर पर युवा पीढ़ी के लिये यह पर्व उनकी उदास, निराश, तनाव युक्त जीवनशैली को उत्सव से जोड़कर नयी स्फूर्ति प्रदान करता है। संस्कार को सुदृढ़ बनाने और अपसंस्कारों को तिलाजंलि देने का यह अपूर्व अवसर होता है।

जैनधर्म के दिगम्बर, श्वेताम्बर दोनों सम्प्रदायों में इस पर्व को मनाने की परम्परा है। श्वेताम्बर परंपरा में 24 अगस्त से 31 अगस्त तक व दिगम्बर जैन परंपरा में 31 अगस्त से 9 सितम्बर 2022 तक यह महापर्व श्रद्धा-आस्था के साथ मनाया जायेगा। संयम और आत्मशुद्धि के इस पवित्र पर्व पर समाज के सभी पुरुष, महिलायें, बच्चे, युवा सभी पर्व को पूर्ण निष्ठा और आस्था के साथ मनाते हैं। सांसारिक मोह-माया से दूर मंदिरों में जिनेन्द्र भगवान की पूजा अभिषेक, शांतिधारा, विधान, जाप, उपवास, प्रवचन श्रवण आदि दस दिन तक किया जाता है। मंदिरों को भव्यता पूर्वक सजाते हैं। कठिन व्रत नियमों का पालन करते हैं। भारत के अलावा ब्रिटेन, अमेरिका, कनाडा, आस्ट्रेलिया, जापान, जर्मनी व अन्य अनेक देशों में भी यह पर्व धूमधाम से श्रद्धा पूर्वक मनाया जाता है।

कविता

स्वभाषा प्यारी

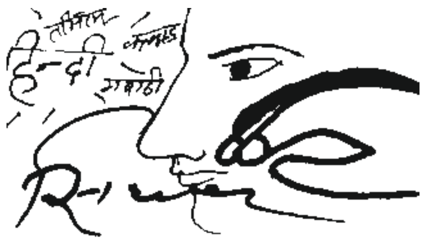

स्वभाषा प्यारी लाओ, अंग्रेजी हटाओ
तुम तो गीत स्वदेशी गाओ
स्वाभिमान है हिन्दी में ही, अंग्रेजी नादानी
संस्कार देती हैं हिन्दी, इसकी कोई न शानी
अब धोखा कोई न खाओ
माँ का आंचल हिन्दी भाषा, देखलो इसका जलवा
मात्र नौकरी के लालच में, भूले न मां का जलबा
तुम तो निज भाषा अपनाओ
यूनियन जैक हमें क्या भाषा
क्या चर्चिल राष्ट्रपति है फिर क्यों अंग्रेजी अपनाये
बापू राष्ट्र पिता हैं तुम गीत तिरंग गाओ

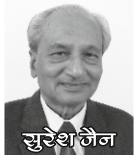

क्रमांक- 19 वरिष्ठ नागरिक

बुजुर्गों का तिरस्कार करने वाले अब जेल जायेंगे

माता पिता से दुर्व्यवहार करने वालों पर कानूनी शिंकजा : दी मैन्टनैंस एंड वेलफेयर ऑफ पेरेंट्स सीनियर सिटीजन एक्ट- 2007

बुढ़ापे की लाठी जब सहारा देने की बजाय बेसहारा छोड़ दे, अपने ही घर में बुजुर्गों से परायों जैसा व्यवहार किया जाये, तो सोचिये क्या गुजरती होगी उन पर ? लेकिन अब माता-पिता से ऐसा व्यवहार करने वालों की खैर नहीं, क्योंकि अब इन बुजुर्गों के अधिकार के लिये कानून ने हस्तक्षेप कर दिया है। बच्चों को बुढ़ापे का सहारा माना जाता है, खासकर बेटे से तो माता-पिता को बहुत आशा होती है, लेकिन जब यही बेटे उनके अशकत हा जाने पर उन्हें तरह-तरह से दुख देने लगे या सारी संपत्ति अपने नाम लिखा लें तो उनकी स्थिति क्या होती होगी।

बुढ़ापे की विडम्बना- बुढ़ापा तो पहले ही असहाय बना देता है, इंसान को, ऊपर से बच्चों की उपेक्षा, तिरस्कार और बुजुर्ग माता-पिता को घर से निकाल देना, आज की यह स्थिति देखकर तो यही लगता है कि नीति-धर्म की जो बातें हमारे ग्रंथों में लिखी हैं, वे सब बेमानी हैं। बुढ़ापे की लाठी जब सहारा देने की बजाय पलटकर वार करने लगे तो संसद ने **द मैटेनेंस एंड वेलफेयर ऑफ पेरेट्स एंड सीनियर सिटीजन** बिल 2007 संसद द्वारा स्वीकृत किया।

वृद्धों का आदर करो वरना जेल जाने के लिये तैयार रहो। तमाम उम्र अपने बच्चों के लिये जान लगा देने वाले अभिभावकों को कई बार वृद्ध अवस्था में उन्हीं बच्चों की ओर से घृणा व घर से निकाल दिये जाने का संताप सहना पड़ता है, इस पर रोक लगाने के लिये पंजाब सरकार ने भी **द मेंटीनेंस एंड वेलफेयर ऑफ पेरेट्स एंड सीनियर सिटीजन** एक्ट 2007 को लागू कर दिया है।

यह विभाग ऐसे बुजुर्गों को उनका हक दिलवायेगा, जिनका घरों में तिरस्कार किया जाता है। ऐसे में आरोपी को कठघरे में भी खड़ा किया जायेगा। अगर बुजुर्गों को सताने की शिकायत सही पाई जाती है, तो आरोपी को जेल की हवा भी खानी पड़ सकती है। बुजुर्गों पर घर के लोगों द्वारा ढाया जाने वाले जुल्म-सितम को रोकने के लिये पंजाब सरकार व सामाजिक सुरक्षा विभाग पंजाब की ओर से इस एक्ट को सख्ती से लागू किया गया है। इस एक्ट के तहत वृद्ध माता-पिता की सेवा संभाल उनके बच्चों की ओर से करना कानूनी फर्ज घोषित किया गया है। यदि कोई बच्चा अपने वृद्ध माता-पिता की सेवा संभाल नहीं करता था अच्छा व्यवहार नहीं करता तो इस संबंधी शिकायत अपने इलाके के एस.डी.एम, डिप्टी कमीश्नर, जिनको एक्ट के अनुसार संभाल ट्रिब्यूनल घोषित किया गया है, में की जा सकती हैं। यदि कोई ऐसा नागरिक जो एस.डी.एम की ओर से जारी किये गये आदेश से संतुष्ट नहीं है, वह इसकी अपील डी.सी.एपीलेंट ट्रिब्यूलन के पास कर सकता है।

बिल में यह भी वर्णित है कि राज्य सरकारें ओल्ड ऐज होम्स भी बना सकती हैं। इसमें उन्हें बेहतर चिकित्सा सुविधा प्रदान करने, उनकी जान व संपत्ति की सुरक्षा का भी प्रावधान है। जब संतान द्वारा माता-पिता का दुर्व्यवहार करने पर उन्हें सलाखों के पीछे भी डाला जा सकता है। दुख की बात तो यह है कि सारा जीवन अपने बच्चों और परिवार के लिये कुर्बान कर देने वाले वृद्धों को जीवन के तीसरे पढ़ाव पर जब सबसे ज्यादा भावनात्मक सहारे की जरूरत होती है, जब उन्हें अक्सर बेसहारा छोड़ दिया जाता है। अब वरिष्ठ नागरिक लगातार उपेक्षा करने वाले अपने उत्तराधिकारियों को पैतृक संपत्ति से बेदखल कर सकते हैं, वैसे इस कानून का उद्देश्य दंड देना नहीं है, वरन् पारिवारिक संबंधों में आई दरार को भरना है। पर यह कितनी विडम्बना है कि अभिभावकों को अपने ही बच्चों से देखभाल करवाने के लिये कानून का सहारा लेना पड़ रहा है।

हर व्यक्ति प्यार और देखभाल चाहता है, पर बुढ़ापा ऐसा समय होता है, जब इसकी जरूरत बढ़ जाती है, कई बार बूढ़े माता-पिता बच्चों से आदर के साथ सहानुभूति की भी अपेक्षा करने लगते हैं। लेकिन व्यस्त बच्चों के लिये उन्हें पर्याप्त समय दे पाना मुश्किल होता है, साथ ही वे उनके अकेलेपन को भरने में भी असमर्थ होते हैं। वे यह बात समझ नहीं पाते कि बुढ़ापे में अकेला पन और असुरक्षा सबसे ज्यादा घेरती है। यह असुरक्षा आर्थिक और भावनात्मक दोनों तरह की होती है। उस समय उनके अंदर ऊर्जा की कमी हो जाती है, सक्रिय भी वे ज्यादा नहीं रहते। उन्हें अनेक तरह की बीमारियां घेर लेती हैं। इस कानून का आना बेशक एक अच्छा कदम है, लेकिन प्यार का कोइ विकल्प नहीं होता।

कानून के मुख्य प्रावधान-

- वरिष्ठ नागरिक वह है, जिसकी उम्र 60 या उससे अधिक है।
- उनके कल्याण से आशय भोजन, स्वास्थ्य की देख रेख तथा उनके लिये मनोरंजन केन्द्रों व अन्य आवश्यक सुविधायें जुटाने से हैं।
- वरिष्ठ नागरिकों में वे अभिभावक भी शामिल हैं, जो अपना गुजारा करने में असमर्थ हैं।
- पीड़ित अभिभावक अपने गुजारे भत्ते के लिये न्यायाधिकरण में आवेदन कर सकते हैं।
- न्यायाधिकरण में दी गई गुजारा भत्ता अर्जी पर नोटिस जारी होने के बाद 10 दिनों में मामले का निपटारा कर दिया जायेगा।
- न्यायाधिकरण द्वारा मंजूर गुजारा भत्ता 10,000/- दस रूपये हजार प्रतिमाह से अधिक नहीं होगा।
- यदि बच्चे न्यायाधिकरण के आदेश का पालन नहीं करते हों तो उन्हें एक माह की जेल या तब तक जेल हो सकती है, जब तक कि वे गुजारे भत्ते का भुगतान नहीं करते।
- जिस पर वरिष्ठ नागरिक की देख रेख की जिम्मेदारी हो, वह गर उसे बेसहारा छोड़ दे तो उसे तीन माह की जेल व 5000/- पांच हजारे रूपये जुर्माने की सजा हो सकती है।
- बुजुर्गों द्वारा अपने बच्चों के नाम की गई प्रॉपर्टी दोबारा उनके नाम हो जायेगी।

हमारे गौरव

अमर शहीद मगनलाल ओसवाल

अमर शहीद मगनलाल ओसवाल की शहादत भारत के स्वतंत्रता संग्राम में स्वर्णाक्षरों में अंकित है। मगनलाल ओसवाल का जन्म 1906 ई. में जावरा (म.प्र.) में हुआ था। आपके पिताश्री हीरालाल ओसवाल इंदौर में व्यवसाय करते थे। मोरसली गली में उनकी छोटी सी किराना दुकान थी। मगनलाल अपने पिता की इकलौती संतान थे। ओसवाल जी की शिक्षा-दीक्षा अधिक नहीं हुई, मिडिल पास करने के उपरांत आप पिताजी के साथ दुकान पर बैठने लगे। 1942 में जब भारत छोड़ो आंदोलन छिड़ा तब आपकी शादी हो चुकी थी आप गृहस्थ बन गये थे और पिताभी। पर आजादी के दीवानों को क्या परिवार के बंधन बांध सके हैं।

करो या मरो के मूल मंत्र वाला अगस्त 1942 का आंदोलन निर्णायक था। देश के सभी हिस्सों में इसकी गूँज थी, आजादी के दीवाने जगह-जगह भारत माँ को परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्त करने लिये स्वयं बेड़ियां पहन रहे थे जेल की उन्हें परवाह न थी, माताओं की गोटे सूनी हो रही थी और आंदोलन में कैसे पीछे रहता। रोज सभायें जुलूस क्रम में 6 सितम्बर 1942 को एक जुलूस इंदौर में निकला। इसका नेतृत्व श्री पुरुषोत्तम लाल विजय कर रहे थे जुलुस में लगभग 2-3 हजार लोग थे। जुलूस शांत था। श्री मगनलाल भी आगे-चलते हुये महात्मा गांधी की जय, अंग्रेजों भारत छोड़ो, इंकलाब जिन्दाबाद आदि।

जब जुलूस सराफा बाजार में पहुँचा तो भारी संख्या में पुलिस आ गई और जुलूस चारों तरफ से घेर लिया सभी शांत थे, पर बर्बरता की तो कोई सीमा नहीं, यह सदैव अपना घिनौना ओर वीभत्स चेहरा लिये ही प्रकट होती है। पुलिस ने अचानक इन अहिंसक सत्याग्राहियों पर लाठियों और गोलियों की बौछार शुरु कर दी। एक तरफ सभी निहत्थे थे दूसरी तरफ थी लाठिया और गोलियां। एक तरफ सभी शांत थे, दूसरी तरफ थी भद्दी-भद्दी गालियां। इंदौर का सराफा बाजार जिसने देखा हैं, वे जानते हैं कि इसकी सड़के बड़ी सकरी हैं। पुलिस ने दोनो ओर से घेरकर सत्याग्राहियों को इतना पीटा कि बन्दूके भी सहम गई।

इस गोली चालन में कुछ इधर-उधर बिखर गये, कुछ को गोलियां लगी तो कुछ को लाठियां, कुछ जम रहे, लाठियां खाते रहे, कुछ गिर पड़े। मगनलाल की जांघ में तभी एक गोली लगी वे वहीं गिर पड़े और जब तक बेहोश नहीं हुये- भारत माता की जय भारत माता जी जय भारत माता की जय के नारे लगाते रहे पुलिस की निर्दयता ने उस समय निर्दयता को भी पीछे छोड़

दिया जब कुछ पुलिस वालों ने निहत्थे, बेहोश पड़े मगनलाल पर जूतों की ठोकरें मारी।

जुलूस के संचालक श्री पुरुषोत्तम लाल विजय को अनेक 15-20 साथियों के साथ गिरफ्तार कर लिया गया। मगनलाल को भी गिरफ्तार किया पर समस्या थी घायल अवस्था में कहां ले जाया जाये ? अन्त में पुलिस उन्हें तत्कालीन महाराजा तुकोजी राव अस्पताल ले गई। चारों ओर पहरा बैठा दिया गया।

डाक्टरो ने ऑपरेशन किया जांघ से गोली निकाली, काफी बड़ा घाव हो गया और यह घाव अंत तक भरा नहीं जा सका। मगनलाल अस्पताल में रहे पुलिस का पहरा रहा, घाव कभी भरता सा लगता फिर बढ़ जाता ऐसी ही आँख मिचोली चलती रही और लगभग सवा तीन बरस निकल गये, मगनलाल बिसतर पर पड़े रोज समाचार सुनते नई घटना, नई गिरफ्तारी, पर वह नहीं सुन सके जिसके लिये वे जी रहे थे, वह था देश की आजादी का समाचार वे सोचते काश मैं उठकर भाग पाता। काश ! यह घाव न होता तो अंग्रेजों को यहाँ से भगाकर ही दम लेता, पर सोचा हुआ कभी पूरा हुआ है क्या ?

23 दिसम्बर 1945 को आजादी का यह दीवाना देश की आजादी का सपना अपने हृदय में छिपाये हुये वीरगति को प्राप्त हो गया।

कविता

सिंहासन ढह जायेगा

✻✻ संस्कार फीचर्स ✻✻

जन भावना साधु की साधना होती है
बहुत बड़ी गरीब की हाय से लोकतंत्र राय से
कभी कोई पद नहीं होता है बड़ा
दया प्रेम की भावना अंतर राष्ट्र की साधना
खोलती है मुक्ति के द्वार
गरीब हाय की जनगण की राय की
अनजाने में कभी मत ठुकराना
परिणाम बुरा होगा कभी तो रोना होगा
सिंहासन भी खोना होगा
श्रीलंका का सिंहासन ढह जायेगा
अंत में हर कोई पछतायेगा

श्रमण परंपरा का भारतीय संस्कृति को योगदान

❊ प्रस्तुतिः सुरेश जैन मारौरा, इंदौर ❊

मंगलाचरण-

हर कलश मंगल कलश नहीं होता
हर सागर महासागर नहीं होता
साधु संत दुनिया में लाखों करोड़ों हैं
मगर हर संत आचार्य चारित्र चक्रवर्ती श्री शांतिसागर नहीं होता

भारतीय संस्कृति प्राचीन काल से पूरे विश्व में विख्यात है। जीवन जीने की कला और जीवन को उन्नति के शिखर पर ले जाने की संस्कृति है। भारत में अध्यात्म योग, धर्म के साथ जीवन का लक्ष्य पाने की गौरवशाली परंपरा रही है। यहां पर प्राचीन संस्कृति में ऋषि-मुनियों और संतों की वाणी में अनेक उपदेशों में यह शाश्वत संदेश हमें सुनाई देता है।

देश की संस्कृति में जैन संस्कृति का एक विशेष स्थान रहा है, जो प्राण वायु की तरह अध्यात्म प्रधान संस्कृति रही है। इसमें जीवन का लक्ष्य भोग को नहीं योग को माना जाता है। जैन संस्कृति ने आध्यात्मिक जागरण और समाज के चहुमुखी विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

श्रमण- जैन संस्कृति- श्रम-समता- शम और स्वकीय परिश्रम का प्रतीक है, श्रमण जैन परंपरा ने ब्राह्मण परंपरा में प्रचलित हिंसक यज्ञ और जातिवाद के विरोध में नही बल्कि मानवता वाद के पोषण में अहिंसा, अपरिग्रह और कर्मवाद सिद्धांत को प्रतिस्थापित किया है।

श्रमण परंपरा को तीन भागों में विभक्त कर भारतीय संस्कृति की विरासत का संरक्षण एवं संवर्धन किया गया है।

1. आदिनाथ से महावीर तक एवं ईशा पूर्व तक
2. पूर्वाचार्यों की परंपरा (ईशा की प्रथम शताब्दी से 19वीं शताब्दी तक)
3. बीसवीं शताब्दी की परंपरा (चारित्र चक्रवर्ती शांतिसागर जी महाराज दक्षिण, आचार्य शांतिसागर जी छाणी, आचार्य आदिसागर जी अंकलीकर यहां हम बीसवीं शताब्दी के संतों का योगदान विस्तृत रूप जानेंगे)

प्रस्तुत है चारित्र चक्रवर्ती शांतिसागर जी महाराज दक्षिण।

वर्ष 2003-2004 में आचार्य शांतिसागर जी का 131 वां जन्म जयंती महोत्सव संयम वर्ष के रूप में आचार्य श्री विद्यानंद जी ने मनाया जो शांतिसागर जी के साथ 13 वर्षों तक रहे। सूत्र दिया **घर- घर में हो शांतिसागर, मन मन में हो शांतिसागर**

जन्म सन्	-1872 येलगुल कोल्हापुर आषाढ़ वदी 6

क्षुल्लक दीक्षा	-1914 ग्राम उत्तूर कोल्हापुर मुनि श्री 108 देवेन्द्र कीर्ति जी महाराज से
ऐलक दीक्षा	-1917 गिरनार में नेमिनाथ भगवान के चरण सान्निध्य में
मुनि दीक्षा	- 1920 यरनाल बेलगाव मुनिश्री देवेन्द्रकीर्ति जी महाराज
आचार्य पद	-1924 समडोली
चारित्र चक्रवर्ती	-1937 गजपंथा सिद्धक्षेत्र पर उपाधि प्राप्त हुई।
समाधिमरण	- 1955 कुथल गिरि सिद्धक्षेत्र पर भादो वदी 2 दिनांक 18.09.1955

36 वर्षों में 35000 किलोमीटर यात्रा 9338 व्रत, 36 वर्ष के मुनि जीवन में 25 वर्ष 7 माह 3 दिन उपवास इस कठोर तपस्या की कोई बराबरी नहीं कर सकता। महाराज पद्मनंदी पंचविशतिका ग्रंथ का स्वाध्याय करने के बाद अन्न जल ग्रहण करते थे, ललितपुर चातुर्मास 6 माह में 4 माह से अधिक उपवास किये। 18 वर्ष की आयु में जूते का त्याग, चार मन का बोरा ले जाते थे, बैल की जगह हल में चलते थे।

चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी की विशेष तिथियाँ

श्रावण शुक्ल- पूर्णिमा- धर्म की विजय 1948 में मुंबई कोर्ट ने जैन मंदिरों में हरिजन प्रवेश एवं सेवा पूजा का अधिकार दिया था उसके खिलाफ सकल जैन समाज ने आंदोलन किया तब आचार्य श्री ने इस घोर संकट पर संटल टलने तक बिल निरस्त होने तक अपने आहार में अन्न का त्याग कर दिया जो 1107 दिन 3 वर्ष 12 दिन तक चला, त्याग के प्रभाव से धर्म की विजय हुई और इस विजय का कोर्ट आदेश पढकर आचार्य श्री ने 1951 में बारामती महाराष्ट्र में रक्षाबंधन के दिन आहार में आंशिक अन्न लेना प्रारंभ किया। यह वर्ष उनका मुनि दीक्षा शताब्दी वर्ष है भगवान श्रेयांसनाथ के निर्वाण लाडू समर्पण पर 700 मुनिराजों को रक्षाबंधन अर्घ चढ़ाना चाहिये।

भाद्रपद कृष्ण सप्तमी- यह पावन तिथि भगवान शांतिनाथ की गर्भ कल्याण जयंती है प्रातः स्मरणीय आचार्य शांतिसागर जी ने अपनी घोषित सल्लेखना में स्वेच्छा से अपना आचार्य पद अपने प्रथम शिष्य वीर सागर महाराज को प्रदान किया था। तदर्थ इस तिथि पर उन महामना की दूरदृष्टि को नमन करते हुये भव्य आयोजन कीजिए।

भाद्रपद कृष्ण 14- विशाल समुदाय की उपस्थिति में जयपुर के धर्म गौरव सेठ मुरलीधर जी राणा की नसिया में मुनिराज श्री वीर सागर जी महाराज जी ने उक्त आचार्य पद को 50000 श्रावकों की उपस्थिति में शिरोधार्य किया यह महान कार्य संत परंपरा के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित हुआ।

आश्विन शुल्क11 को 95वां आचार्य पदारोहण जयंती महापर्व को मनाकर सातिशय पुण्य अर्जित कीजिए।

उत्तम शौच लोभ परिहारी

❊ डॉ. महेन्द्रकुमार जैन, इंदौर ❊

शौच नाम सुचिता का है, पवित्रता का है। शुचिता-पवित्रता का सबसे बड़ा शत्रु है लोभ लोभ के कारण ही लोग ठगी, चोरी, हिंसा में लिप्त हो रहे हैं, यहां तक कि लोभ के कारण अपने सगे संबंधियों को भी मौत के घाट उतार देते हैं। भोग, उपभोग, जीवन, इंद्रिय, अभिलाषा इन चार प्रकार के लोभ से विरत होना उत्तम शौच धर्म है। लोभ के सभी प्रकारों का त्याग करना शौच धर्म है। जो परम मुनि इच्छाओं को रोककर और वैराग्य के विचारों से सहित होकर आचरण करते हैं। उनके शौच धर्म होता है। कहा है- **लोभः पापस्य कारणम्** लोभ ही सब पापों का कारण है, अतः लोभ का त्याग करना चाहिये।

एक कथानक आता है- एक उच्चवर्गीय युवक का विवाह हो गया, वह शिक्षा प्राप्त करने बनारस जाता है। वहां कुछ वर्षों रहकर सभी विषयों की शिक्षा प्रापत करके घट लौटता है। उसकी पत्नी उससे पूछती है- आप क्या पढ़कर आये हैं ? उसने बताया-चारों वेद, पुराण, ज्योतिष, गणित, आयुर्वेद आदि सभी विषय पढ़कर आया हूँ तुम पूछो कुछ पूछना चाहती हो। पत्नी ने कहा- से सब वेद पुराण तो मैं नहीं जानती, तुम तो यह बताओ कि पाप का बाप क्या है ? युवक ने कहा सभी विषय पढ़े पर यह नहीं पढ़ा। वह ये पाठ पढ़ने पुनः जाता है। काशी की गलियों में घूमते हुये उसके मन्तव्य को एक वेश्या ने जान लिया। उसने युवक को बुलाया कहा तुम्हारी क्या समस्या है ? युवक ने कहा पाप का बाप क्या है यह पाठ पढ़ना है। वेश्या ने उससे कहा आओ मेरे चौबारे पर ये पाठ तुम्हें पढ़ाऊँगी, युवक ने मना कर दिया कि मैं कुलीन हूं, तू वेश्या मैं तेरे चबूतरे पर नहीं आ सकता। वेश्या ने 100 रूपये की पेशकश की, युवक मान गया। वेश्या ने कहा तुम चलकर हारे थके आये हो कुछ खा पी लो सूखा सामान देती हूँ तुम बना लेना, फिर तुम्हें पाठ पढ़ाऊँगी, इसके लिये मैं 200 रूपये तुम्हें दूंगी। 200 के लालच में युवक मान गया। पुनः वेश्या बोली 500 मोहरें दूंगी मुझे भोजन बना देने दो, 500 के लालच में युवक वेश्या से भोजन बनवाने को मान गया। ज्यों ही वह कुलीन युवक खाना खाने लगा वेश्या बोली जब मैंने बना ही दिया है तो एक ग्रास मेरे हाथ से खा लीजिये मैं भी पवित्र हो जाऊँगी इसके लिये मैं तुम्हे 1000 मोहरें दूंगी, तभी तुम्हें पाठ भी पाप का बाप क्या है यह पाठ भी पढ़ा दूंगी। युवक ने सोचा यहां कोई देख तो रहा नहीं और 1000 मोहरें भी मिल रही हैं, पाठ भी मिल जायेगा। वह लालच में आकर वेश्या की बात मान गया। वेश्या ने भोजन का एक ग्रास उठाया, खिलाने लगी, युवक ने खाने को मुंह खोला कि वेश्या ने युवक के गाल पर एक चांटा जड़ दिया। युवक ने कहा तूने ये क्या, मुझे चाटा क्यों मारा। वेश्या बोली यही तो तुम्हारा सबक है, जो मैं पढ़ाने वाली थी। लोभ लालच ही पाप का बाप है। तुम मेरे चबूतरे पर आने को भी तैया नहीं थे, अपवित्र मान रहे थे और लोभ में पड़कर मेरे हाथ का बना और मेरे ही हाथ से खाने को भी तैयार हो गये।

लोभ में पड़कर व्यक्ति बड़े से बड़े पाप कर बैठता है। अतः अधिक लालच में न पढ़कर शौच धर्म अपनाना चाहिये।

गृहस्थ के लिये पंचतंत्र में कहा है- अति लोभों न कर्तव्यः लोभो नैव परित्यजेत् अत्यधिक लोभ नहीं करना चाहिये और भरण-पोषण के लिये लोभ त्यागना भी नहीं चाहिये। अत्यंत लोभ करने के परिणाम भयावह बतायें है।

मुँह के छाले दूर कर मुस्कुराहट बनाये रखें

❊ जिनेन्द्र कुमार जैन (इन्दौर) मो. 9977051810 ❊

मुँह के अंदर या मसूड़ों के निचले भाग में छोटे उथले घाव हो जाते हैं जो छाले कहलाते हैं। जिसका आमतौर पर इलाज हो जाता है या कुछ समय बाद अपने आप ठीक भी हो जाते हैं। ये छाले पीड़ादायक होते हैं जो भोजन करने व बोलने को मुश्किल बना देते हैं। छाले दो प्रकार के होते हैं। 1. साधारण छाले 2. एपथल और बुखार के छाले । कम इम्यूनिटी वाले व लम्बे समय से मधुमेह (डायबिटीज से ग्रसित व्यक्तियों को छाले का खतरा बना रहता है।) लम्बे समय तक छाले होना उनमें खून आना और दर्द रहना निश्चित रूप से चिंता की बात होती है जो मुँह के कैंसर का कारण भी हो सकते हैं। छाले होने का प्रमुख कारण लम्बे समय से कब्ज रहना, नियमित व अच्छी तरह से दांतों की सफाई न करना, बच्चों की मुँह की सफाई न करना, बच्चों को दूषित बाहरी दूध की वॉटल का संक्रमित होना, भोजन करते समय या ब्रश करते समय असावधानी से मुँह में जख्म होना व टूथपेस्ट या माऊथवाश में सोडियम लॉरयल सल्फेट की अधिक मात्रा होने से घाव हो जाना,टेडे मेडे तीखे दांत से चोट लगना, अक्कल दांत का निकलना, कीड़े लगे हुये दांत, नकली दांत मसूड़ों में ठीक-ठीक न बैठना, मसालेदार तीखा भोजन, बहुत ज्यादा ठंडा या गरम चीजें खाना, अधिक तेज ऐलोपैथिक व गरम आयुर्वेदिक दवाईयों का सेवन करना, सुपाड़ी, तम्बाखू, पान मसाला खाना, बिड़ी सिगरेट शराब पीना, पर्याप्त नींद न होना, अधिक तनाव होना, आंतों की टी.वी. होना, बच्चों में खून की कमी व विटामिन डी की कमी, विटामिन बी 12, फॉलिक एसिड, आयरन जिंक की कमी से भी यह दिक्कत हो सकती है।

मुँह में बदबू आना, कब्ज होना, लार बहना, मुँह की भीतरी भाग लाल होने से बहुत तेज दर्द होना, बच्चों में बुखार, अकड़न, उल्टी होना आदि समस्या उत्पन्न हो जाती है।

छाले होने के कार णों को ध्यान रखते हुये कब्ज नहीं होने देना, भोजन में डेयरी उत्पाद, फाइबर युक्त भोजन, हरी पत्तेदार सब्जियाँ तुरई टिंडा, लोकी, मौंसबी फल, संतरा, तरबूज, खरबूज, अमरूद, आंवला का उपयोग करना, गेहूँ के आटे में सोयाबीन, ज्वार, चने का आटा मिलाकर रोटी का उपयोग करना चीनी का उपयोग सीमित करना, दही को शाम के समय नहीं खाना, मसालेदार तीखा भोजन, चिप्स नमकीन, अधिक मिर्च, अधिक गरम व ठंडा भोजन नहीं करना आदि।

नियमित 30-45 मिनिट तक टहलना, योग व्यायाम करना नियमित दिनचर्या रखना, समय पर भोजन करना, अधिक देर रात्रि तक नहीं जगना, पर्याप्त नींद लेना, आखरी भोजन के बाद सोने के पहिले मुँह व दांतों की अच्छी तरह से सफाई करना, दूध पीते बच्चों के मुँह के भीतरी भाग की सफाई रूई से ठंडे पानी में गीला करके साफ करना, टेडे व नुकीले दांतों को ठीक कराना आदि।

सभी चिकित्सा पद्धतियों में इलाज है, समय पर घरेलु इलाज व परहेज से नियंत्रण हो जाता है किन्तु तीन सप्ताह से अधिक समय तक छाले ठीक न होवें तो चिकित्सक से परामर्श लेना चाहिये।

आयुर्वेदिक इलाज- 1. दो ग्राम सुहागा का बारीक चूर्ण को 15 एम.एल. शुद्ध औषधीय ग्लिसरीन में मिलाकर कांच की शीशी रखें व दिन में तीन चार बार छालों पर लगायें सभी तरह के छालों में अवश्य ही आराम मिलेगा। 2. बच्चों के छाले हेतु मिश्री 8 भाग बारीक पीसकर उसके 1 भाग कपूर मिलाकर छालों पर लगायें। सुहागा आंच पर गरम कर फूल जायेगा उसे दूध से देने पर भी आराम हो जाता है। 3. टमाटर के रस में ताजा पानी मिलाकर 3-4 बार कुल्ला करें। 4. छोटी हरड को बारीक पीसकर छालों में दिन में तीन बार लगाने से भी आराम मिलता है।

होम्योपैथिक इलाज सभी प्रकार के छालों का स्थायी निदान संभव है, वर्षों से परेशानी भोग रहे व्यक्तियों को भी लाभ हो जाता है। अतः लक्षण व रोगी की तीव्रता अनुसार बोरोक्स, ब्रायोनिया, मर्कसाल, नैट्रमम्यूर, सल्फ्यूरिक एसिड, नाईट्रिक एसिड सल्फर आदि औषधियाँ उपयोगी हैं। उक्त उपचार मात्र जानकारी के लिये दी गई है। इलाज के पूर्व अनुभवी सुयोग्य चिकित्सक के परामर्श से इलाज कराना चाहिये।

इस भागदौड़ की जिंदगी में संतुलित भोजन, समय पर भोजन, पर्याप्त नींद के लिये समय नहीं निकल पाते हैं। नियमित दिनचर्या से शरीरिक व मानसिक बल पूर्ण तृप्ति, पोषण व शरीर की क्रांति व बुद्धि प्रखर होती है जिससे मुंह के छाले के दुष्प्रभाव से मुक्त रखकर चेहरे की मुस्कुराहट सदैव बनायें रखें।

कविता

शिरपुर पारसनाथ

शिरपुर पारसनाथ प्रभु का मंगलगान करूँ।
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी चरणों शीश धरूँ।
महाराष्ट्र में वाशिम जिल्हा मालेगांव तहसील।
शिरपुर नगरी महिमावाली लहरे सरवर झील
काम विजेता पद पूजन कर, कर्म कलंक हरूँ।
मोक्ष लक्ष्मी को श्री कहते तुम, श्रीनगरी ही शिरपुर हैं।
श्रीपुर वासी पार्श्वनाथ ही, अंतरीक्ष में स्थिर है।
सत्य प्रणेता शिवपथ नेता पार्श्वनाथ का ध्यान करूँ।
क्षमा धर्म के धारी प्रभु जी वैर विरोध से दूर रहे।
काम क्रोध, मद लोभ दोष बिन निज पद में नित लीन रहे।
गंगा तट पर जन्में प्रभु के पद पंकज में बास करूँ।

हास्य तरंग

1. धीमे धीमे बरसात हो रही थी पंडित जी घर से पैदल मंदिर जा रहे थे कि अचानक उनके ऊपर पानी जैसे छीटे गिरे तो, एक दम गुस्सा में बोले लोगों को समझ में नही आता है कि कौन निकल रहा है, पानी गिराते रहते है। छत के ऊपर सेठी जी की बहू बोली पंडित जी आप मुझ पर झूठे आरोप लगा रहे हैं, मैं तो अपने टिंकू बच्चे को पेशाब करा रही थी।

2. पति पत्नी में मन मुटाव होने से आपस में बोलबाल बंद था। क्षमावाणी पर्व पर दोनों अपनी गलती का अहसास हुआ तो दोनों के पश्चाताप करके क्षमा मांगी। पति ने क्षमा मांगते हुये कहा मैं तुमसे कभी झगड़ा, नहीं करूंगा, यदि किया था तो मुझे मौत आ जावे, तभी पत्नी भी क्षमा मांगते हुये बाली यदि मेंने झगड़ा किया तो सबसे पहले मैं विधवा हो जाऊ।

3. लड्डू सेठ रात्रि को नई बाईक से सुनसान रास्ते में जा रहे थे कि अचानक दो लुटेरों ने उन्हें रोका, कहा हमें दस रूपये का सिक्का दो। सेठ ने 10 रूपये का सिक्का देकर मन में खुस होकर जान बचाकर भागने लगे तभी पीछे से लुटेरे ने उन्हें पकड़ते हुये कहा हम तो टॉस पर देख रहे थे कि कौन तुम्हारी बाइक लेगा और कौन तुम्हारे रूपये छीनेगा।

4. डॉक्टर के दो बच्चों को साथ लेकर इलाज कराने आई महिला के हम शक्ल बच्चों को देखकर वे पूछे बिन न रह सके। जुड़वे हो ? बच्चा नहीं, उम्र कितनी है तुम दोनों की, पांच वर्ष डॉक्टर जब तुम एक ही उम्र के होते, सगे भाई जुड़वे हुये नहीं तो क्या हुये ? बच्चो तिड़वे हुये, तीसरा भाई बाहर बैठकर सौफा खराब कर रहा है।

संकलनः जिनेन्द्र कुमार जैन, गौरीनगर

संस्कार खेल

शरीर विकास के कुछ खेल

✼ कददू तोड़ो

खिलाड़ियों की संख्या- 15-20

खेल वर्ग- दो दलों का खेल

खेल विधि- 15-20 संख्या के दो दलों में से एक पूर्व खेल की तरह हाथ में हाथ डालकर मजबूत गोला बनाकर बैठेंगे। यह कददु की बेल हुई। सीटी बजने पर निश्चित किये गये। समय (एक डेढ़ मिनिट) से दूसरे दल वाले इसें से जितने कददू तोड़ लेगें। उनके उतने कददू अंक हो जायेगे। अब यही काम दूसरे दल वालें करेंगे। जो दल अधिक अंक प्राप्त करेगा। वह विजयी होगा।

✼ दीवार तोड़ा

खिलाड़ियों की संख्या- 15-20

खेल वर्ग- दो दलों का खेल

खेल विधि- पूर्व खेल की तरह दोनों दल हाथ में हाथ डालकर दीवार बनायेंगे। दोनों की पीठ आपस में मिली रहेगी। सीटी बजने पर दोनों दल एक-दूसरे को धकेलने का प्रयास करेंगे। जो दीवार तीन मीटर दूरी तक खिसक जायेगी। वह दल पराजित होगा।

✼ राम, राजा, रावण

खिलाड़ियों की संख्या- 8-10

खेल वर्ग- दो दलों का खेल

खेल विधि- दो दल शिक्षक की ओर मुँह करके पास-पास खड़े होंगे। दोनों का नाम क्रमशः राम और राजा रहेगा। शिक्षक द्वारा राम कहने पर राम दल वाले खिलाड़ी लगभग 20मी. दूर (या कोई पेड़ दीवार... आदि) तक दौड़ेगे तथा राजा दल उन्हें पकड़ेगा। जो पकड़े जायेंगे वे बाहर हो जायेंगे। राजा इसका विपरीत कार्य होगा। रावण कहने पर सब अपने स्थान पर तुरंत बैठेंगे तथा राकेश, राजेश, राधेश्याम आदि कोई शब्द बोलने पर सब मूर्तिवत खड़े रहेंगे। जो इसमें गलती करेगा। वह बाहर हो जायेगा। जिस दल के सब स्वयंसेवक बाहर हो जायेंगे। वह पराजित होगा।

बाल कहानी

अब क्या कहें

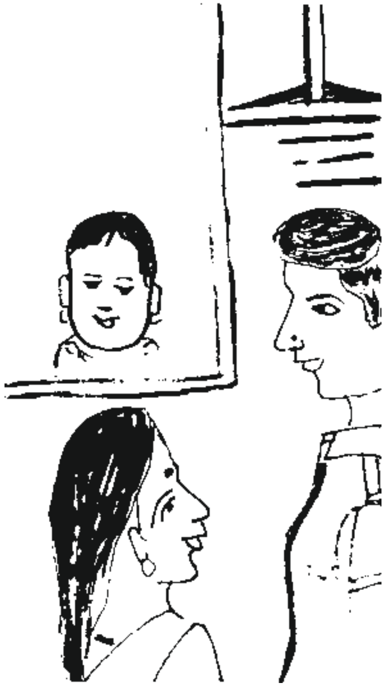

निक्की नाम एक लड़का अपने आप में स्मार्ट बनने के लिये हमेशा प्रयास करता रहता था। वह अच्छे कपड़े पहनना अच्छे जूते पहनना, अच्छी चप्पल पहनना एवं इत्र वगैरह लगाने में भी उसकी रूचि रहती थी। निक्की जब बड़ा हो गया तो वह अपने पिताजी सुरेन्द्र के साथ व्यापार करने लगा था। सुरेन्द्र को अपने बेटे पर पूरा विश्वास हो गया था क्योंकि निक्की कभी घाटे का सौदा नहीं करता था। निक्की भी अब कमाई करने लगा था। सुरेन्द्र निक्की की खूब तारीफ करता था और उसके खर्च पर भी सदैव नजर रखता था निक्की मार्केट में आई हुई हर नई चीज को खरीदने का शौकीन था और उसके पिताजी उसे हमेशा बचत करने की सलाह देते थे निक्की अपने पिताजी की इकलौती संतान था उसका परिवार खूब बड़ा था दादा-दादी, चाचा-चाची सब अलग-अलग मकान में रहते थे।

निक्की एक दिन अपने लिये अच्छी क्वालिटी की चप्पल खरीदकर लाया। सुरेन्द्र ने एक दिन निक्की से पूछा निक्की चप्पल कितने की लाये हो ? निक्की ने कहा पापा तीन सौ रूपये की लाये हैं और निक्की की चप्पल सुरेन्द्र को भी पसन्द आ रही थी सुरेन्द्र सोचने लगा इतनी अच्छी चप्पल और इतनी सस्ती लाना मेरे बेटो की अक्ल की ही खासियत है वह उस पर बहुत खुश हुआ उसी दिन उसके मित्र राजेश को वे चप्पल पसन्द आ गई राजेश ने कहा सुरेन्द्र भाई ये चप्पल तो बड़ी अच्छी है कितने की आई हैं सुरेन्द्र ने कहा चार सौ रूपये की राजेश ने कहा हम भोपाल तो जा नहीं पाते ये चप्पल मुझे दे दो तुम्हारा निक्की दूसरी ले आयेगा। सुरेन्द्र ने मन में सोचा सौ रूपये की कमाई हो रही घर बैठे-बैठे तो क्या दिक्कत है देने में। सुरेन्द्र ने खुशी-खुशी चप्पल दे दी राजेश लेकर चला गया जब निक्की आया जो उसने आपने पापा से पूछा कि पापा चप्पल कहां गयी तो सुरेन्द्र ने कहा बेटा हमने तीन सौ की चप्पल चार सौ में बेच दी अब निक्की अपने पापा से कुछ नहीं कह सका क्योंकि सौ रूपये का फायदा नहीं घाटा हुआ है। वह चप्पल 500 रूपयें में लाया था।

संस्कार गीत

हिन्दी मे हस्ताक्षर

सात दशक तो बीत गये है हिन्दी दिवस मनाते
हिन्दी अब भी दासी कारण खोज नहीं पाते
बोले लोग विदेशी भाषा हिन्दी से कतराते

1.
अंग्रेजी जब तक है दिल में
माँ को क्या सम्मान मिले
सत्य अहिंसा की भाषा
सत् शिव सुन्दर ज्ञान मिले
माँ ममता करूणा की भाषा हिन्दी से सब नाते

2.
पालक चातक मातृभाषा
स्वाभिमान निजबोध है
अंग्रेजी मैं न हो शिक्षा
गुरुओं का अनुरोध हैं
हिन्दी से भी रोजगार है प्रगतिद्वार खुल जाते

3.
अंग्रेजी को दूर हटायें हो संकल्प हमारा
अमृत मिला हमें हिन्दी का अंग्रेजी जलखार
शिक्षा हिन्दी में हो माँ का मान बढ़ाते

बाल कविता

दूध प्रकृति का उपहार

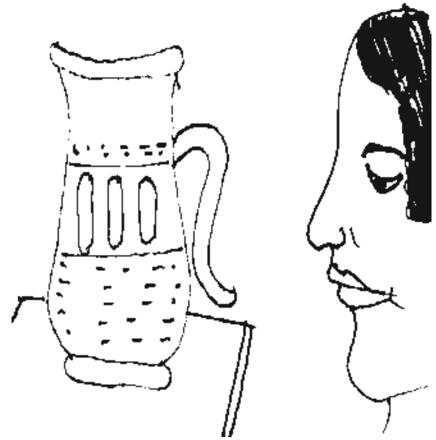

दूध प्रकृति का है उपकार
डॉक्टर कहते पूर्ण आहार
निश्चित वजन घटाता है
काया स्वस्थ्य बनाते हैं
इसमें कैल्शियम होता है
दूध पीकर नर सोता है
वजन घटायें नींद बढ़ाये
हृदय रोग से दूध वावाये
करता कब्ज सदा ही दूर
इम्यूनिटी बढ़ती भरपूर
इसमें रहे विटामिन भारी
मधुमेह की विपदा हारी
दूध पूर्ण है शाकाहार
गौ माता का यह उपहार

समाचार

समाधिमरण

इंदौर- मुनि श्री श्रुतधरनंदी जी महाराज के ससंघ सान्निध्य में क्षुल्लिका श्री समाधिमति माताजी का समाधिमरण 07 अगस्त 2022 को अंजली नगर इंदौर (म.प्र.) में हुआ।

जयपुर-आर्यिका श्री गौरवमति माताजी की शिष्या आर्यिका श्री गुप्तिमति माताजी का समाधिमरण 09 अगस्त 2022 को प्रातः 4 बजे श्यामनगर जयपुर राजस्थान में हुआ।

डिग्गी (राजस्थान)- मुनिश्री इंद्रनंदी महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में मुनिश्री विनीतनंदी महाराज का समाधिमरण 29 जुलाई 2022 को 7.51 मिनट पर डिग्गी निवाई राजस्थान में हुआ।

अरहंतगिरि- आचार्य श्री सुविधिसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में उनके ही शिष्य मुनिश्री सुगमसागर महाराज जी का समाधिमरण 18 अगस्त 2022 को अरहंतगिरि तमिलनाडु में हुआ।

जयपुर- आचार्य श्री सुनीलसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में उनकी ही शिष्या आर्यिका श्री सुधर्ममति माताजी का समाधिमरण 19 अगस्त 2022 को रात्रि 8.30 बजे भट्टारक जी की नसिया जयपुर राजस्थान में हुआ।

सम्मेदशिखर जी-मुनिश्री पुण्यनंदी महाराज के ससंघ सान्निध्य में श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र सम्मेदशिखर मध्यलोक मधुवन झारखंड में आर्यिका श्री उदितमति माताजी का समाधिमरण 16 अगस्त 2022 को हुआ।

श्रीवस्ती (उ.प्र.)- आचार्य श्री सुबलसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में उनके ही शिष्य मुनिश्री अडोलसागर महाराज जी का समाधिमरण 24 अगस्त 2022 को प्रातः 7.45 बजे श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र श्रावस्ती (उ.प्र.) में हुआ।

जयपुर- गणिनी आर्यिका गौरवमती माताजी का समाधिमरण 25 अगस्त 2022 रात्रि 11.22 मिनट पर भट्टारक जी की नसियां जयपुर में हुआ।

दीक्षायें सम्पन्न

सम्मेदशिखर- मुनिश्री पुण्यसागर महाराज जी के करकमलों से श्रीपाल गंगवाल घेवराई, पं. भरत काला मुंबई की क्षुल्लक दीक्षा 04 अगस्त 2022 को श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र मध्यलोक सम्मेदशिखर जी में दी गई जिनका नाम क्रमशः क्षुल्लक श्री ऐश्वर्यसागर जी, क्षुल्लक श्री एकत्व सागर जी महाराज रखा गया।

सम्मेदशिखर-मुनिश्री पुण्यसागर महाराज जी के करकमलों से क्षुल्लक एकत्वसागरजी को मुनि दीक्षा 08 अगस्त 2022 को श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र मध्यलोक सम्मेदशिखर जी में दी गई जिनका नाम मुनिश्री एकत्वसागर रखा गया।

बड़ागांव- आचार्य श्री विभवसागर महाराज जी के करकमलों से श्री छक्कीलाल जी बड़ागांव को श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र फलहोड़ी बड़ागांव में 04 अगस्त 2022 को

क्षुल्लक दीक्षा दी गई। जिनका नाम क्षुल्लक श्री सफलसागर जी महाराज रखा गया।

जयपुर- आचार्य श्री सुनीलसागर महाराज जी के करकमलों से 04 अगस्त 2022 को भट्टारक नसिया जयपुर में क्षुल्लक सम्बद्धसागर, क्षुल्लक सम्प्रज्ञसागर, ब्र. विनोद भैया भीलवाड़ा, ब्र. अनुभव भैया सागर, ब्र. विकास भैया ललितपुर को दीक्षायें दी गई। जिनके नाम क्रमशः मुनिश्री शुविवेकसागर जी, मुनिश्री सम्प्रज्ञसागरजी, मुनि शुविशुद्धसागर, एलक प्रभातसागरजी, क्षुल्लक शुप्रकाशसागर रखा गया।

सम्मेदशिखर- उपाध्याय विप्रणतसागर महाराज के करकमलों से श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र त्यागीव्रत्ती आश्रम सम्मेदशिखर मधुवन में एलक प्रमेयसागर, ब्र. दीपक भैया को मुनि दीक्षा दी गई। जिनके नाम क्रमशः मुनिश्री प्रमेयसागर जी, मुनिश्री प्रज्ञेयसागरजी रखा गया।

मांगीतूंगी-आचार्य श्री तीर्थनंदी महाराज के करकमलों से ब्र. धुनीबाई फास्ट रोड़ मलाड़ मुम्बई को आर्यिका दीक्षा 4 अगस्त 2022 को श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र मांगीतुंगी में दी गई। जिनका नाम आर्यिका मोक्षश्री माताजी रखा गया।

श्रीमहावीर जी- आचार्य श्री वर्धमान सागर महाराज जी के करकमलों से घीसी देवी कोलिया, श्रीमति भगवानी जयपुरिया को श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र महावीर जी में क्षुल्लिका दीक्षा दी गई। जिनके नाम क्रमशः क्षुल्लिका शांतमती जी, क्षुल्लिका शीलमती जी रखा गया।

औरंगाबाद- आचार्य श्री मयंकसागर महाराज जी के करकमलों से श्री कस्तूरचंद जी लुहाड़े एवं कान्ता बाई जी को दीक्षा 08 अगस्त 2022 को औरंगाबाद में दी गई। जिनके नाम क्रमशः क्षुल्लक नम्रसागरजी, क्षुल्लिका नम्रमती माता जी रखा गया।

णमोकार तीर्थ- आचार्य श्री देवनंदी महाराज जी के करकमलों से 14 अगस्त 2022 को श्री दिगम्बर जैन णमोकार तीर्थ महाराष्ट्र में घासीराम जी सागर, प्याराबाई जी पेठन, शोभा कासलीवाल लासन गांव, मनोरमा पाटोदी बहिरगांव को दीक्षा दी गई जिनके नाम क्रमशः मुनिश्री शांतकीर्ति जी महाराज, आर्यिका सहयोगमति माताजी, क्षुल्लिका सुयोगमति माताजी, क्षुल्लिका सयोग्यमति माताजी रखा गया।

आगामी दीक्षायें

अलीगढ़- आचार्य श्री निर्भयसागर महाराज जी के करकमलों से श्री दिगम्बर जैन मंदिर अलीगढ़ में 29 अगस्त 2022 को क्षुल्लक भूदत्तसागर महाराज जी को मुनि दीक्षा दी जावेगी।

रायपुर- आचार्य श्री विशुद्धसागर महाराज जी के करकमलों से श्री दिगम्बर जैन मंदिर रायपुर में बा. ब्र. सौरभ भैया जी परतवाड़ा महाराष्ट्र, बा. ब्र. निखिल भैया बड़कुल छतरपुर, बा. ब्र. राजेश भैया ललितपुर (उ.प्र.), बा. ब्र. विशाल भैया भिण्ड (म.प्र.) को जैनेश्वरी दीक्षा दी जावेगी। जिनकी गौद भराई का कार्यक्रम 21 अगस्त 2022 को रायपुर में हुआ।

वर्ग पहेली 275

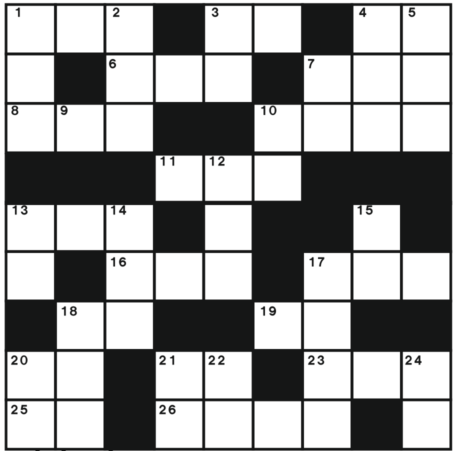

बाये से दाये

1. कोमलता, दशलक्षण धर्म में एक धर्म -3
3. लॉक, सूने घर का रक्षक -2
4. बुरा कार्य, अनैतिक कार्य -2
6. सृजन, कृति -3
7. भिखारी -3
8. आभूषण अलंकार -3
10. कपना, नचना, हिलन डुलन -4
11. सीधा सच्चा, ऋजु -3
13. रस सहित -3
16. सूखा हल्का फल कमल का फल -3
17. कमल नीरज जलज -3
18. नष्ट होने का भाव, नाश -2
20. योग्य सक्षम -2
21. निश्चय, निर्णय -2
23. चाँदी, रूक्मी -3
25. माँ जननी मैय्या -2
26. फैलना विस्तार होना -4

ऊपर से नीचे

1. पथ, राहु रास्ता -3
2. चुराना, चुनना अपनाना -3
3. वस्तु का लम्बाई का धाना, व्यंग -2
4. पाचनक्रिया कराने वाला -3
5. परिपक्व होना, कार्य योग्य होना -2
12. जिव्हा, स्वदेन्द्रिय -3
13. मित्र, बन्धु -2
14. काल, मत, दर्शन -3
15. घमंड, अहं, नशा -2
17. प्रक्षालन किया -4
18. योग्यता -3
19. बालों का गुच्छा सिर के लम्बे बाल -2
20. वैर विरोध क्रोध के जीतने का भाव, पहला धर्म का लक्षण -2
21. इच्छा निरोध क्रिया निर्जरा का कारण -2
22. कीर्ति, जरा -2
24. वैसा, उसी प्रकार -2

वर्ग पहेली 274 का हल

1 वि	ष्णु	2 कु	3 मा	र	■	4 जा	5 ग	ना
शा	■	6 शा	ला	■	7 कु	म	ति	■
8 ल	9 ख	न	■	10 अ	रु	■	■	11 आ
■	न	■	12 अ	कम	प	13 ना	14 चा	र्य
15 ज	न	16 म	■	प	■	17 थ	र	■
ह	■	18 र	ति	■	■	■	ण	■
19 र	20 म	ण	■	21 मी	22 ना	■	■	23 का
■	ग	■	24 पी	त	ल	■	25 बा	ली
26 ज्ञा	न	ध	र	■	■	27 म	ज	मा

....सदस्यता क्र. ....

पता : ....

....

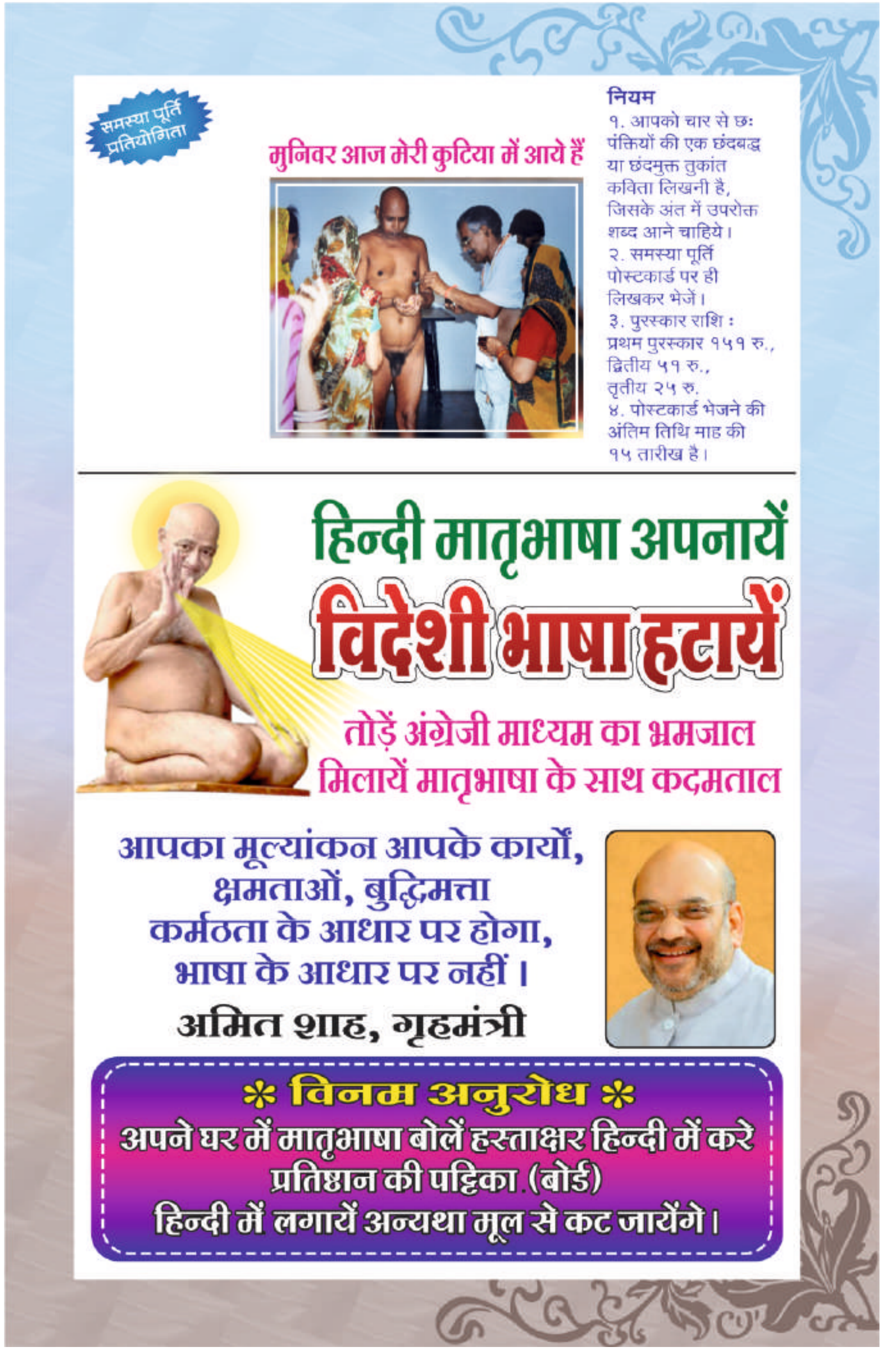

प्रिंटिंग दिनांक 28/08/2022, पोस्टिंग दिनांक: 03/09/2022